गांधी चित्रावली

लेखक, संपादक और प्रकाशक

जीतमल लूणीया

हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

(... में म० गांधी का क्रमबद्ध जीवन तथा अन्तिम पृष्ठों में उनका सम्पूर्ण जीवनचरित्र, गांधीजी के जीवन से क्या-क्या सीखें, प्रार्थना के पद, प्यारे भजन, दिव्य वाणी आदि अनेक उपदेशपूर्ण बातों का
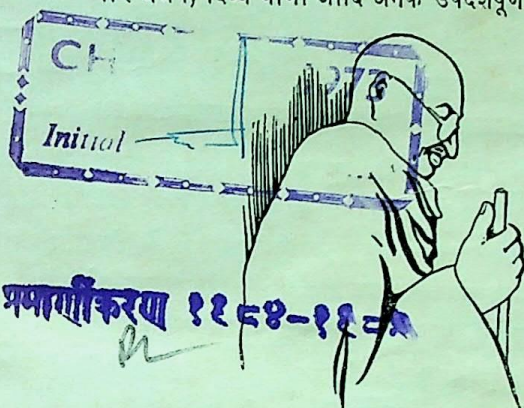
भूमिका-लेखक—भारत के राष्ट्रपति

देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद

"मैं चाहता हूं कि इस पुस्तक का खूब प्रचार हो" —राजेन्द्रप्रसाद

"... है" —विनोवा भावे

"१४४ पृ... भग १०० चित्र तथा अन्य पाठ्य-सामग्री हं... केवल १) इस बात का प्रमाण है कि इस... मुनाफा कमाने की नहीं।"

—पट्टाभि सीतारमैय्या

यह पुस्तक बालक, युवा, स्त्री, पुरुष, सबके लिए बड़ी उपयोगी है। प्रत्येक कुटुम्ब में रखने तथा भेंट व इनाम में देने योग्य है।

छठी बार संवत् २०११	इस पुस्तक के पढ़ने से जीवन उन्नत तथा सदाचारी बनेगा	मूल्य प्रचारार्थ केवल १)

अपने साथियों से कहिये कि वे भी एक प्रति खरीदें

बुरा • • मत • •

बोलो • देखो • सुनो

एक चीनी यात्री ने गांधीजी को तीन बन्दरों का यह खिलौना भेंट किया था। गांधीजी इसे हमेशा अपने पास रखते थे। वे कहते थे कि ये तीनों मेरे गुरु हैं। जिसने मुंह बन्द कर रखा है, वह कहता है, "झूठ न बोलो, निन्दा न करो।" जिसन आंखें बन्द कर रखी हैं वह कहता है, "कोई कुदृश्य न देखो।" जिसने कान बन्द कर रखे हैं, वह कहता है, "किसी की बुरी बात मत सुनो।"

महात्माजी के ११ व्रत, जिनका उन्होंने अपने जीवन में सदा पालन किया (विवरण ९७ पृष्ठ पर देखिये) वे सदा इस बात पर जोर देते थे——

सत्य ही ईश्वर है, सत्य को कभी मत छोड़ो

क——नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली

भूमिका

इस पुस्तक में श्री जीतमलजी लूणिया ने म० गांधी का संक्षिप्त जीवनचरित्र लगभग १०० चित्रों के साथ प्रकाशित किया है। इसके अलावा इसमें पूज्य बापू के ११ व्रत, रचनात्मक कार्यक्रम, उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं, उनके जीवन से क्या-क्या सीखें, उनकी दिव्य वाणी आदि सामग्री देने से पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। इस पुस्तक की कीमत भी बहुत कम रखी गई है। उनका विचार है कि इस पुस्तक का बहुत प्रचार हो और इसीलिए उन्होंने कम दाम में सुन्दर पुस्तक प्रस्तुत की है। यह प्रयत्न सराहनीय है, क्योंकि महात्माजी के विचारों और जीवन-कथा का जितना प्रचार हो, देश के लिए उतना ही हितकर होगा। मैं उनके उस प्रयत्न की सफलता चाहता हूं और श्री लूणियाजी को बधाई देता हूं।

—राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी साहित्य मंदिर की सस्ती तथा उपयोगी पुस्तकें

(१) गांधी चित्रावली—–यह पुस्तक तो आपके हाथ में ही है
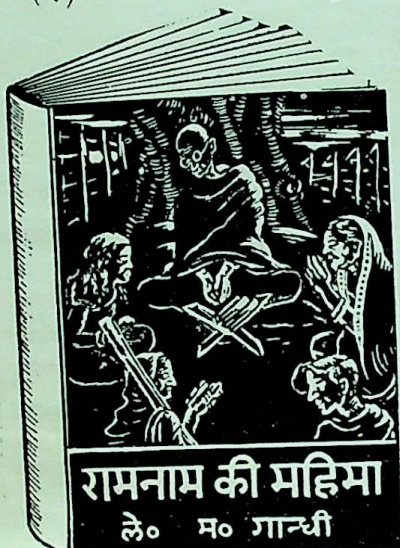
(२) राम नाम की महिमा म. गांधी का जीवन बचपन से लगाकर मृत्यु समय तक 'रामनाम' से ओतप्रोत था। खाते-पीते, उठते बैठते, सुख में, दु:ख में, हर समय उनके हृदय में रामनाम की माला चलती रहती थी। इस पुस्तक के पढ़ने से आपके जीवन में अपूर्व शांति, नया प्रकाश और स्वर्गीय आनन्द मिलेगा। पुस्तक में ८० विषयों पर लेख हैं।

पृष्ठ-संख्या १४४, बढ़िया छपाई व कागज़, दोरंगा कवर, यह सब होते हुए भी प्रचार के लिये मूल्य बहुत सस्ता, केवल १) रखा गया है।

(३) **नेहरू चित्रावली** (पं जवाहरलालजी के जन्म से लगाकर अब तक के ८६ चित्र, जीवनी, विचार आदि बातों का संग्रह) **मूल्य १)** (४) **विनोबा चित्रावली** (संत विनोबा के ५६ चित्र, संक्षिप्त जीवनी, प्रातः सायं काल की संपूर्ण प्रार्थना, दिव्य वाणी आदि अनेक बातों का संग्रह) **मूल्य ।।।)** (५) **तपोधन विनोबा** (बड़ी खोज और परिश्रम के साथ यह बड़ी जीवनी प्रामाणिक रूप से लिखी गई है) **मूल्य १।।)** (६) **स्कूल में फल बाग** (बहुत कम खर्च में फलों का बगीचा लगानेकी विधि) **मूल्य १।।।)** (७) **विश्व की महान महिलाएं** (ले. शचीरानी गुर्टू एम. ए.—पुस्तक में १६ चित्र भी हैं) **मूल्य २)**

इन पुस्तकों के अलावा सस्ता साहित्य मंडल, नवजीवन, ज्ञान मंडल, सर्व सेवा संघ, भूदान संबंधी आदि अनेक प्रकाशकों की पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं। जब कभी आप को उत्तम हिन्दी पुस्तकों की ज़रूरत हो तो नीचे लिखे पते को सदा याद रखें। विशेष रियायतें अगले पृष्ठ में देखिये।

पता—–हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर।

कृपया पहले इसे अवश्य पढ़ लीजिये

महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों के उपदेशों का जितना भी प्रचार किया जाय उतना ही संसार के लिये कल्याणकारी है। ऐसे तो गांधीजी की चित्रावलियां अनेक स्थानों से प्रकाशित हुई हैं, पर उनका मूल्य प्रायः ४) से लगाकर ३५) रुपये तक है। हमारा देश ग़रीब देश है। १०० में ८० आदमी किसान, मज़दूर तथा मध्यम श्रेणी के हैं, जो अधिक मूल्य की पुस्तकें नहीं खरीद सकते। ऐसे लोगों के घरों में भी गांधीजी का साहित्य पहुंच सके, जिससे वे भी महात्माजी के जीवन का अनुकरण कर अपने जीवन को पवित्र बना सकें, इसी उद्देश्य से मैंने यह पुस्तक इतने सस्ते मूल्य में प्रकाशित की है। इस पुस्तक में गांधीजी के जन्म से लगाकर मृत्यु-समय तक के चित्र सिलसिलेवार इस ढंग से दिये गए हैं जिससे गांधीजी के जीवन की अनेक प्रवृत्तियों के भी दर्शन हो जाते हैं, साथ ही देश के अन्य नेताओं का भी परिचय मिल जाता है। बेपढ़े-लिखे लोग भी इन चित्रों को देखकर अपने जीवन में प्रेरणा पा सकते हैं। चित्रों के अलावा इस पुस्तक में गांधीजी की संपूर्ण जीवनी, उपदेश (आगे दी हुई विषय-सूची देखिए) आदि अनेक बातें भी बड़ी सरल-भाषा में दी गई हैं, जिससे यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी हो गई है। एक तरह से गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया गया है। इतने चित्रों (लगभग १००) तथा इतने पृष्ठों (१४४ पृष्ठ) की पुस्तक का मूल्य व्यापारी लोग कम-से-कम २) या २॥) रखते हैं, पर मैंने शुद्ध सेवाभाव से प्रचार के लिये इसका मूल्य लगभग लागतमात्र, केवल १) रखा है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि यह पुस्तक भारत के लाखों और करोड़ों घरों में प्रकाश फैलावे। बापूजी की यादगीरी में कोई-न-कोई स्थायी चीज़ प्रत्येक भारतवासी को अपने घर में रखनी ही चाहिए। पुस्तक ऐसी चीज़ है जो सैकड़ों वर्षोंतक घरमें रह सकती है। अतएव पूज्य बापू की यादगीरी में यह पुस्तक प्रत्येक घर में रखने योग्य है। इसके चित्रों को देखकर तथा जीवनी और उपदेशों को पढ़कर घर के सब लोग स्त्रियां, पुरुष और बच्चे लाभ उठावेंगे, घर का वातावरण पवित्र और सेवामय बनेगा और नवयुवकों में चरित्र-बल बढ़ेगा। बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है, इस कहावत के अनुसार आप सब देशबंधु इस पुस्तक के प्रचार में मदद करें तो लाखों कुटुम्बों में यह पुस्तक पहुंच सकती है। जो भाई इस पुस्तक को उपयोगी समझें, वे अपनी जान-पहचान के लोगों को पुस्तक मांगने के लिये कहें, अपने इष्ट-मित्रों, बहन बेटियों को शुभ

अवसरों तथा विवाह आदि उत्सवों पर भेंट स्वरूप दें, स्कूल के मास्टर साहबान विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में इस पुस्तक को रखें, धनी पुरुष अपनी ओर से अथवा अपने किसी कुटुम्बी के स्मरणार्थ यह पुस्तक भेंट रूप में या कम मूल्य में दें, राजा-महाराजा एवं जागीरदार तथा मिलमालिक अपने ग़रीब किसानों और मज़दूरों को अपनी ओर से भेंट रूप में, आधे या चौथाई मूल्य में बांटें, आदि अनेक उपायों से इस पुस्तक के प्रचार में सहायक हो सकते हैं। जो सज्जन इस तरह से पुस्तकें बांटना चाहें उनका नाम भी उतनी कापियों में छपवा दिया जायगा ताकि उनका नाम भी जबतक पुस्तक रहे, चिर-स्मरणीय रहे। इस संबंध में पत्र-व्यवहार करें।

निवेदक—जीतमल लूणिया ।

कृतज्ञता-प्रकाशन

इस पुस्तक के चित्रसंग्रह तथा संकलन में मैंने हिन्दुस्तान टाइम्स, भारत सरकार के प्रेस इनफ़ॉरमेशन ब्यूरो, स्टेट्समैन, हि. स्टेंडर्ड, असोसियेटेड फोटो सर्विस आदि अनेक स्थानों, पत्र-पत्रिकाओं तथा श्री देवदासजी गांधी, कनु गांधी, नवीन गांधी, वालजी गोविन्दजी देसाई आदि सज्जनों से सहायता ली है, उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

पुस्तकें मंगाने वालों के लिये विशेष रियायतें

आजकल पोस्टेज खर्च बहुत बढ़ गया है। आप चाहे एक पुस्तक मंगावें चाहे अनेक, सात आने रजिस्ट्री पोस्टेज वी. पी. खर्च तो लगता ही है, इसके अलावा प्रत्येक पांच तोले वज़न पर एक आना पोस्टेज खर्च और बढ़ता जाता है। इसलिए एक साथ अधिक पुस्तकें मंगाना ही पोस्टेज खर्च के खयाल से लाभदायक रहता है। हमारे यहां से यदि आप एक साथ १०) या अधिक की पुस्तकें मंगावेंगे तो आप से केवल आधा पोस्टेज खर्च लिया जायगा और २०) या इससे अधिक की पुस्तकें मंगाने पर भेजने का पूरा खर्चा हमारे जुम्मे रहेगा पर यह रिआयत केवल उन्हीं सज्जनों के लिये है जो १०) की पुस्तकों के ओरडर के साथ कम से कम १) तथा २०) के ओरडर के साथ २) या अधिक मनीआर्डर से पेशगी हमारे पास भेज देंगे। पते के साथ अपना या नज़दीक के रेलवे स्टेशन का नाम भी लिख भेजना चाहिए। कुछ पुस्तकों की सूची पिछले पृष्ठ में तथा अन्त में दी हुई है। 'सस्ता साहित्य मंडल' दिल्ली, नवजीवन अहमदाबाद सर्वोदय साहित्य तथा हिन्दी की अन्य पुस्तकें भी हमारे यहाँ मिलती हैं। सूचीपत्र मुफ्त मंगा सकते हैं।

पुस्तकें मिलने का पता—हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर

विषय-सूची

(पीछे देखिये)

पुस्तकें पढ़ने के अभ्यासी बनिये

सांसारिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए नियमित रूप से प्रतिदिन कुछ समय उत्तम पुस्तकों का अध्ययन अवश्य करें। उत्तम पुस्तकें पढ़ना सबसे श्रेष्ठ सत्संग है। इस पुस्तक के अंत में ऐसी ही उत्तम पुस्तकों की छोटी-सी सूची दी हुई है। उसे आप अवश्य देख लें।
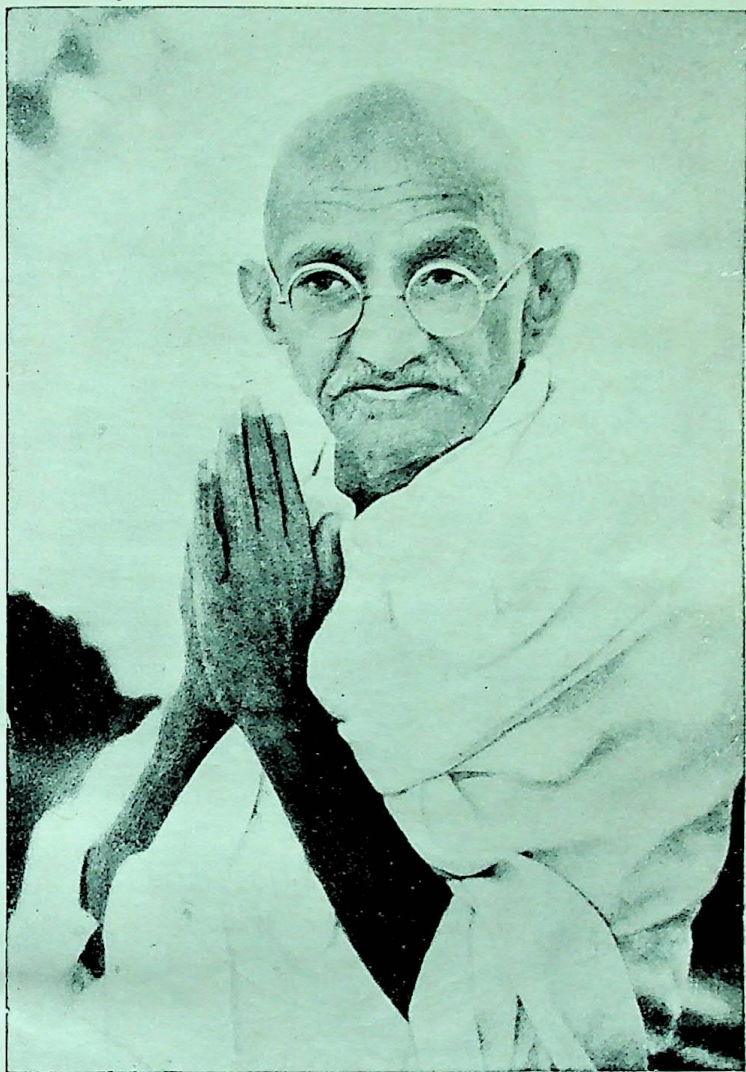
जन्म	राष्ट्रपिता	मृत्यु
२ अक्टूबर १८६९	महात्मा गांधी	३० जनवरी १९४८
आश्विन बदि १२, संवत् १९२५		माघ बदि ५, संवत् २००४

राष्ट्रमाता कस्तूरबा

जन्म	मृत्यु
अप्रैल १८६९	२२ फरवरी १९४४
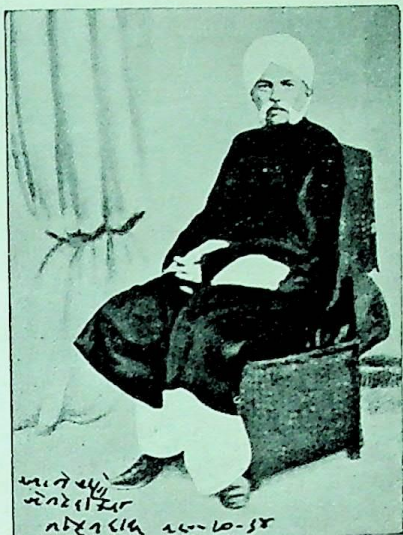
गांधीजी के पूज्य पिता श्री करमचन्द उत्तमचन्द गांधी
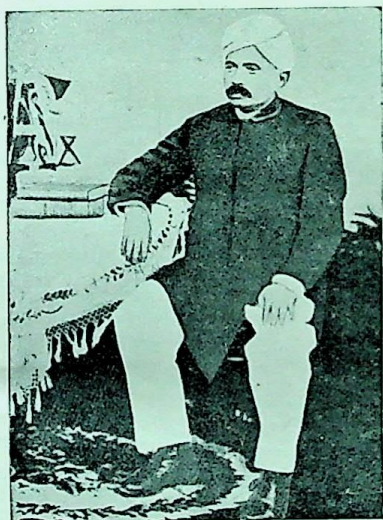
गांधीजी के बड़े भाई लक्ष्मीदास करमचन्द गांधी

गांधीजी की बड़ी बहन जो अभी जीवित हैं
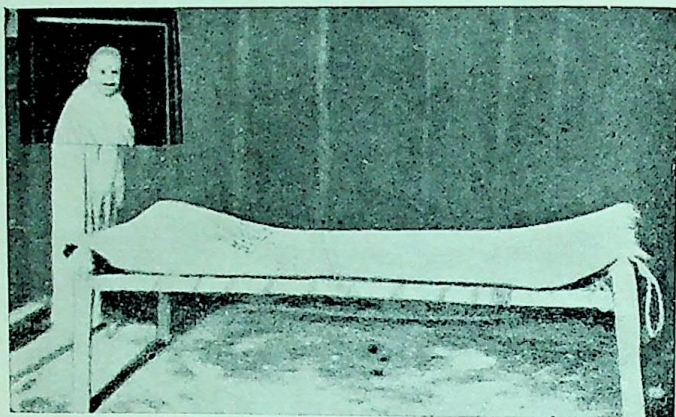
पोरबन्दर (काठियावाड़) के मकान का वह स्थान जहां महात्मा गांधी का जन्म हुआ। धन्य है ऐसे पुत्ररत्न को जिन्होंने सारे संसार में प्रकाश की किरणें फैलाईं

गांधीजी ८ वर्ष की आयु में प्राइमरी स्कूल के विद्यार्थी

१४ वर्ष की आयु में हाई स्कूल के विद्यार्थी

१७ वर्ष की आयु
राजकोट हाईस्कूल की मैट्रिक कक्षा में
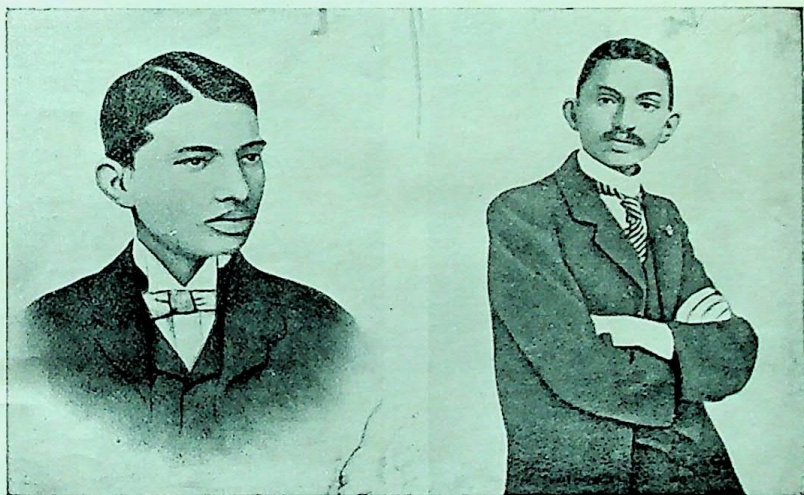
२१ वर्ष की आयु
लन्दन में बैरिस्ट्री पढ़ते हुए

२४ वर्ष की आयु
अफ्रीका में बैरिस्ट्री करते हुए
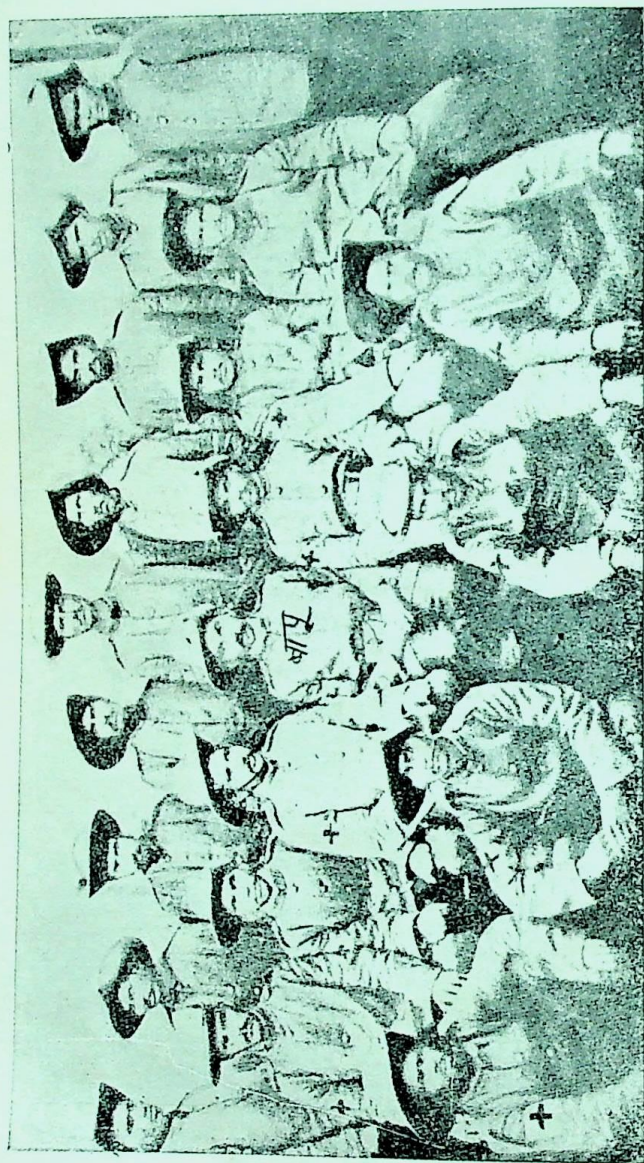
सारजेंट मेजर गांधी

सन् १९०६ में द० अफ्रीका में भारतीय सेवा मंडली के नेता

सन् १९०६ में द० अफ्रीका में भारतीय सेवा मंडली के नेता

सत्याग्रही गांधी दक्षिण अफ्रीका के अंतिम सत्याग्रह के समय अपने साथियों के साथ
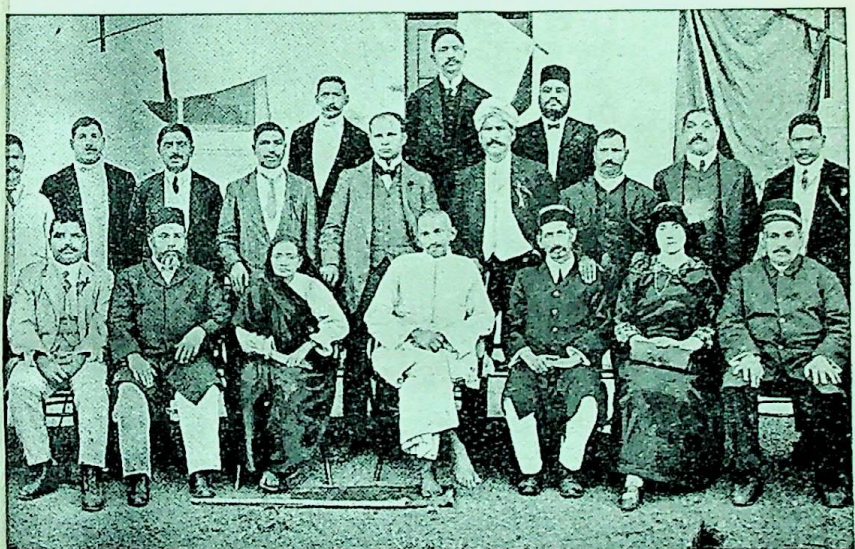
दक्षिण अफ्रीका से बिदाई—पास में श्री कस्तूरबा गांधी बैठी हुई हैं
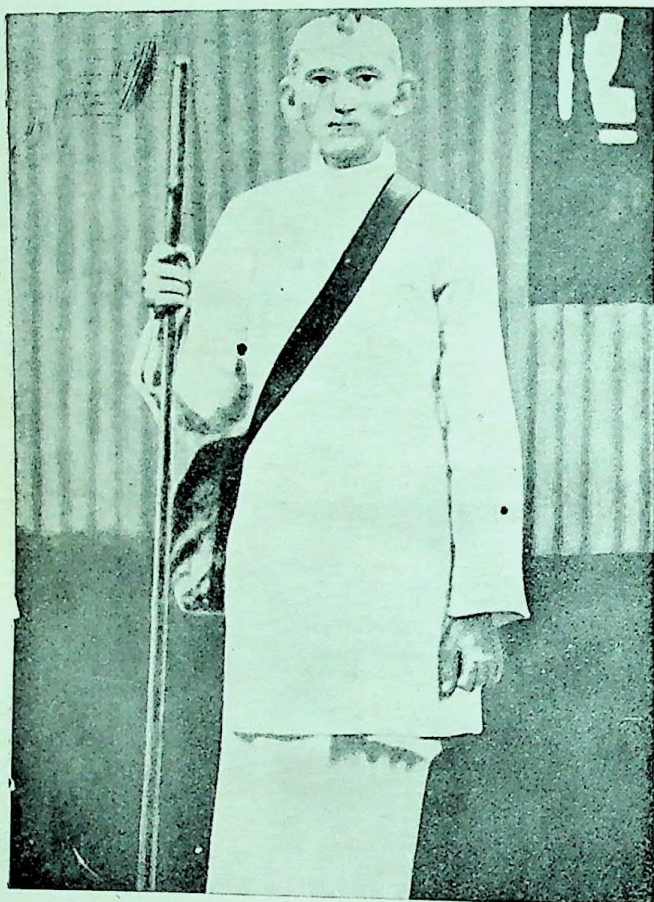
सत्याग्रह के सैनिक

सन् १९१३ में दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आन्दोलन के संचालक गांधीजी ने अंग्रेजी ठाठ-बाट और शानदार पोशाक सब छोड़ दी

म० गांधी काठियावाड़ी वेश में

टोपी पहने हुए
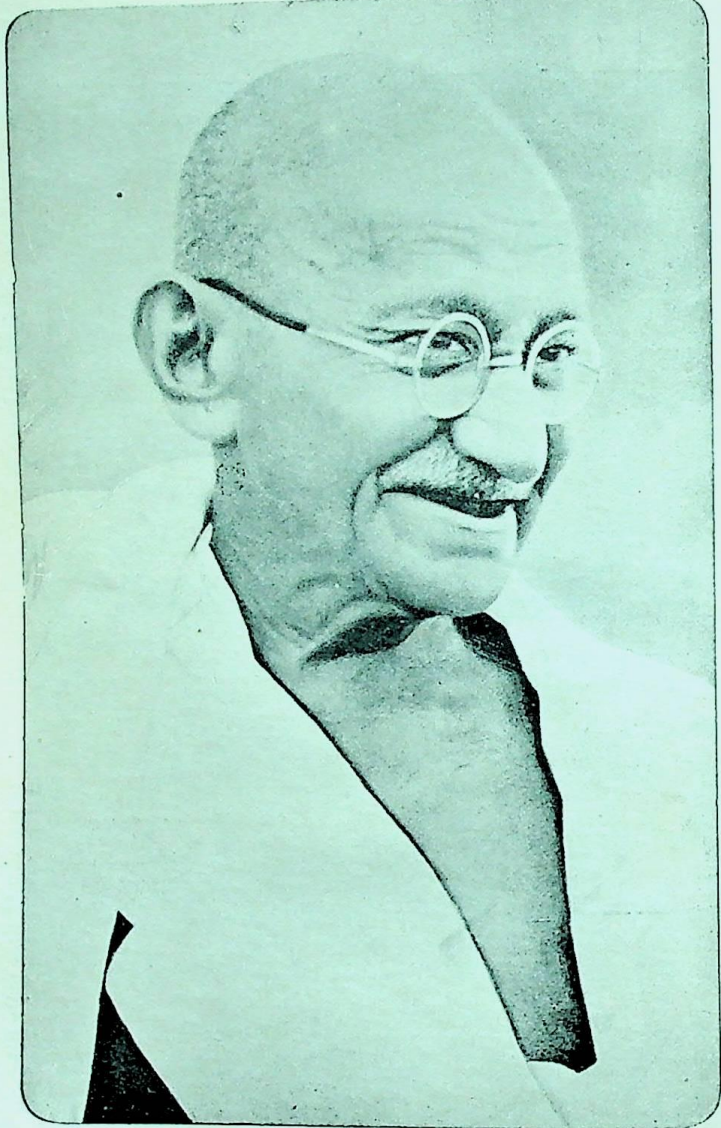
वात्सल्य मूर्ति

बापू अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में

कितनी भी विपत्तियां आवें, गांधीजी सदा प्रसन्न-चित्त रहते थे
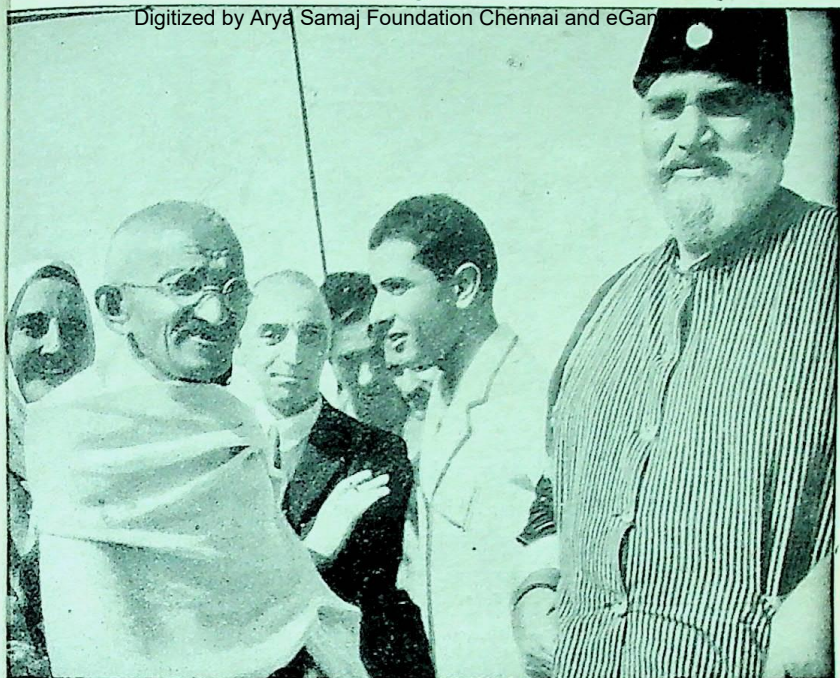
१९१९ में खिलाफ़त आन्दोलन के समय मौ० शौकतअली के साथ

सन् १९२४ में २१ दिन का उपवास—उपवास के १९ वें दिन भी गांधीजी कितने प्रसन्न-चित्त हैं। पास में इन्दिरा नेहरू बैठी हुई हैं।
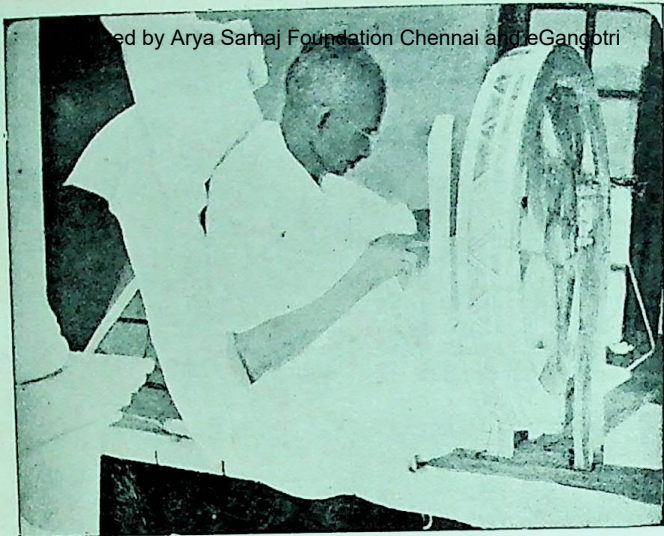
कर्मवीर गांधी

गांधीजी जो कहते थे वह स्वयं पहले करते थे
उपवास के १४ वें दिन कमजोरी की हालत में भी नियमपूर्वक चर्खा कात रहे हैं
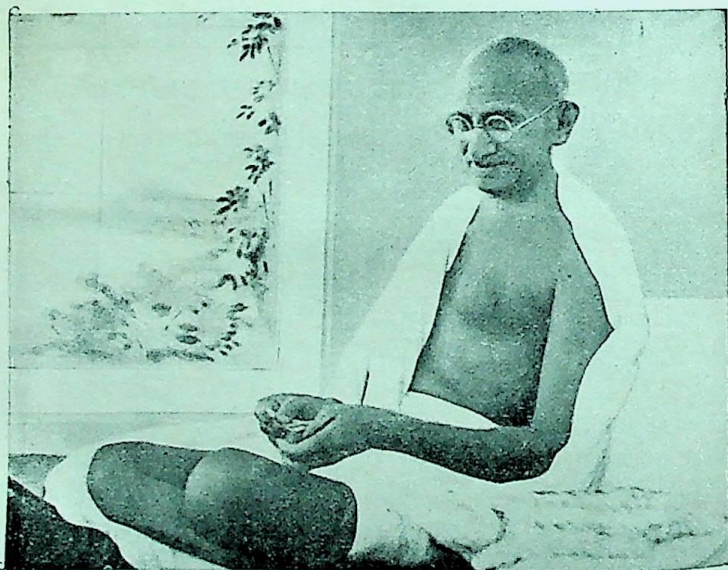
राष्ट्रपति

गांधीजी सन् १९२४ में बेलगांव कांग्रेस के सभापति चुने गये थे
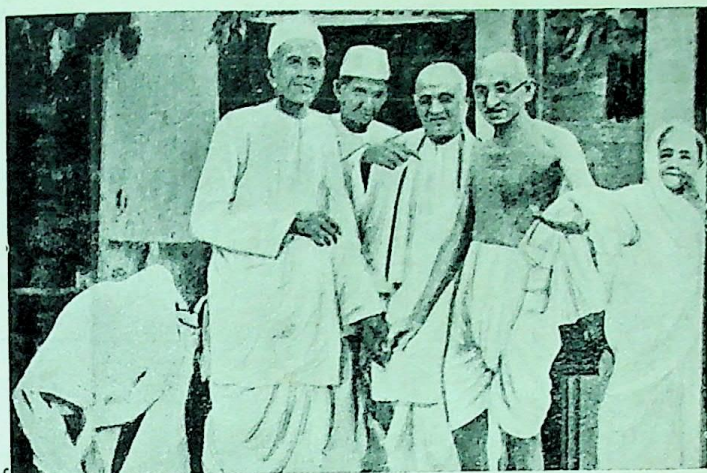
बारडोली सत्याग्रह में विजय प्राप्त करने के बाद सरदार पटेल गांधीजी से मिल रहे हैं। पास में श्रीमती कस्तूरबा गांधी खड़ी हैं

सन् '३० के १२ मार्च को महात्मा गांधी नमक-कानून तोड़ने के लिए ऐतिहासिक डांडी-यात्रा के लिए रवाना हो रहे हैं। ६ अप्रैल (सन् '३०) को उन्होंने नमक-कानून तोड़ा था।
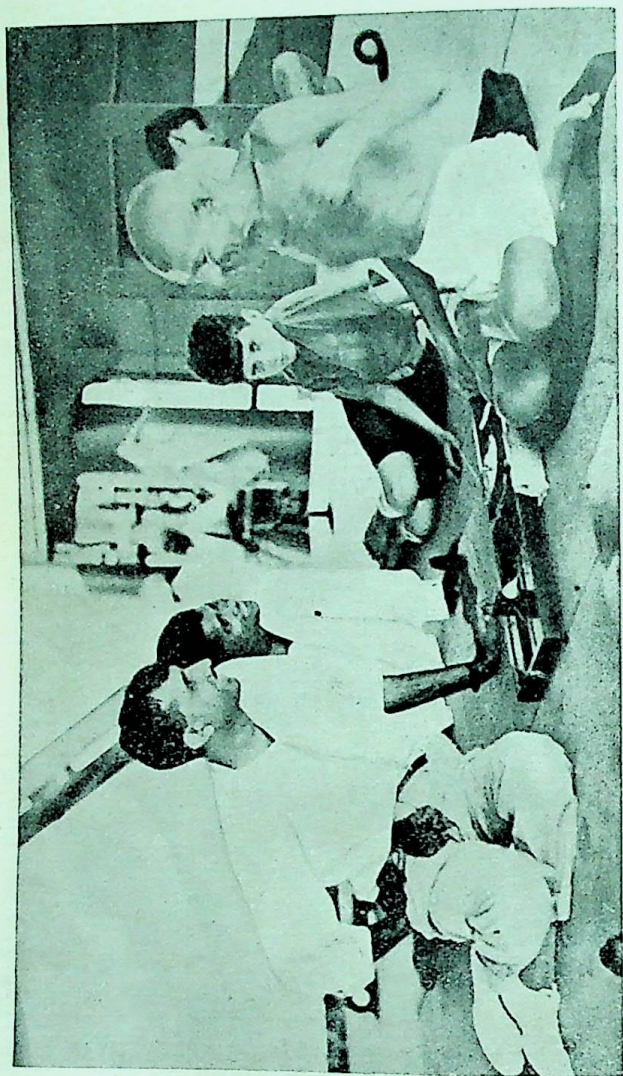
सन् '३१ में गोलमेज़ परिषद में भाग लेने के लिए इंगलैंड को प्रस्थान। म० गांधी यात्रा में भी जहाज़ पर नियमपूर्वक चर्खा कात रहे हैं। सामने सेठ घनश्यामदास बिड़ला बैठे हुए हैं।

विलायत पहुंचने पर वहां की जनता द्वारा लन्दन में भव्य स्वागत
दाहिनी ओर मीराबहन खड़ी हुई हैं

१४ सितम्बर सन् '३१ में गोलमेज़ परिषद का लन्दन में प्रथम अधिवेशन
म० गांधी के पास मालवीयजी बैठे हुए हैं
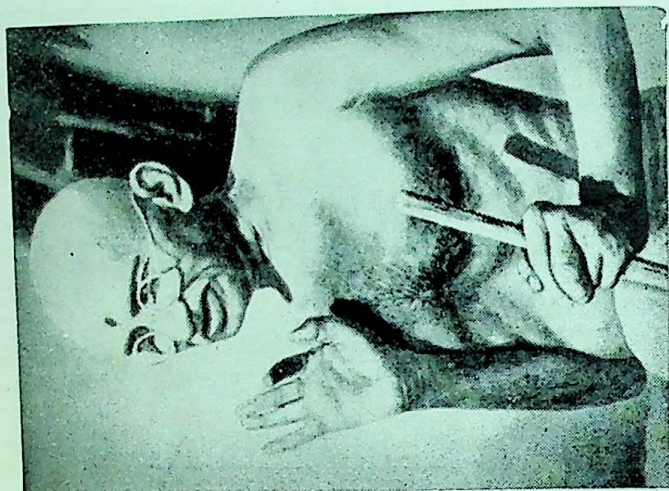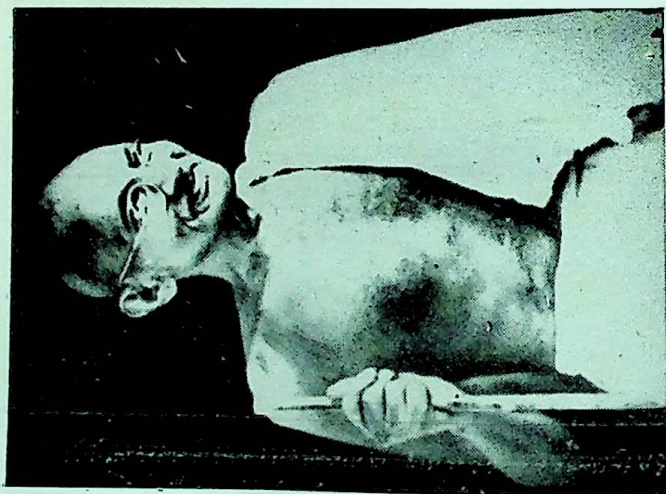
ग़रीबों के साथी

शांतिदूत
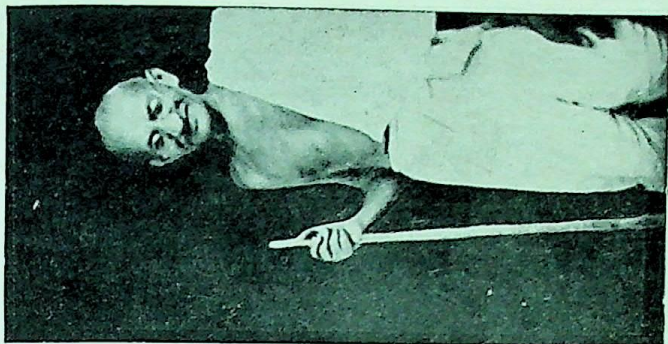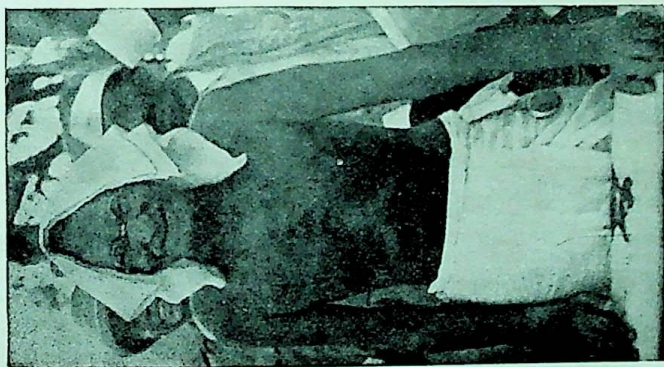
प्रसन्नचित्त बापू

बा और बापू

प्यारे बापू
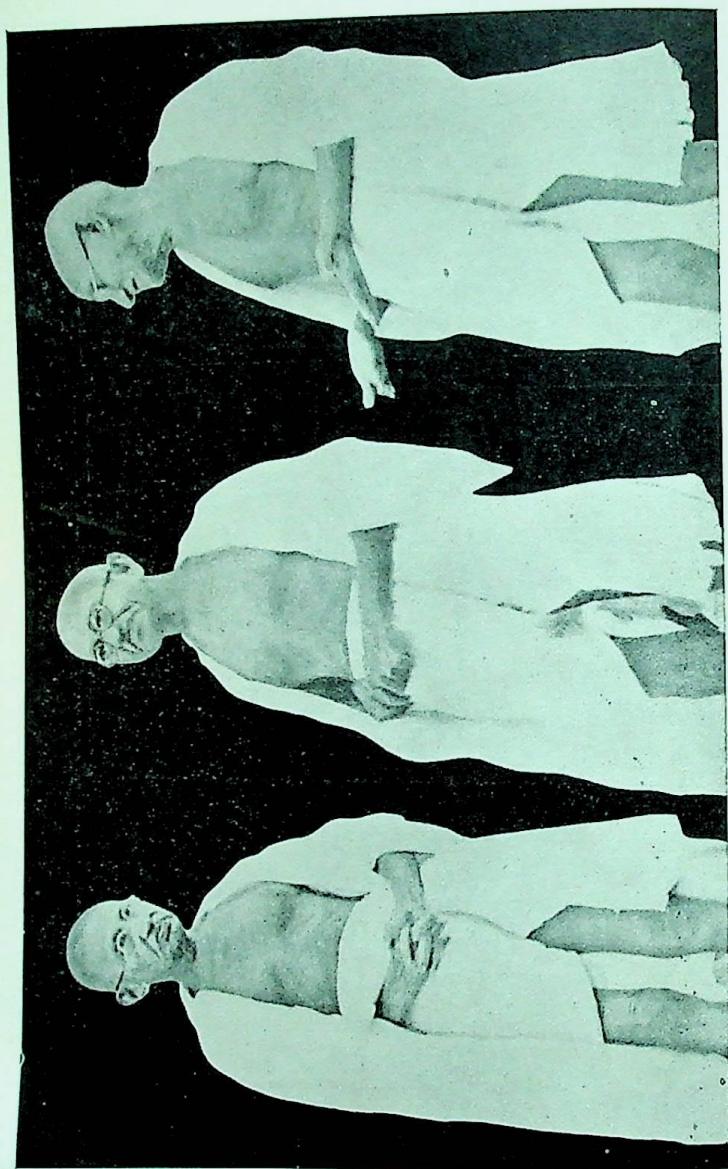
विचारमग्नता के त्रिविध रूप

विचारमग्नता के त्रिविध रूप
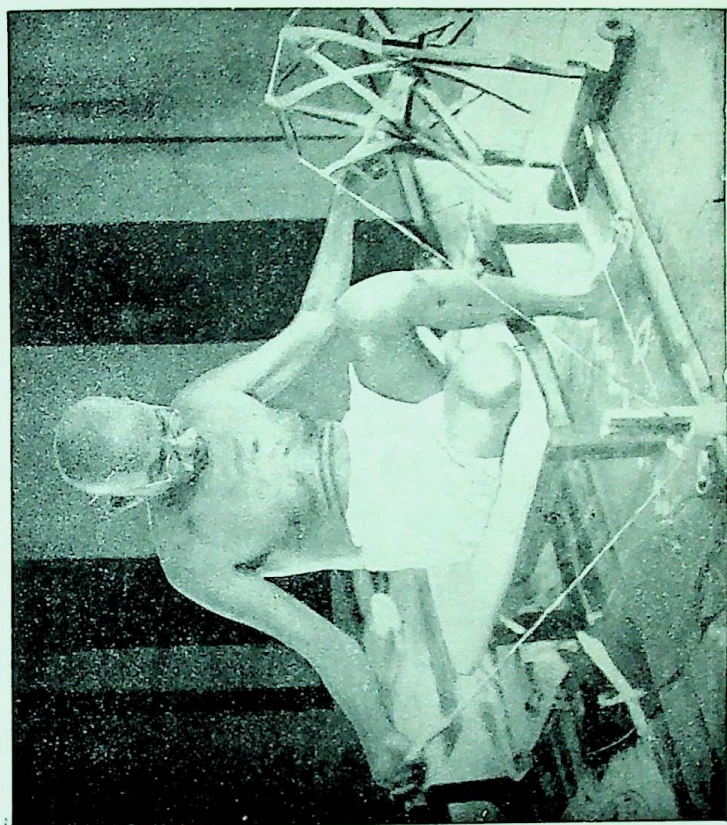
दरिद्रनारायण के लिए

बा और बापू घूमने जा रहे हैं

(कनु गांधी के सौजन्य से)
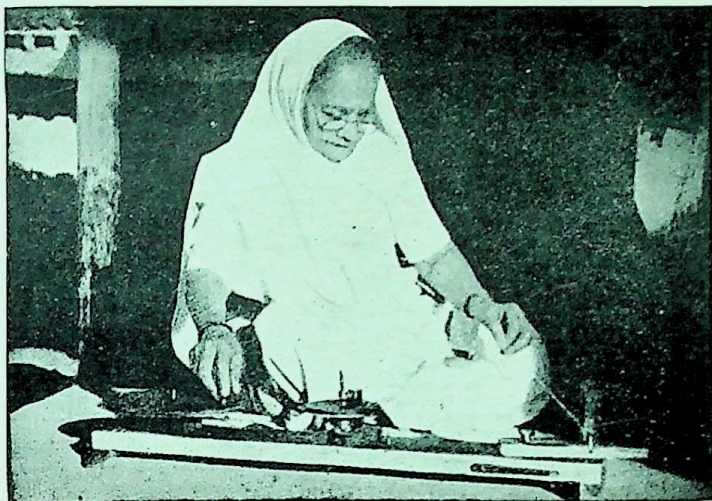
राष्ट्रमाता श्री कस्तूरबा चर्खा कात रही हैं
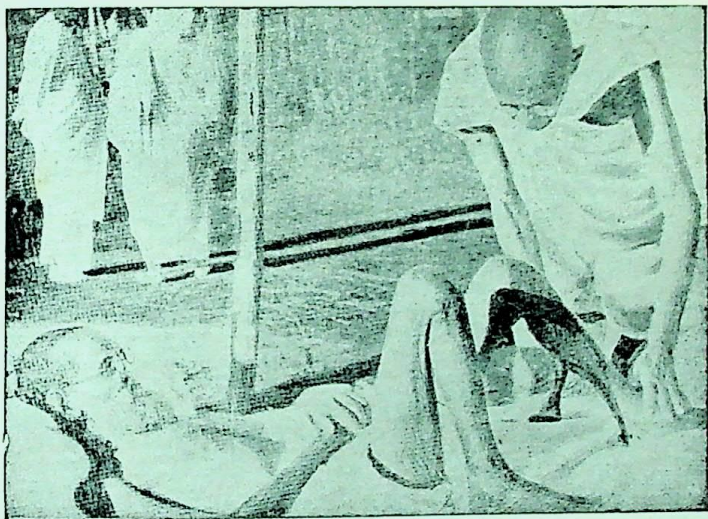
दीनबन्धु बापू
कुष्टरोग-पीड़ित श्री परचुरे शास्त्री की सेवा में
(कनु गांधी के सौजन्य से)
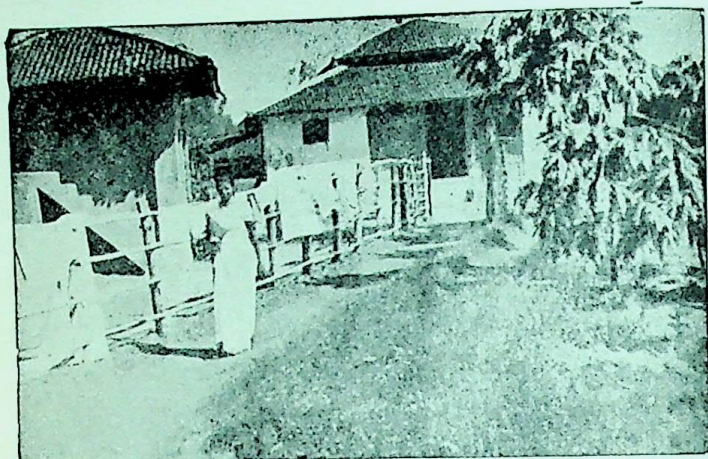
सेवाग्राम में बापूजी की कुटिया
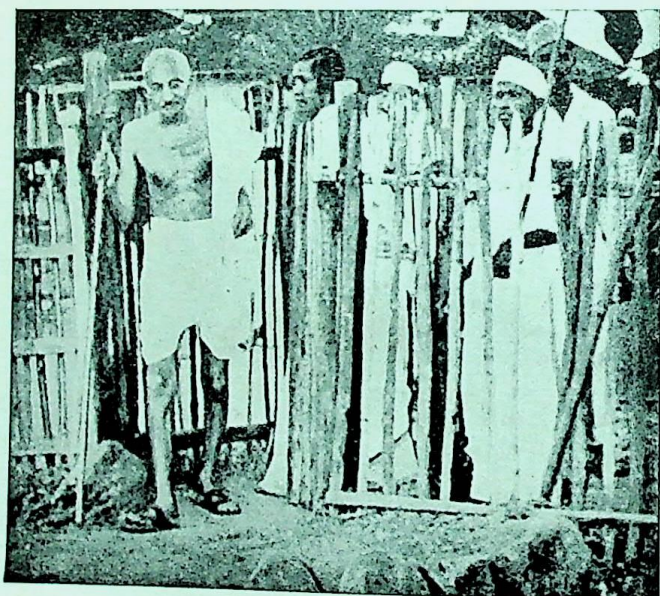
बापू अपनी कुटिया से निकल कर घूमने जा रहे हैं

(कनु गांधी के सौजन्य से)
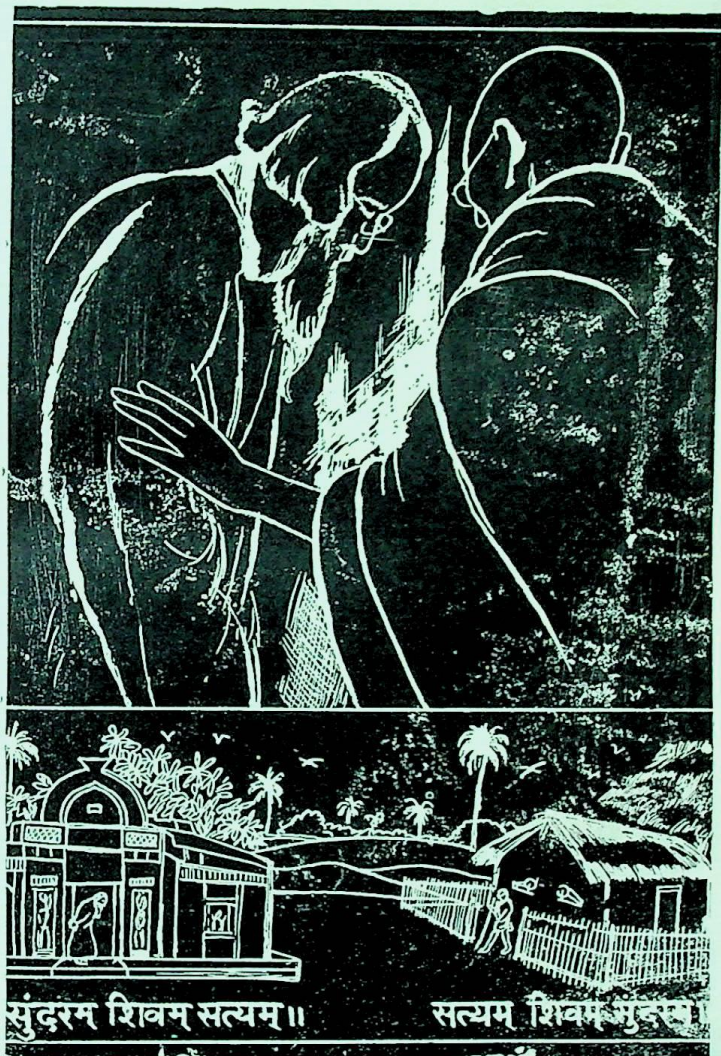
संसार की दो विभूतियां—म० गांधी और गुरुदेव रवीन्द्र का स्नेह-मिलन।
नीचे—एक ओर शान्तिनिकेतन है, दूसरी ओर सेवाग्राम।

मेरे प्रभु के हज़ारों रूप हैं। कभी मैं उसका दर्शन चर्खे में करता हूं, तो कभी साम्प्रदायिक एकता में, कभी अस्पृश्यता निवारण में तो कभी रोगियों और दुखियों की सेवा में। मैं गरीब-से-गरीब हिन्दुस्तानी के जीवन के साथ अपने जीवन को मिला देना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि दूसरे तरीकों से मुझे ईश्वर के दर्शन हो ही नहीं सकते।"

—मो. क. गांधी

परमात्मा के ध्यान में लीन
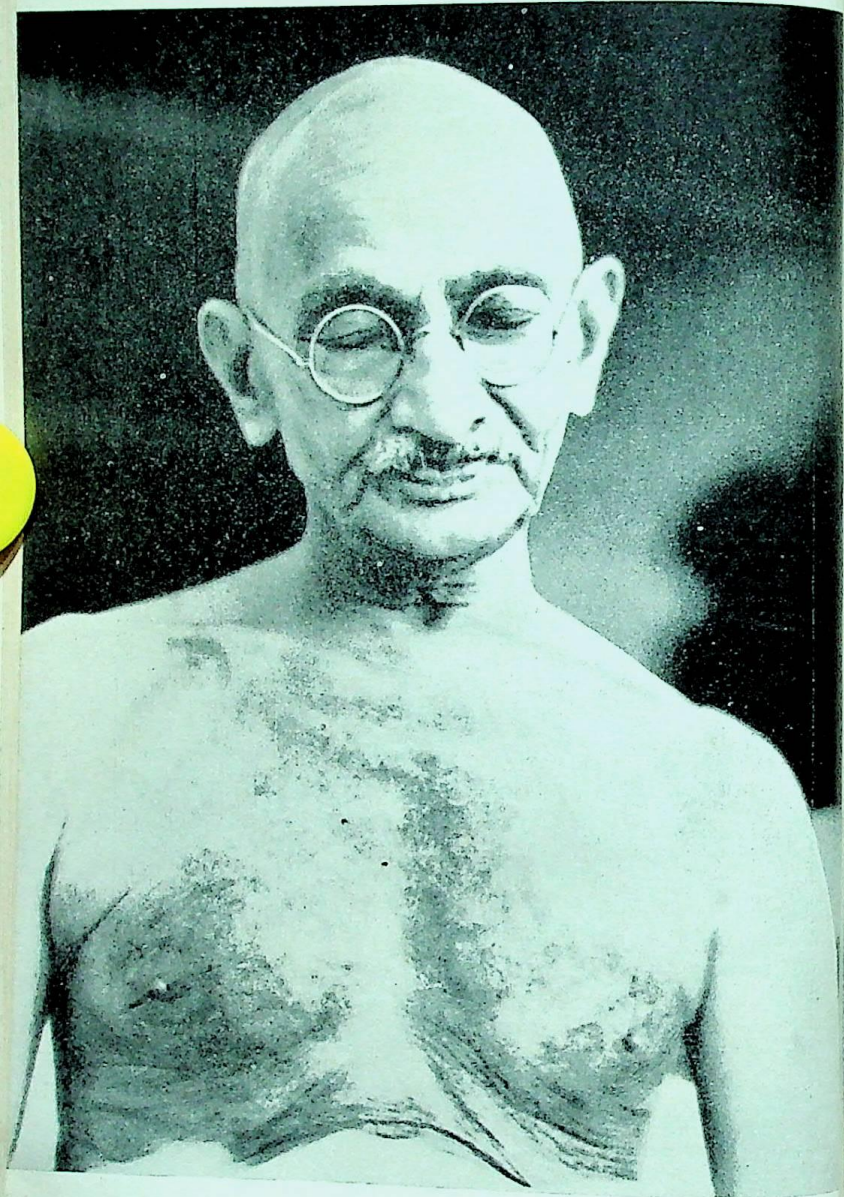
ध्यानावस्थित बापू
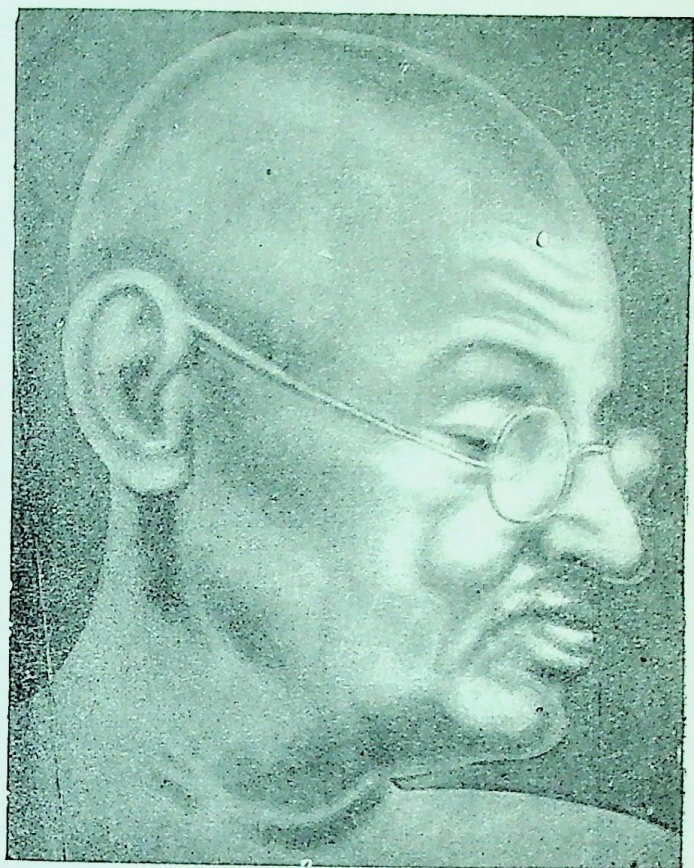
संत गांधी (चित्रकार सुशील सरकार)

जिसने ईर्ष्या, द्वेष, दंभ एवं क्रोध को अपने मन से निकाल फेंका है, जिसने प्राण लेने वाले शत्रुओं को भी क्षमा कर दिया है, जिसके आश्रम में सांप आदि हिंसक जन्तु निर्भय होकर विचर सकते हैं, जिसकी पोशाक केवल एक लंगोटी और चादर है, जिसने अपने जीवन को ग़रीबों के साथ मिला दिया है, ऐसे असाधारण संत गांधी को बार-बार नमस्कार।

रघुपति राघव राजाराम - पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम - सबको सन्मति दे भगवान

प्रार्थना में लीन

सत्य, अहिंसा और प्रार्थना, यही गांधीजी का सब था ।

(चित्रकार—धीरेन
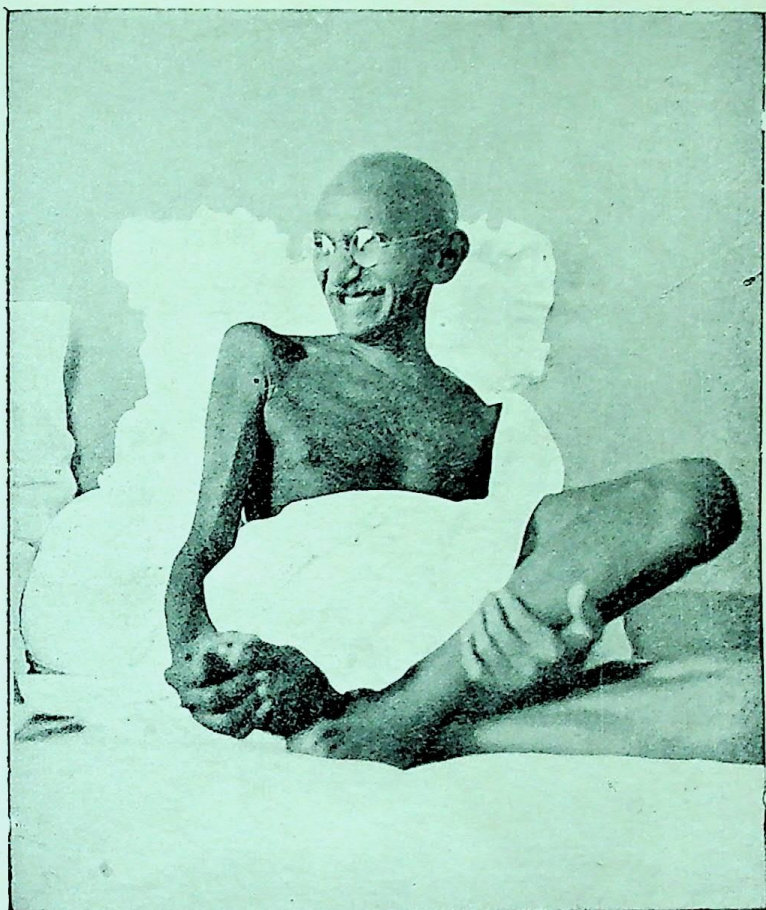
मुक्त हास्य

स्वर्गीय आनन्द में मग्न । वाह रे तपस्वी तू धन्य है !

तेरे दर्शनमात्र से उदासी दूर भाग जाती है !

(कनु गांधी के सौजन्य से)
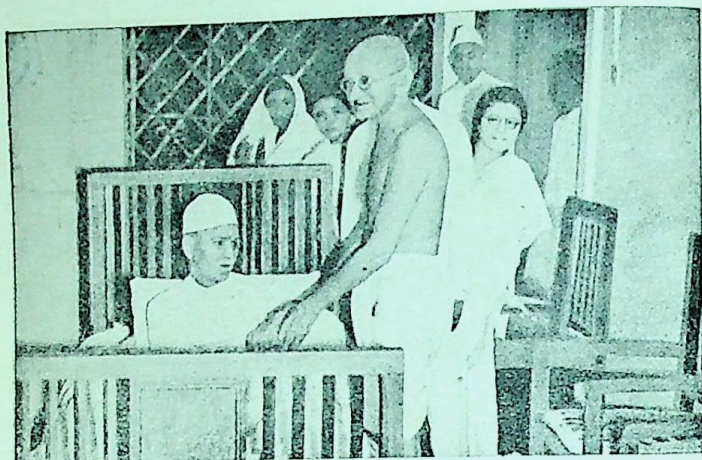
रोगशय्या पर पड़े हुए पं० मालवीयजी की बापूजी से अन्तिम भेंट

बापू और नेताजी

हरिपुरा कांग्रेस के अवसर पर

म० गांधी और सरहद्दी गांधी
श्री अब्दुलगफ्फ़ारखां

म० गांधी और मौलाना आज़ाद
कुछ विचार कर रहे हैं

बापू और बापा

(कनु गांधी के सौजन्य से)

म० गांधी, डा० पट्टाभि सीतारमैया और महादेवभाई के साथ
अ० भा० कां० की कार्यसमिति में जाते हुए
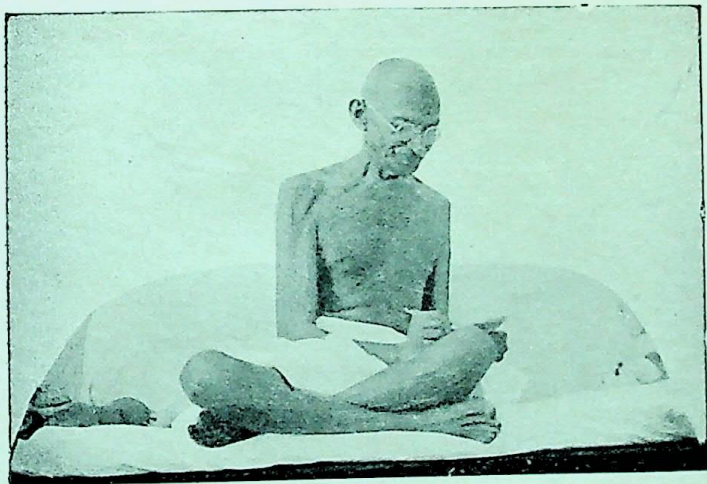
म० गांधी अपने घुटने के सहारे एकचित्त होकर लेख लिख रहे हैं।
कैसी आदर्श सादगी है।
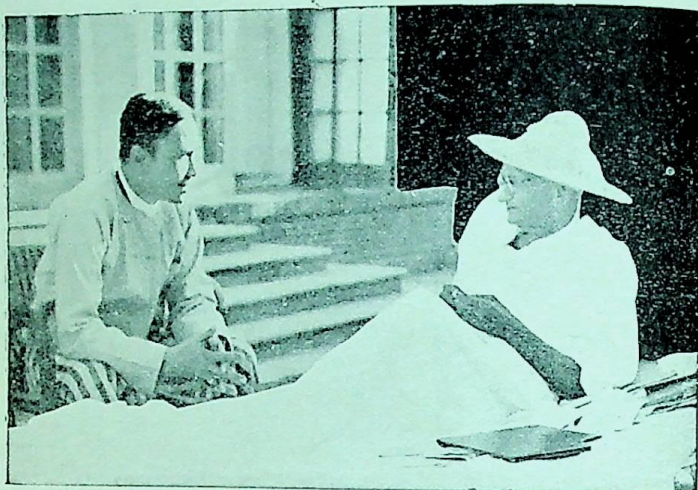
बापूजी बर्मा के प्रधान मन्त्री थाकिन नू से बातें कर रहे हैं

सरदार पटेल और महात्माजी प्रसन्न मुद्रा में
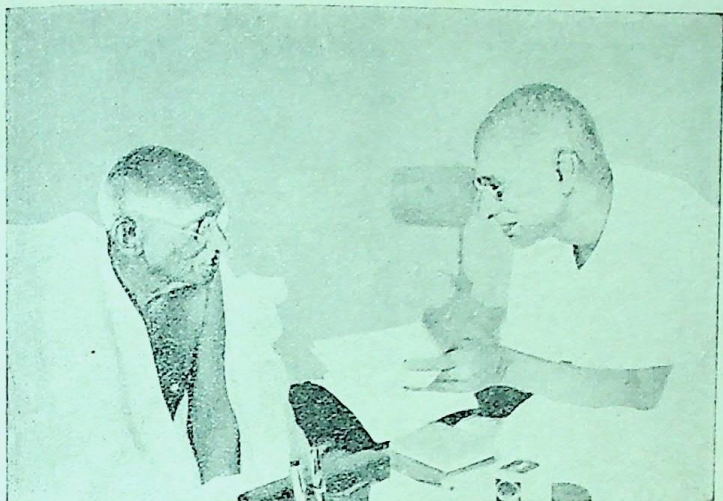
बापू और च० राजगोपालाचार्य
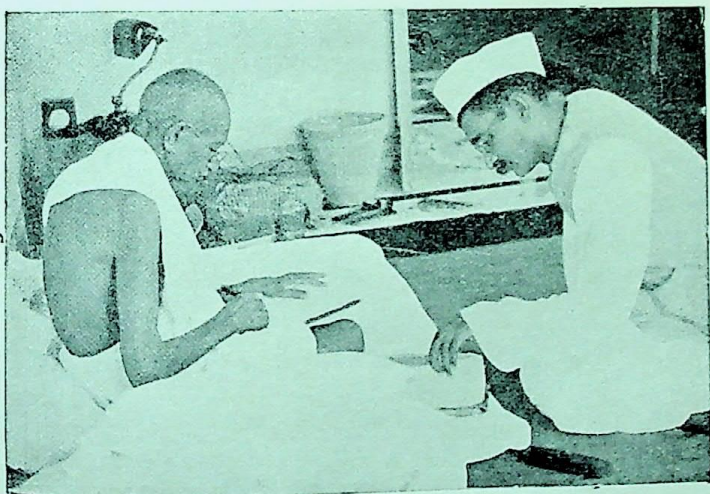
बापू और राजेन्द्रबाबू
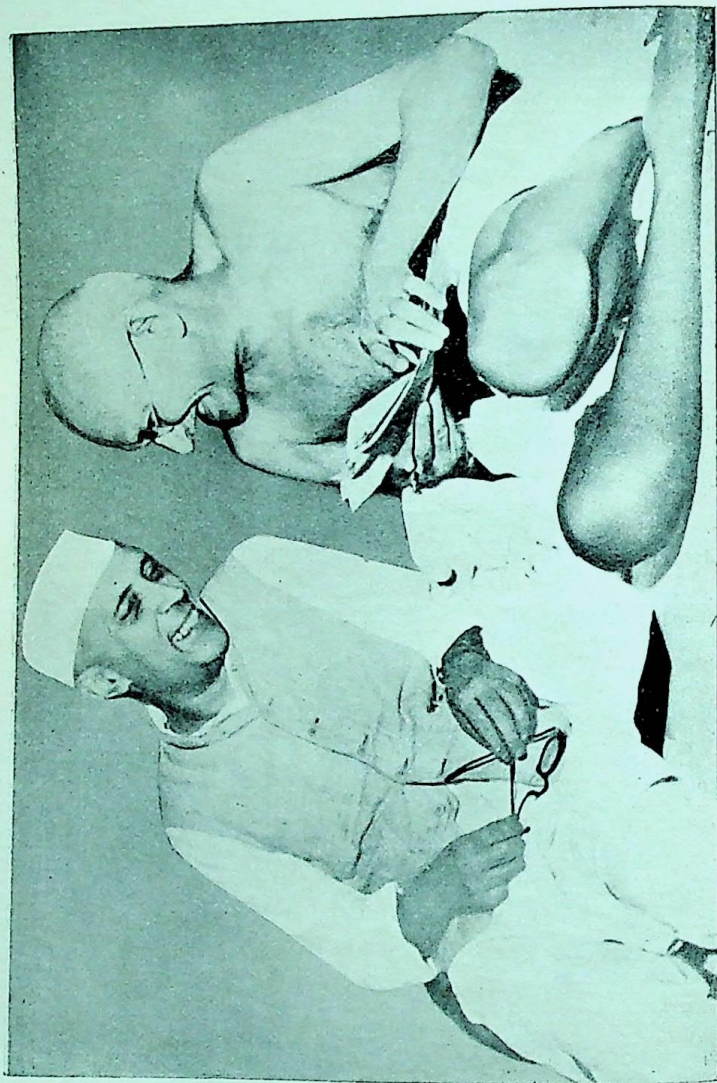
बापू अपने उत्तराधिकारी प्यारे जवाहर के साथ

बापू का बच्चों के प्रति स्नेह

बच्चों को देखकर वे ऐसे प्रसन्न हो उठते थे जैसे एक बच्चा खिलौना पाकर प्रसन्न हो जाता है। रोते हुए बच्चों को हंसा देना उनके बाएं हाथ का खेल था। बच्चों में वे परमात्मा का दर्शन करते थे।

दादा-पोते खेलते हुए

बापू का पौत्र काना बंबई के समुद्रतट पर अपने दादा की लकड़ी पकड़े हुए हंसता हुआ चल रहा है।
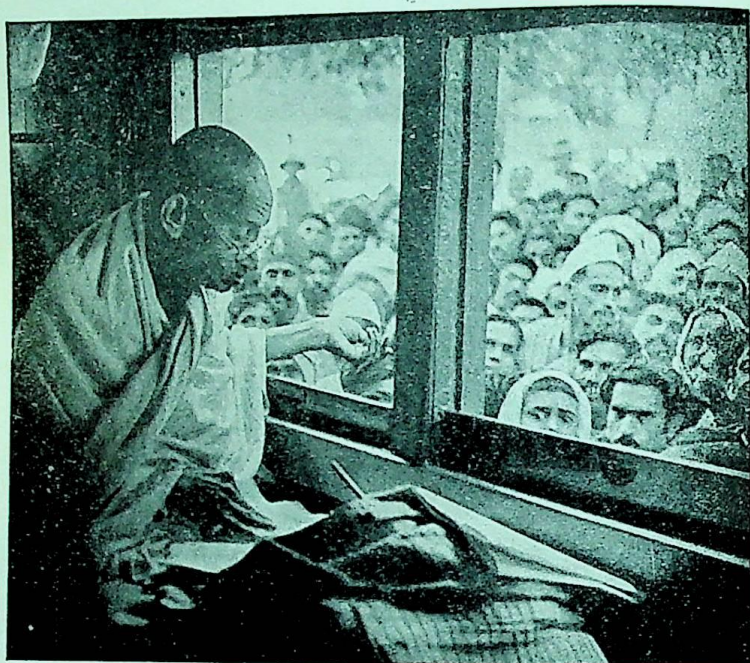
दरिद्रनारायणों के लिए

म० गांधीजी रेल के तीसरे दर्जे में यात्रा कर रहे हैं। स्टेशन पर हज़ारों आदमी दर्शन करने को खड़े हैं। यात्रा में भी महात्माजी एक मिनट व्यर्थ नहीं खोते थे। जैसे-जैसे समय मिलता था अपने पत्र 'नवजीवन' के लिये लेख लिखते रहते थे। उधर हरिजन-फंड के लिये भी लोगों से दान मांगते रहते थे। हरिजनों के उद्धार को तो वे कभी भूलते ही न थे। वास्तव में इस युग के वे बड़े भारी तपस्वी थे।

(कनु गांधी के सौजन्य से)
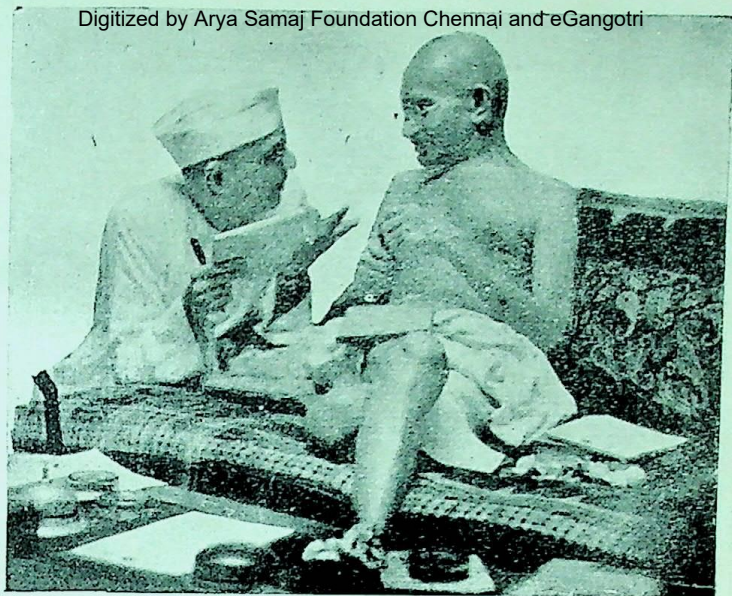
बापू के साथ महादेवभाई का अंतिम चित्र (८ अगस्त १९४२)
आजादी के आखिरी युद्ध की घोषणा पर दोनों विचार कर रहे हैं

त्रिमूर्त्ति
सरदार पटेल और पं० जवाहरलाल बापू के साथ गंभीर विचार कर रहे हैं
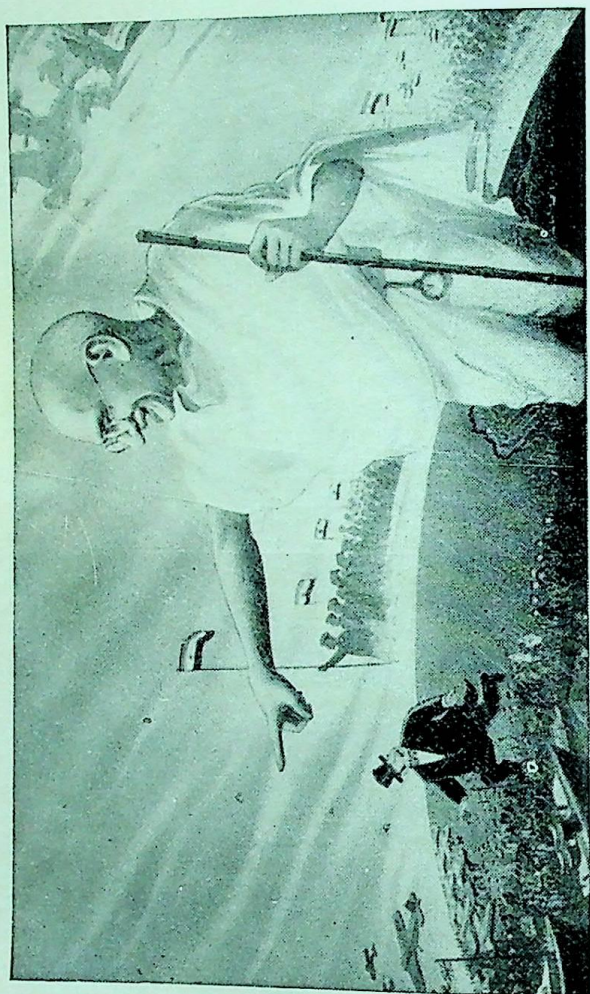
महात्मा गांधी के सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव से सारे देश में अभूतपूर्व हलचल मच गई थी। सरकार के घोर दमन के होते हुए भी देश अपनी प्रतिज्ञा पर डटा रहा। अंत में अंग्रेज़ों को भारत छोड़ना ही पड़ा।

बा से बिछोह

पूना के आगाखां महल के बंदी-वास में म. गांधी राष्ट्रमाता कस्तूरबा के पुष्पों से ढके हुए शव के पास बैठे शांत चिंतन में लीन हैं।
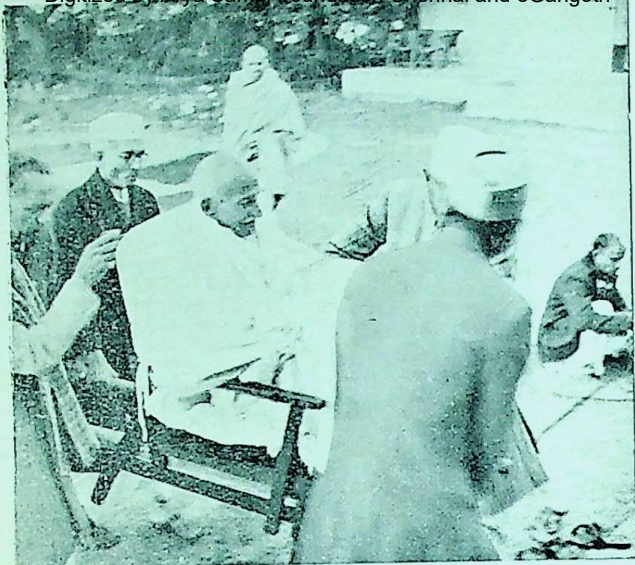
उपवास के चौथे दिन दुर्बल हो जाने के कारण कुर्सी पर बैठकर प्रार्थना करने जा रहे हैं--प्रार्थना करना वे कभी नहीं भूलते थे।

'एकला चालो रे'

नोआखाली के गांवों में शांति स्थापित करने के लिये महात्माजी इस बुढ़ापे में भी नंगे पैरों [illegible] घूम रहे हैं
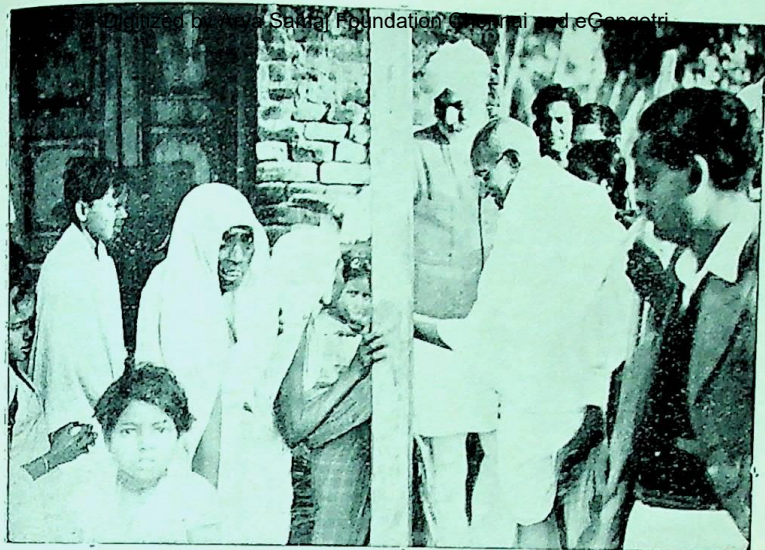
गांधीजी नोआखाली में दुःखी बहनों और बच्चों को दिलासा दे रहे हैं
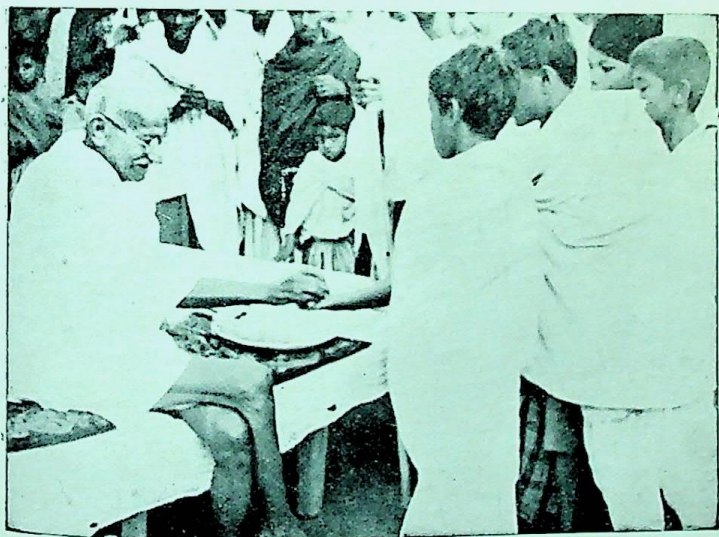
बहुत से लोग बापूजी के लिये फल लाते थे। बापूजी उन फलों को
गांवों के बच्चों को बांट रहे हैं
देश के बच्चों को वे अपने ही बच्चे समझते थे।
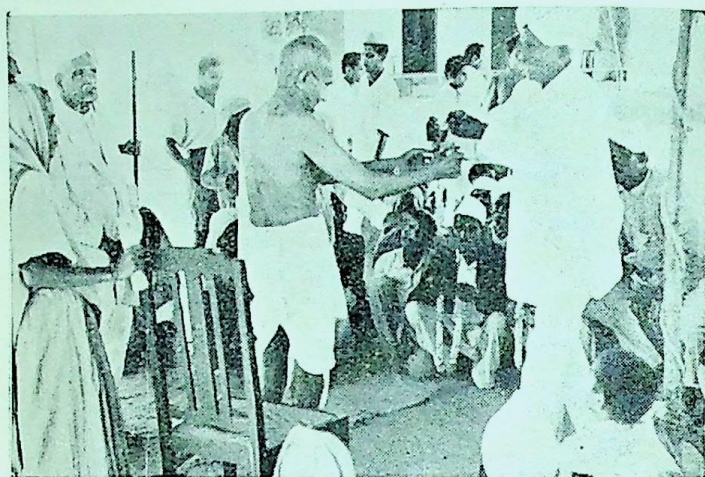
भंगी बस्ती में हरिजन-भाई बापूजी का स्वागत कर रहे हैं

उन तूफ़ानी दिनों में मुसलमान भाइयों को बापूजी दिलासा दे रहे हैं
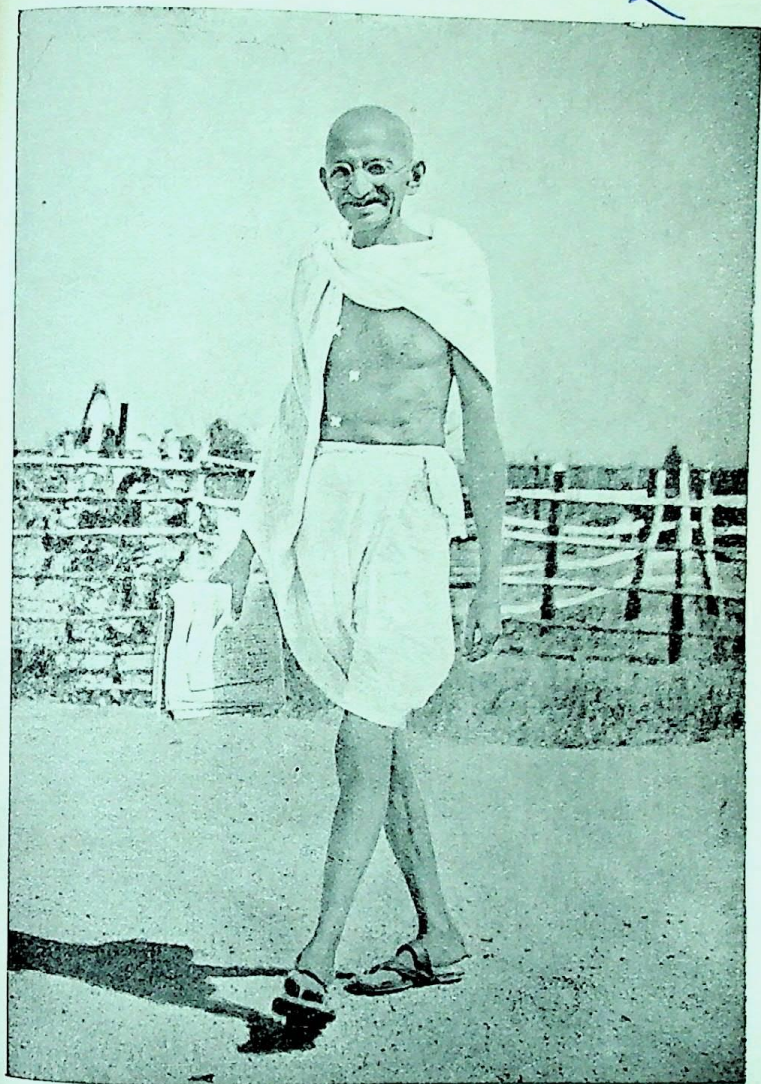
बापू का लोकप्रिय सुन्दर चित्र

बापू अपने आश्रम की कुटिया के बाहर टहल रहे हैं। शरीर पर × जो तीन चिन्ह दिखाई देते हैं, इन्हीं स्थानों पर बापूजी के गोलियां लगी थीं।
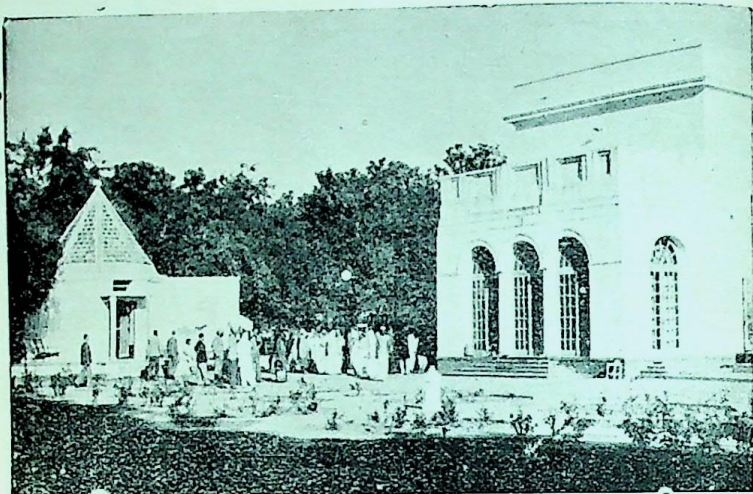
ता० ३० जनवरी को जिस रोज उनकी मृत्यु हुई थी, हमेशा की तरह बापूजी बिरला भवन के इस गुंबज वाले कमरे से निकलकर प्रार्थना सभा में जा रहे हैं।
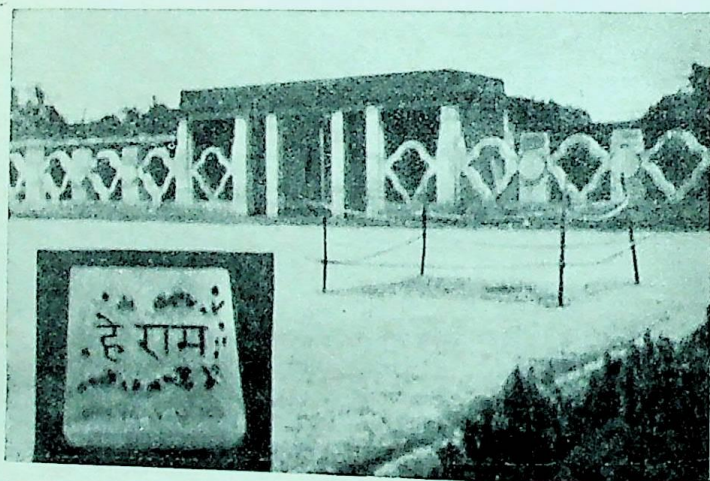
बांसों तथा रस्सों से घिरा हुआ वह स्थान जहां गोलियों के लगने से बापू का प्राणांत हुआ था। नीचे 'हे राम' लिखा है जो उनके मुख से अन्तिम शब्द निकले थे।

आत्मा उड़ गई

३० जनवरी की रात को गांधीजी के शव का लिया गया पहला चित्र

स्नान के बाद गांधीजी के शव का लिया हुआ दूसरा चित्र।
गोली के निशान स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

राष्ट्रपिता की अन्तिम यात्रा

बापूजी के मृतक शरीर का जलूस। अन्त्येष्टि संस्कार के लिये अर्थी को राजघाट ले जाया जा रहा है। राजा, महाराजा, किसान, मजदूर, छोट-बड़े सभी लोग लाखों की तादाद में साथ में थे। जहां तक दृष्टि जाती थी मनुष्य-ही-मनुष्य दिखाई देते थे। ऐसा जलूस बड़े बड़े बादशाहों तक का नहीं निकला था।
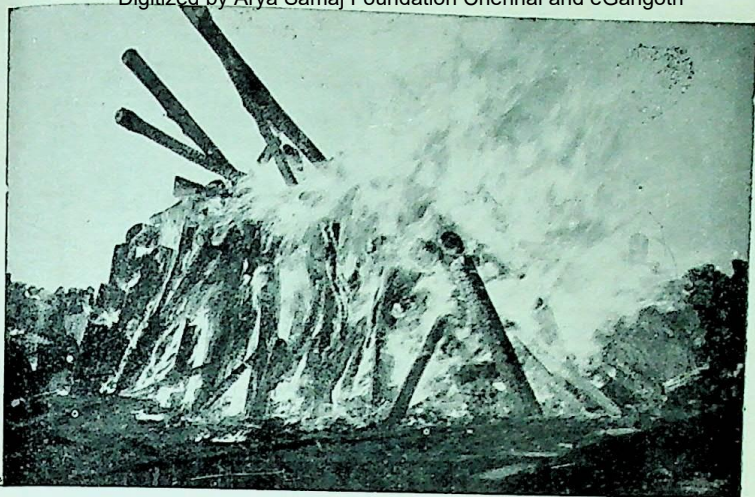
पार्थिव शरीर गया

अग्नि-देवता ने बापू के शरीर को परमधाम पहुंचा दिया।

राजघाट पर बापूजी की पवित्र समाधि। सब लोग उसके चारों ओर परिक्रमा दे रहे हैं।
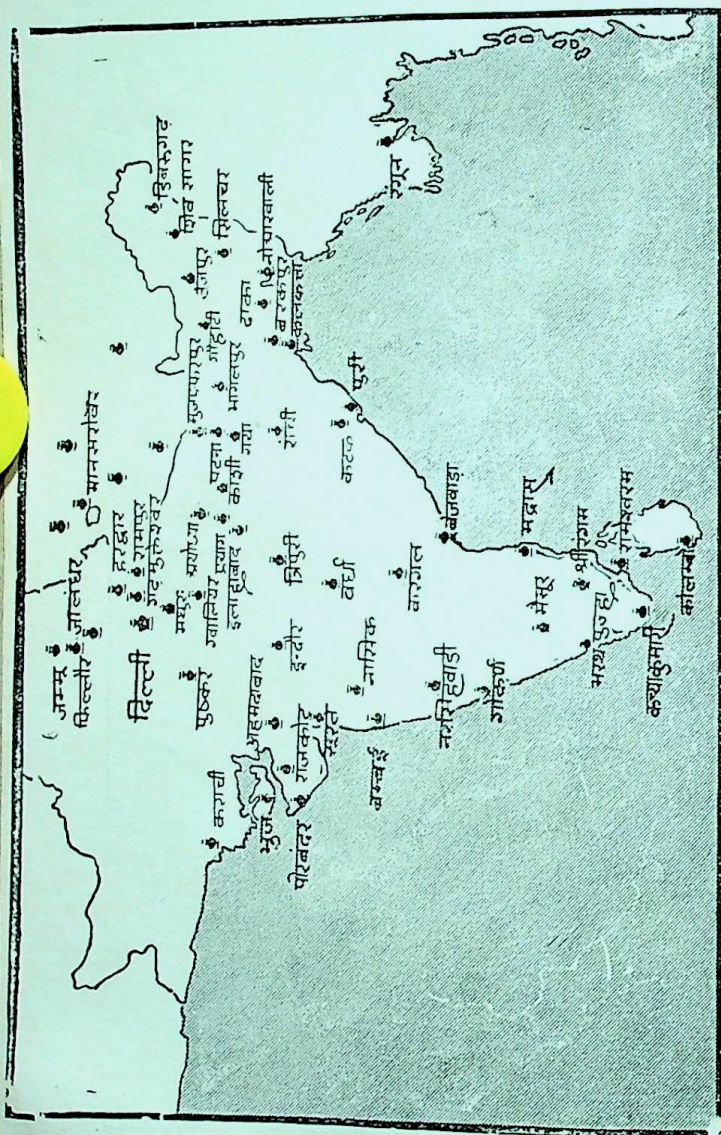
म. गांधीजी की अस्थियां व भस्मी हिन्दुस्तान के मुख्य-मुख्य पवित्र तीर्थ-स्थानों, नदियों व समुद्रों में प्रवाहित की गई थीं । ऊपर वे ही स्थान दिखलाये गये हैं। महात्माजी की भस्मी से धरती ही नहीं, समुद्र और नदियां तक धन्य हो उठीं ।
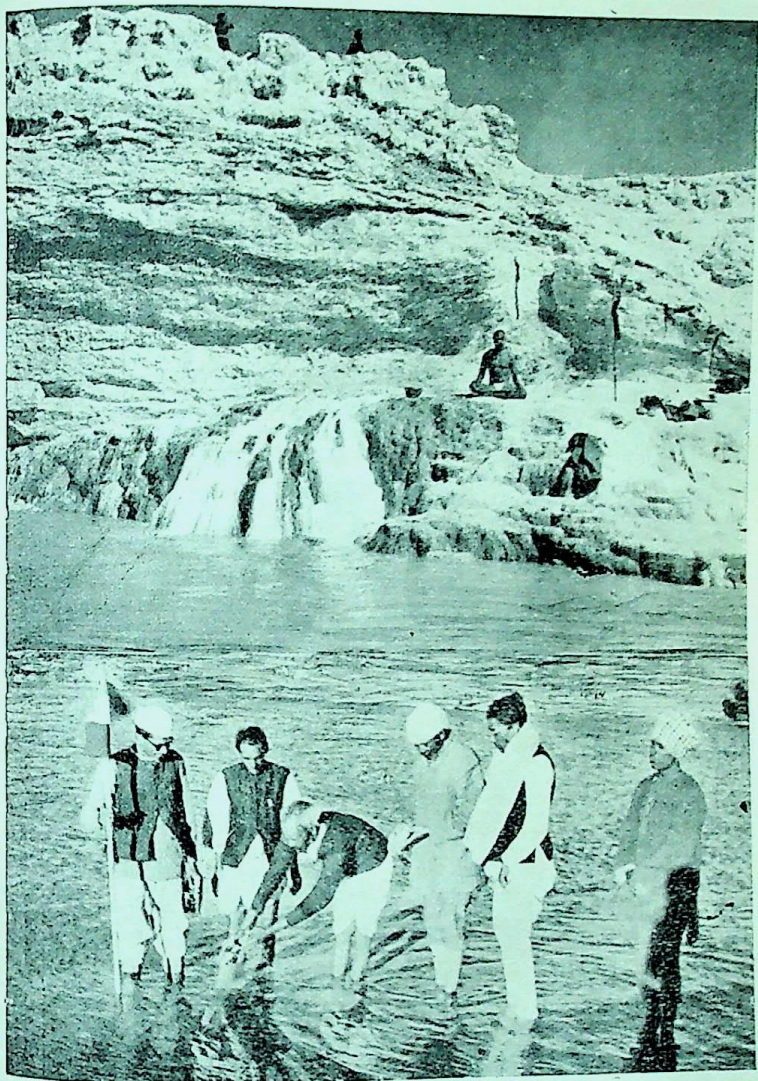
भस्मी विसर्जन

भारत के अत्यन्त प्राचीन व पवित्र स्थान कैलाशपर्वत और उसके नीचे मानसरोवर में महातमाजी की अस्थियां व भस्मी प्रवाहित की जा रही हैं।

संसार की सब जातियों और देशों के लोग बापू जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर रहे हैं।

शांति दूतों की परम्परा

(ईसा, बुद्ध, महावीर और गांधी)

बापूजी के सबसे छोटे पुत्र देवदासजी गांधी और डा. सुशीला नय्यर बापूजी की धोती व चादर लिये खड़े हैं। कपड़ों पर ख़ून के दाग़ साफ़ दिखाई दे रहे हैं।
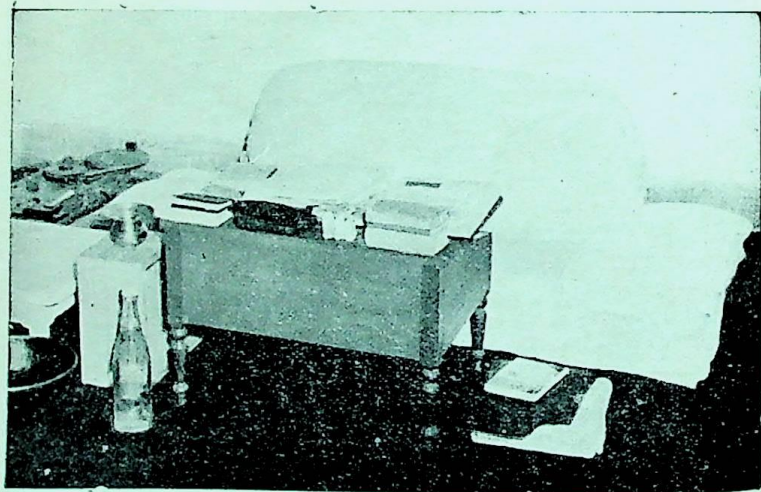
बापू के प्रयोग की वस्तुएं

तकिया और आसन जिस पर बापूजी बैठते थे, डेस्क जिस पर बापूजी लिखते थे, चर्खा जिस पर बापूजी कातते थे।
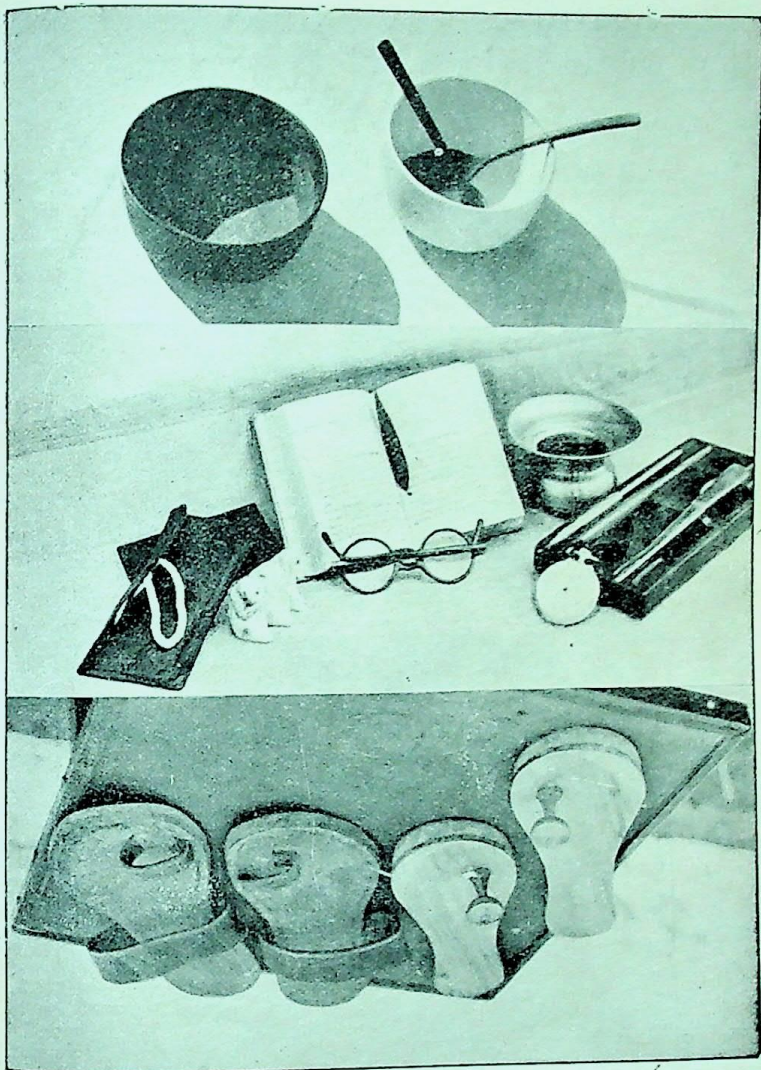
बापूजी के स्मृति-चिह्न

(१) भोजन के कटोरे और काठ के चम्मच (२) गीता, माला, घड़ी, चश्मा, उगालदान व कलमदान (३) चप्पल व खड़ाऊं।

सत्य और अहिंसाके
संपूर्ण पालनकी भरसक
कोशिश करो
बापुके आशीर्वाद
३-१०-४५

बापूजी के हस्ताक्षरों का नमूना

"सत्य और अहिंसा के संपूर्ण पालन की भरसक कोशिश करो।
बापू के आशीर्वाद ३--१०--४५।"
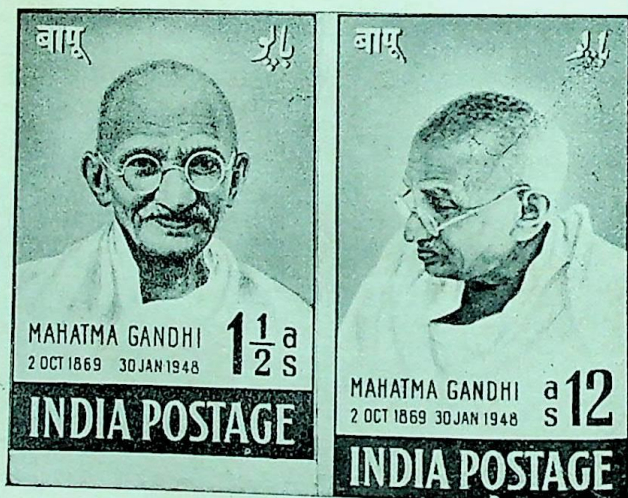
बापू की यादगार में डाक के टिकटों का नमूना

महात्मा गांधी

भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि तमाम दुनियाँ में शायद ही कोई ऐसा आदमी होगा जिसने महात्मा गांधी का नाम न सुना हो और जिसके दिल में उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति न हो। इसका मुख्य कारण यह है कि उनका जीवन त्याग, तपस्या और सच्चाई से ओतप्रोत था। वे सदा स्वयं कष्ट उठा कर प्राणीमात्र के दुखों को दूर करने का प्रयत्न करते रहते थे। उन्होंने सोते हुए भारत को जगाकर उसमें राष्ट्रीय चेतना का संचार किया, संसार की सबसे बड़ी साम्राज्यवादी शक्ति के विरुद्ध अपने अनोखे सत्याग्रह शस्त्र से लड़कर भारत के ३० करोड़ नर नारियों को स्वाधीनता दिलाई, शोषण और हिंसा से पीड़ित व्याकुल संसार को अहिंसा और सत्य का सन्देश दिया। यही कारण था कि जब तारीख ३० जनवरी सन् १९४८ को वे एक गुंडे के हाथों मारे गये तो तमाम दुनियाँ में उनकी मृत्यु का इतना भारी शोक मनाया गया जितना आज तक किसी बड़े से बड़े बादशाह तक की मृत्यु पर नहीं मनाया गया। भारतवर्ष में उनकी चिता की राख के दर्शन करने के लिए लाखों आदमी जगह जगह इकट्ठे हुए और बड़े से बड़े राजा महाराजाओं से लेकर ग़रीब से ग़रीब मज़दूर और किसान ने भी महात्माजी के प्रति अपनी श्रद्धांजली भेंट की। गांधीजी साधारण मनुष्यों की भांति पैदा हुए थे। फिर उनमें ऐसी क्या बात थी जिससे वे हिन्दुस्तान के ही नहीं वरन संसार के महापुरुष कहलाए! इसलिए हमें उनका जीवन-चरित्र पढ़ना चाहिए और उनके जीवन से सबक लेकर हमें भी अपने जीवन को वैसा ही पवित्र बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

गांधीजी का जन्म और बाल्यावस्था

म० गांधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गांधी था। उनका नाम तो मोहनदास था और उनके पिता का नाम करमचंद। गुजरात में पुत्र के नाम के साथ पिता का नाम भी मिलाकर बोलने और लिखने का रिवाज है इसलिए गांधीजी भी अपने हस्ताक्षरों में "मोहनदास करमचन्द गांधी" ऐसा सदा लिखते थे।

काठियावाड़ में द्वारिकापुरी के पास सुदामापुरी है जिसे अब पोरबन्दर कहते हैं। गांधीजी का जन्म इसी पोरबन्दर में ता० २ अक्टूबर सन् १८६९ ई० अर्थात् आश्विन बदी १२ सं० १९२५ को हुआ। इस समय गांधीजी के पिता करमचन्द गांधी पोरबन्दर रियासत के दीवान थे। वे बड़े सच्चे, निडर और धर्मात्मा पुरुष थे। गांधीजी की माता श्रीमती पुतलीबाई साक्षात् देवी थीं। पूजा-पाठ व्रत-उपवास और धर्म चर्चा में ही उनका अधिकाँश समय बीतता था। वे बड़ी दयालु थीं। किसी के थोड़े से दुःख को देखकर उनका हृदय पिघल जाता था। दुखियों और ग़रीबों की वे सदा सहायता करती रहती थीं। सादगी इतनी थी कि दीवान की स्त्री होकर घर का सारा कामकाज अपने हाथों से किया करती थीं।

गांधीजी पर अपने माता पिता के इन अच्छे गुणों का प्रभाव बचपन से ही पड़ने लगा। पिता की तरह वे सच्चे और निडर हुए तथा माता की तरह धार्मिक और दयावान् हुए। गांधीजी की अपनी माता में अचल भक्ति थी और वे उनकी आज्ञा का पालन करते थे।

शिक्षा

गांधीजी जब सात वर्ष के थे तब गुजराती पाठशाला में भरती किये गये। १० वर्ष की उम्र में अंग्रेज़ी स्कूल में भरती

हुए। इसी समय उन्होंने संस्कृत भी पढ़ी और धीरे धीरे धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन भी करने लगे। १७ वर्ष की उम्र में एन्ट्रेन्स (मैट्रिकुलेशन) की परीक्षा पास करली। इसके बाद उन्होंने विलायत जाकर बैरिस्टरी पास करने का निश्चय किया परन्तु उनकी माता उन्हें विलायत नहीं जाने देना चाहती थीं। गांधीजी ने इसी बारे में अपनी आत्मकथा में लिखा है "जब मेरे इङ्गलैंड जाने की बात छिड़ी, मां ने बारबार मना किया। अन्त में बहुत कहने सुनने पर मां ने एक शर्त पर जाने की आज्ञा दी—वे मुझे एक जैन साधु के पास लेगई और मुझे उनके सामने तीन सौगन्ध खाने को कहा कि मैं मांस, मदिरा और परनारी से दूर रहूँगा। इसी मेरे प्रण ने, जो मैंने अपनी मां के सामने किया था, लंदन में मुझे कई बुराइयों से बचाया"।

सन् १८८८ ई० में गांधीजी बैरिस्ट्री पास करने के लिये विलायत गये। वहाँ तीन साल तक पढ़ाई करके बैरिस्ट्री पास कर सन् १८९१ ई० में घर लौट आये। विलायत में भी उन्होंने धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन को कभी नहीं छोड़ा और श्री गीताजी का तो खूब गहराई से अध्ययन किया। यहाँ अवकाश के समय वे लेटिन और फ्रेंचभाषा का भी अध्ययन करते थे।

गांधीजी स्कूल में

गांधीजी स्कूल में मन लगाकर पढ़ते थे, अपने अध्यापकों का आदर करते थे और कभी झूठ नहीं बोलते थे। उन्हें अपने आचरण का बहुत ख्याल रहता था। वे नहीं चाहते थे कि उनसे कोई ऐसी बात हो जिससे अध्यापक उन्हें बुरा लड़का समझने लगें। एक बार उन्हें स्कूल में मार खानी पड़ी। इस पर वे बहुत रोये। उन्हें मार खाने का दुःख न था, परन्तु इस बात का बहुत पछतावा हुआ कि वे दण्ड के योग्य समझे गये। अच्छे चालचलन के कारण गांधीजी को

उनके शिक्षक और उनके सहपाठी बहुत प्रेम की दृष्टि से देखते थे। उन्हें अकसर छात्रवृत्ति और इनाम मिलते रहते थे। स्कूल के खेलकूद में गांधीजी बहुत कम हिस्सा ले पाते थे क्योंकि प्राय: वही समय तो पिताजी की सेवा का होता था और वही खेलकूद का होता था। फिर भी खुली हवा में घूमकर इस कमी को पूरी कर लेते थे। तभी से गांधीजी टहलने को इतना पसन्द करने लगे कि अंत समय तक नियम से टहलने जाते रहे। गाँधीजी का स्वास्थ्य अन्त समय तक अच्छा रहा, इसका एक कारण उनका नियमपूर्वक टहलना भी था।

एक बार एक इन्सपेक्टर स्कूल का निरीक्षण करने आये। उसने विद्यार्थियों को पांच शब्द लिखवाये। उनमें एक शब्द था केटल (Kettle) गांधीजी ने इसे ग़लत लिखा। स्कूल के मास्टर ने गांधीजी को चुपके से कहा कि आगे बैठे लड़के की स्लेट देखकर शब्द सही करलो। परन्तु गांधीजी ने ऐसा नहीं किया। चुपके से नकल करना वे पाप समझते थे।

गांधीजी ने अपना अपराध स्वीकार किया

गांधीजी के बड़े भाई ने किसी से कर्ज़ ले रखा था। उस कर्ज़ को चुकाने के लिए गांधीजी ने घर का थोड़ासा सोना चुरा कर बेच डाला। बाद में वे अपने इस अपराध से बहुत दु:खी हुए। अत: उन्होंने अपने पिता के नाम एक पत्र लिखा जिसमें अपना यह चुराने का दोष स्वीकार किया, इसके लिए सज़ा मांगी और आगे से ऐसा अपराध न करने की प्रतिज्ञा की। यह पत्र उन्होंने खुद ही अपने पिता को दिया और हाथ जोड़कर उनके सामने बैठ गये। पत्र पढ़कर उनके पिता की आंखों में आंसू भर आये। उन्होंने कहा धन्य है ऐसा पुत्र जो अपने माता पिता से कोई बात नहीं छिपाता और अपना अपराध स्वीकार कर लेता है। उन्होंने अपने सत्यवादी पुत्र को क्षमा कर दिया।

माता पिता की सेवा का व्रत

एक बार गांधीजी ने 'श्रवण-पितृ-भक्ति' नाटक पढ़ा जिसमें श्रवणकुमार की अन्धे माता-पिता की सेवा का वर्णन था। श्रवणकुमार अपने अन्धे माता-पिता को कांवर में बैठा कर तीर्थों की यात्रा कराने के लिए ले जारहा था। यह चित्र भी उन्होंने देखा। इन दोनों चीज़ों का गांधीजी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वे श्रवणकुमार की भांति ही माता पिता की सेवा करने लगे। स्कूल बन्द होते ही वे तुरन्त घर पहुँच जाते और अपने पिता की सेवा में जुट जाते। अपनी माता की हर आज्ञा का पालन करते, न कभी झूठ बोलते और न कभी छल कपट करते। जैसी भी बात होती अपने माता पिता के सामने सचसच कह देते। सुबह उठते ही माता पिता एवं बड़े लोगों के चरणों में धोक देते और उनका आशीर्वाद लेते। माता कभी इनके किसी अप्रिय कार्य में दुखित हो जाती तो ये नम्रतापूर्वक कहते "मां, आगे से मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जिससे तुम्हें दुःख हो।" ऐसी थी उनकी मातृभक्ति।

सदा सच बोलने की प्रतिज्ञा

बचपन में एक बार उन्होंने सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र का नाटक देखा। इस नाटक का उनके मन पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने भी राजा हरिश्चन्द्र की तरह सदा सच बोलने की प्रतिज्ञा की। इस प्रतिज्ञा को उन्होंने अंतकाल तक निभाया और सारे संसार में सत्य और अहिंसा के देवता कहलाए।

सुन्दर अक्षर

गांधीजी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं—"मुझे ऐसा विश्वास होगया था कि पढ़ाई में खुशख़त होने की ज़रूरत नहीं है पर बाद में मालूम हुआ कि ख़त (लिखावट) का

ख़राब होना अधूरी शिक्षा की निशानी है। पीछे मैंने अपना ख़त सुधारने का बड़ा प्रयत्न किया परन्तु सब बेकार हुआ। जिस बात की लापरवाही मैंने जवानी में की उसे मैं आज तक न सुधार सका। प्रत्येक नवयुवक को मेरे उदाहरण से सचेत हो जाना चाहिये कि अच्छा सुन्दर लेख विद्या का आवश्यक अंग है। बालकों को सुन्दर लेखन-कला सबसे पहले सिखाना **चाहिये।"**

विवाह

हमारे देश में उस समय यह बड़ा बुरा रिवाज था कि बचपन में ही सगाई और विवाह कर दिया जाता था। गांधीजी के पिता इतने समझदार होते हुए भी उस समय की रीति के अनुसार सिर्फ़ ७ वर्ष की आयु में ही गांधीजी की सगाई श्रीगोकुलजी माकनजी की कन्या कस्तूरीबाई के साथ करदी और १३ वर्ष की उम्र होते-होते विवाह भी कर दिया। उस समय गांधीजी पांचवीं कक्षा में पढ़ते थे। गांधीजी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं "जब मेरा विवाह हुआ उन दिनों मैंने ब्रह्मचर्य पर एक छोटीसी पुस्तक पढ़ी थी जिसमें लिखा था कि पुरुषों को एकपत्नी व्रत धारण करना चाहिये। यह बात मेरे हृदय में समा गई और मैंने अपना आचरण वैसा ही करने का नियम कर लिया। मैं जो कुछ नियम लेता था उसे सच्चाई से निभाने की पूरी कोशिश करता था। या तो नियम लेता ही नहीं। यदि ले लिया तो उसका पूर्ण पालन होना ही चाहिये। इसी के कारण मैं कई बार अधःपतन से बचा। एक बार मैं किसी मित्र के बहकावे में आगया। वे मुझे चकले में (वेश्याओं के यहां) ले गये और एक बाई के मकान में मुझे भेज दिया। मुझे पैसे देने से कुछ मतलब नहीं था। उनका तो मतलब मेरे पापाचार करने से था। मैं मकान में पहुँचा परन्तु भगवान् जिसे बचाना चाहते हैं, उसे बचा ही लेते हैं। मुझे अपने

एकपत्नी व्रत का नियम याद था। मैं शर्म से गूंगा बनकर उस बाई की खाट पर बैठ गया। मेरी जिह्वा से एक भी शब्द न निकला। बाई झल्लाई और मुझे बुरीभली सुनाकर उसने दरवाज़े का रास्ता दिखलाया"।

"मुझे पत्नी के सदाचार पर कभी शंका नहीं हुई परन्तु ईर्ष्यावश मैं अपनी धर्मपत्नी पर कड़ी दृष्टि रखने लगा। इससे मैंने उसकी स्वतन्त्रता में काफ़ी बाधा पहुँचाई। एक मित्र की बातें मानकर मैं कुछ वहमी पति बन गया और परिणाम स्वरूप अपनी पत्नी को कई बार कष्ट भी दिया है और इस हिंसा के लिए मैंने अपने आपको कभी क्षमा नहीं किया। मेरे वहम का बिलकुल नाश तो तभी हुआ जब कि मुझे अहिंसा का ज्ञान हुआ और मैं समझने लगा कि पत्नी पति की दासी नहीं बल्कि सहचरी है। दोनों एक दूसरे के सुख दु:ख के समान भागी हैं"।

गांधीजी के धर्म सम्बन्धी संस्कार

यह तो शुरू में ही बतलाया गया है कि धर्मात्मा मता पिता की सन्तान होने के कारण गांधीजी के जीवन में बचपन से ही धार्मिक भावना जागृत थी। छोटी आयु में ही वे अपने पिता के साथ मंदिर में रामायण की कथा सुनने जाया करते थे। कथा सुनकर वे उस पर विचार करते थे, मनन करते थे, और अपने जीवन में उन उपदेशों को ग्रहण करने की कोशिश करते थे। गांधीजी के पिता भगवान् रामचन्द्रजी के मंदिर में भी जाते, शिवालय में भी जाते, वैष्णव मंदिरों में भी जाते और अपने पुत्रों को भी लेजाते। उनके पास ऊँचे दर्जे के जैन पंडित, मुसलमान मौलवी और पारसी गुरु आते और उनसे वे धार्मिक चर्चा करते। गांधीजी इन सबों की बातचीत सुनते रहते और उनके पवित्र हृदय में यह बात अच्छी तरह बैठ गई कि दुनिया के सभी धर्म आदर के योग्य हैं। सच बोलो, दूसरों की सेवा करो, परमात्मा की भक्ति करो, किसी को धोखा मत दो, चोरी

न करो, किसी प्राणी को दुःख न पहुँचाओ आदि बातें सब धर्मों में प्रायः एकसी हैं फिर यह तो निरी मूर्खता है कि एक धर्मवाले दूसरे धर्मवालों से वैरभाव रखते हैं और परस्पर सिर फोड़ते हैं।

श्रीमद् रायचन्द्र भाई के संपर्क से भी गांधीजी के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। श्रीमद् रायचन्द्र भाई जाति के ओसवाल तथा जैन धर्म के मानने वाले थे। इनके सम्बन्ध में गांधीजी लिखते हैं--

"मेरे जीवन पर श्रीमद् रायचन्द्र भाई का गहरा प्रभाव पड़ा है। मैं कितने ही वर्षों से भारत में धार्मिक पुरुषों की शोध में हूँ। परन्तु मैंने ऐसा धार्मिक पुरुष अब तक नहीं देखा। युरोप के तत्त्वज्ञानियों में मैं टालसटाय को पहली श्रेणी का और रस्किन को दूसरी श्रेणी का विद्वान् समझता हूँ और इन दोनों के जीवन से भी मैंने बहुत कुछ सीखा है, पर श्रीमद् रायचन्द्र भाई का अनुभव इन दोनों से भी बढ़ाचढ़ा है। वे किसी बाड़ेबंदी के पुरुष नहीं हैं। उनका हृदय विशाल और उदार है।"

रामनाम की महिमा

गांधीजी बचपन में ही 'राम-नाम' की महिमा जान गये थे। जब वे बालक थे तब उन्हें भूतप्रेत का डर लगता था और समय कुसमय अंधेरे में जाने से वे डरते थे। जब इनकी एक रम्भा नाम की नौकरानी ने बताया कि राम-नाम का जप करने से भूतप्रेत भाग जाते हैं तब से ही बालक गांधी ने राम-नाम को अपनाया। यही राम-नाम जीवन भर उनका मूल-मंत्र रहा। मरते समय भी उन्होंने राम का ही नाम लिया।

बम्बई में वकालत और अफ्रिका को प्रस्थान

तीन साल में बैरिस्टरी पास करके सन् १८९१ में गांधीजी भारत लौट आये। जब वे १६ वर्ष के थे तभी

इनके पिता का तो देहान्त हो गया था। अब घर आने पर मालूम हुआ कि पीछे से इनकी माताजी का भी देहान्त हो गया, इस समाचार से इनको वड़ा ही दुःख हुआ।

पहले राजकोट में और वाद में वम्वई में उन्होंने वक़ालत शुरू की, मगर ज़्यादा सफलता न मिली। वात यह है कि वक़ालत तो ज़्यादातर उन लोगों की चलती है जो चलतेपुर्जे होते हैं। गांधीजी में यह वात बिलकुल न थी। १८ महीने वक़ालत करने के बाद इनको एक मुक़दमे की पैरवी करने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। इस समय इनका वेष काठियावाड़ी था। कोट पहन रक्खा था व पगड़ी बांध रक्खी थी। दक्षिण अफ्रिका में अंग्रेज़ी भेष का प्रचार था। जब ये डरबन की अदालत में पगड़ी बांधे गये तो मजिस्ट्रेट ने उनसे पगड़ी उतारने को कहा। गांधीजी ने ऐसा करने से इन्कार किया और अदालत से बाहर आगए। डरबन से गांधीजी प्रिटोरिया जाने लगे। उन्होंने फर्स्ट क्लास का टिकट कटाया और डिब्बे में बैठ गये, पर गोरे अंग्रेज़ काले आदमी की उपस्थिति को वहाँ बर्दाश्त न कर सके और गांधीजी को ज़बर्दस्ती उतार दिया गया और थर्ड क्लास के डिब्बे में बैठने को कहा। पर गांधीजी ने इस अन्याय को मानने से इन्कार किया। रात भर वे जाड़े में स्टेशन पर पड़े रहे। जब गांधीजी चार्ल्स टाउन पहुँचे तो यहां की घोड़ागाड़ी के अंग्रेज़ कोचवान ने उनको तो गाड़ी की छत पर बैठाया और खुद भीतर बैठकर सिगरेट पीने लगा। गांधीजी ने जब इसका विरोध किया तो उस अंग्रेज़ ने गांधीजो को पीटना शुरू कर दिया। इस तरह पगपग पर दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को अपमान सहना पड़ता था। इन घटनाओं से गांधीजी का दिल दहल उठा और इस रंगभेद के अन्याय को उखाड़ फेंकने की उन्होंने प्रतिज्ञा की।

गांधीजी ने प्रिटोरिया में भारतीयों की एक सभा की और उसमें पहली बार भाषण दिया। गांधीजी का जीवन वहाँ धीरे धीरे सार्वजनिक बनता गया और वे लोकप्रिय होगये। जिस मुक़द्दमे की पैरवी करने गांधीजी दक्षिण अफ्रीका गये थे, वह मुक़द्दमा पंचायत से तय होगया। अतः गांधीजी ने भारत लौटना निश्चित किया। इसी अवसर पर नेटाल सरकार एक कानून पास करके भारतीयों के मत देने के अधिकार को भी छीनना चाहती थी। इसलिए वहाँ के लोगों ने गांधीजी को फिर रोक लिया। रोज़ सभाएँ होने लगीं और इसी समय नेटाल इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई। इसमें हिन्दु, मुसलमान, ईसाई सब सदस्य थे। दस हज़ार हस्ताक्षर कराकर इस क़ानून के विरोध में आवेदन-पत्र भेजा गया। इस आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि लार्ड रिपन ने भारतीयों से मत-दान छीनने का अधिकार रद्द कर दिया। इस समय गांधीजी की आयु २७ वर्ष की थी।

भारत-यात्रा

सन् १८९६ ई० में अपनी स्त्री और पुत्रों को दक्षिण अफ्रीका में ले जाने के ख़याल से वे भारत वापस आए। यहाँ ये लो० तिलक, गोपालकृष्ण गोखले आदि भारतीय नेताओं से मिले और वहाँ के अत्याचारों से परिचित किया। भारत में अख़बारों और सभाओं द्वारा काफ़ी आन्दोलन किया। इससे दक्षिण अफ्रीका के गोरे गांधीजी से और भी चिढ़ गये।

द० अफ्रीका में वापसी और गांधीजी पर भयंकर मार

गांधीजी को द० अफ्रीका से बुलावे पर बुलावे आ रहे थे। अतः वे अपनी पत्नी और पुत्रों के साथ नेटाल के लिए रवाना होगये। जब द० अफ्रीका के गोरों ने यह सुना कि

गांधीजी वापिस आ रहे हैं तो वे आग बबूला हो गये। जैसे ही जहाज़ किनारे पर लगा कि गोरों के झुंड के झुंड इकट्ठे हो गये और चिल्लाने लगे कि गांधीजी को वापस हिन्दुस्तान भेजो। हम यहां नहीं उतरने देंगे। उतरेंगे तो हम मार डालेंगे। पर गांधीजी ज़रा भी नहीं घबराये। उन्होंने जहाज़ से उतर कर अपनी पत्नी और बच्चों को एक मित्र के यहाँ भेज दिया और खुद एक अंग्रेज दोस्त की सलाह से उनके साथ पैदल रवाना हो गये। गोरों की भीड़ उन पर टूट पड़ी और उन्हें इतना मारा कि वे बेहोश होकर गिर गये। संयोगवश पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट की पत्नी उधर से आ निकलीं और उसने बीच में पड़कर उनकी रक्षा की। जब यह बात अखबारों में छपी, तो इंग्लैंड की सरकार ने नेटाल सरकार को तार दिया कि जिन लोगों ने गांधीजी पर हमला किया है, उन पर मुक़द्दमा चलाया जाय और उन्हें दण्ड दिया जाय, लेकिन दया के भंडार गांधीजी ने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने कहा, इन भाइयों को ग़लत बातें बताकर भड़काया गया है। वे निर-पराधी हैं। जब इनको असली बात मालूम होगी कि मैं यहां के गोरों का दुश्मन नहीं हूँ, तब ये स्वयं समझ जावेंगे, और ये अपने आप पछतायेंगे।

इस तरह गांधीजी ने एक नई बात संसार के सामने रक्खी जिससे सब लोग चकित रह गये। जिन गोरों ने गांधीजी को पीटा था, वे भी शर्मिन्दा हो गये और पश्चात्ताप करने लगे। अंग्रेज़ी अखबारों ने भी गांधीजी को निर्दोष बताया और हुल्लड़बाज़ों की निन्दा की।

आजीवन ब्रह्मचर्य

गांधीजी का अधिकांश समय अब सार्वजनिक कामों में लगने लगा। कुछ दिनों तक एक अस्पताल में इन्होंने सेवा-कार्य किया। यहाँ पर इन्हें तामिल, तेलगू तथा उत्तर भारत

की भाषायें सीखने का अवसर मिला। बोअर युद्ध (सन् १८९९) तथा जुलूविद्रोह (सन् १९०६) में स्वयं सेवक सेना क़ायम करके इन्होंने पीड़ितों की सेवा की। बिना भेद-भाव के पीड़ितों की सेवा करने से इनके शत्रु भी इनका आदर करने लगे। अब इन्हें यह अनुभव होने लगा कि सार्वजनिक सेवा करनेवाले लोक-सेवक के लिये संयम, नियम और ब्रह्मचर्य पालन आवश्यक है।। ब्रह्मचर्य पालन से आत्म-बल तथा शरीरबल तो प्राप्त होता ही है, पर कई घरेलू कठिनाइयां भी कम हो जाती हैं। इसलिए गांधीजी ने सन् १९०६ में आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया। इसका फल यह हुआ कि अब इन्होंने तपस्वी का जीवन अंगीकार कर लिया। खान-पान केवल शरीर-रक्षा के भाव से करते और शरीर को अधिकाधिक कष्ट सहन के योग्य बनाते। उन दिनों संयम की दृष्टि से इन्होंने दूध, दाल और नमक का भी त्याग कर दिया था। गांधीजी घर का अधिकांश काम अपने हाथों करने लगे, यहां तक कि अपने हाथ से कपड़े भी धोने शुरू कर दिये।

गांधीजी स्वयंसेवक व क्लर्क के रूप में

सन् १९०१ में गांधीजी पुनः भारत लौट आये। इस साल कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। गांधीजी कुछ दिनों पहले ही कलकत्ता पहुँच गये और स्वयं सेवकों में अपना नाम दर्ज कराकर कांग्रेस ऑफिस में क्लर्क का काम करने लगे। कुछ समय बाद वहाँ के मन्त्रीजी को जब इनका परिचय मिला कि ये तो दक्षिण अफ्रीका वाले गांधीजी हैं, तो बहुत शर्मिन्दा हुए पर गांधीजी को तो सेवा-कार्य प्रिय था। यहां तक कि स्वयंसेवकों को 'छोटे' काम करने में घृणा करते देख कांग्रेस में दो तीन वार बच्चों के पाखाने उठाकर भी गंदगी साफ़ की।

देश के लिए सर्वस्व समर्पण

भारत में गांधीजी तीन चार महीने ही रहे होंगे कि द० अफ्रीका से फिर बुलावा आगया और वे सन् १९०२ के अन्त में फिर अफ्रीका पहुँच गये। इस समय खदानों में काम करनेवाले भारतीय मज़दूरों में प्लेग फैला हुआ था। गांधीजी तत्काल इन लोगों की सेवा करने के लिये दौड़ पड़े और सैकड़ों भारतीयों की जानें बचाईं। सन् १९०४ में गांधीजी ने 'इंडियन ओपीनियन' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। यह पत्र हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती और तामिल इन चार भाषाओं में छपता था। इसी समय गांधीजी ने 'आरोग्य साधन' नामक पुस्तक लिखी।

अब गांधीजी में अपरिग्रह और समभाव की भावना उत्पन्न होने लगी। उन्होंने सोचा कि जब तक मनुष्य स्वयं अपने को ग़रीबी और दुःखों में नहीं झोंकता, तब तक उसे ग़रीबों के कष्टों के अनुभव नहीं हो सकते और न वह ग़रीबों का सच्चा सेवक ही बन सकता है। अपने इस विचार को कार्य रूप में परिणित करने के लिए सबसे पहले इन्होंने अपनी दस हज़ार रुपये की बीमा पालिसी छोड़ दी और अपने भाई को लिख दिया कि अब मैं तुम्हारे लिये कुछ भी संचय नहीं कर सकूंगा। अब जो कुछ होगा, सब भारत-वासियों के लिये होगा। इसी समय इन्होंने अपनी पाँच हज़ार पौंड वार्षिक आय की वक़ालत भी छोड़ दी और अपना सारा समय और शक्ति देशसेवा में अर्पण करदी।

सत्याग्रह की लड़ाई

दक्षिणी अफ्रीका की सरकार ने १२ सितम्बर सन् १९०७ को एक आर्डीनेंस जारी किया कि ट्रांसवाल में रहने वाले

भारतीयों को अपना नाम दर्ज़ कराना पड़ेगा । इसमें भारतीयों का बड़ा अपमान था । इसके विरोध में जोहन्सबर्ग में भारतीयों की बड़ी भारी सभा हुई और यह निश्चय हुआ कि वे सत्याग्रह करके इस काले क़ानून का विरोध करेंगे । गांधीजी को उन्होंने अपना नेता बनाया । नाम दर्ज कराने की आखरी तारीख ३० नवम्बर थी, पर ७ हज़ार लोगों में से केवल ५११ आदमियों ने ही अपने नाम दर्ज कराये । इस पर वहाँ के मजिस्ट्रेट ने गांधीजी तथा अन्य कई प्रमुख आदमियों को बुलाकर ४८ घंटे के अन्दर ट्रांसवाल छोड़ने की आज्ञा दे दी । आज्ञा न मानने पर ये सब लोग गिरफ्तार कर लिये गये । लेकिन थोड़े दिनों बाद ही जनरल स्मट्स और गाँधीजी में यह समझौता हो गया कि यदि अधिकांश भारतीय अपनी इच्छा से अपना नाम रजिस्टर करालेंगे तो यह क़ानून रद्द कर दिया जावेगा । इसके बाद कुछ दिनों तक शांति रही, परन्तु जब जनरल स्मट्स ने अपनी शर्त पूरी नहीं की तो फिर आन्दोलन शुरू हुआ । उन्हीं दिनों और भी कई ऐसे क़ानून सरकार ने बनाये जिनसे भारतीयों की उन्नति में बड़ी बाधा पड़ने लगी और उनका पगपग पर अपमान होने लगा । एक क़ानून तो ऐसा बना जिसके कारण खदानों में काम करनेवाले भारतीय मज़दूर को ३ पौंड का टैक्स देने के लिए मजबूर किया गया । इस पर वहाँ के मज़दूरों ने हड़ताल करदी । गांधीजी ने इसका संचालन किया । हड़ताली ३६ मील पैदल चलकर ट्रांसवाल की सीमा पर पहुँचे । यहाँ सरकार और खदानों के मालिकों ने सत्याग्रहियों पर बहुत ज़ुल्म किये । कितने ही घायल हो गये फिर भी सत्याग्रहियों ने हिम्मत नहीं छोड़ी । इस बार के सत्याग्रह में खास बात यह हुई कि स्त्रियों ने भी लड़ाई में भाग लिया और उनके साथ कस्तूरबा भी गिरफ्तार होगई । २०३७ पुरुष १२७ स्त्रियां और ५७ बच्चे गांधीजी के साथ थे । जेलें खूब

भर गई। सत्याग्रही लोग अपने को गिरफ्तार कराने पर तुल गये। सरकार घबरा गई और उसने गांधीजी को अपराधी मानकर दो वर्ष की कठोर सज़ा दे दी। जेल में सत्याग्रहियों को बड़े कष्ट दिये जाने लगे। गांधीजी को कुदाली से ज़मीन खोदने का काम दिया गया जिससे उनके हाथों में छाले पड़ गये और छालों में से पानी बहने लगा।

इन अत्याचारों का समाचार सुनकर भारतवर्ष में भी दक्षिणी अफ्रीका की सरकार के विरुद्ध आंदोलन शुरू होगया। उस समय के वाइसराय लार्ड हार्डिङ्ग ने भी इन अत्याचारों का ज़बरदस्त विरोध किया। इससे जनरल स्मट्स को वाध्य होकर सारे मामलों की जांच करने के लिए कमीशन की नियुक्ति करनी पड़ी और गाँधीजी तथा दूसरे सत्याग्रहियों को बिना शर्त छोड़ देना पड़ा। कमीशन ने १८ मार्च सन् १९१४ को अपनी रिपोर्ट पार्लियामेंट में पेश की और हिन्दुस्थानियों पर से सारे जुल्मी क़ानूनों को उठा लेने की सिफ़ारिश की। पार्लियामेंट ने भी इस सिफ़ारिश को पास कर दिया। इस तरह दक्षिणी अफ्रीका का सत्याग्रह विजयी हुआ और गांधीजी अपने काम में पूरी तरह सफल हुए।

भारत में आगमन और पहली सफलता

दक्षिणी अफ्रीका का काम पूरा करके गांधीजी भारत लौट आये। जहाज़ से जब गांधीजी बम्बई में उतरे तो वहाँ की जनता ने उनका बड़ा शानदार स्वागत किया। इसके बाद वे गोखलेजी से मिलने को पूना चले गये। पूना से जब गांधीजी राजकोट जा रहे थे, तब उनको मालूम हुआ कि बीरमगांव की जनता ज़कात सम्बन्धी मामले में बड़े कष्ट में है। गांधीजी इस मामले में लाट साहब से मिले और बीरमगांव की जनता की सब तकलीफ दूर करवा दीं। भारत

में गांधीजी का यह पहला ही काम था जिसमें उन्हें आश्चर्य-जनक सफलता मिली ।

सत्याग्रह आश्रम की स्थापना

अहमदाबाद के निकट कोचरब नामक गांव में गांधीजी ने ता० २५ मई सन् १९१५ को इस आश्रम की स्थापना की । शुरू शुरू में इसमें केवल २५ आदमी थे । इसमें सिर्फ़ वे ही लोग रह सकते थे जो सच्चाई से अपना जीवन देश-सेवा में लगाना चाहते थे । यहां पर रहने वालों के लिए सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्पृश्यता-निवारण, शारीरिक श्रम आदि नियमों का पालन करना आवश्यक था । भंगी भी यदि इन नियमों का पालन कर सके तो यहां बिना भेदभाव के रह सकता था । मनुष्यमात्र के लिये यह आश्रम खुला हुआ था । यहाँ पर रहने वाले सब लोग एक ही भोजनशाला में भोजन करते थे और इस तरह रहते थे जैसे एक कुटुम्ब के लोग रहते हैं । गांधीजी का मत था कि कोई आदमी भंगी या चमार होने से छोटा नहीं होता । छोटा तो वह है जो चोरी करता है, झूँठ बोलता है और दूसरों को धोखा देता है । अछूत बालकों को वे अपने पुत्र के समान ही प्यार करते थे ।

जिन लोगों ने शुरू शुरू में आश्रम-स्थापना के लिये गांधीजी को आर्थिक सहायता दी थी वे कुछ कट्टर धर्मवादी थे । उनका ख्याल था कि आश्रम में अछूतों का शायद ही प्रवेश हो पर जब गांधीजी ने एक अछूत परिवार को अपने आश्रम में दाखिल कर लिया तो इन लोगों ने अपनी सहायता बन्द कर देने की सूचना दे दी । जब गांधीजी को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने कहा कि हम धन के कारण अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ सकते । हम लोग अछूतों के मोहल्लों में जा बसेंगे और मेहनत मज़दूरी करके जीवन-निर्वाह

करेंगे और देश-सेवा करेंगे।

जहाँ सचाई होती है, वहाँ भगवान् भी मदद करता है। तीन चार दिन बाद ही एक ऐसा अवसर आया कि एक सज्जन मोटर में बैठकर आश्रम में आये। बाहर से ही मोटर का भोंपू बजाया और गांधीजी को बुलाया। उन्होंने गांधीजी से कहा कि मैं आश्रम को कुछ सहायता देना चाहता हूँ। क्या आप स्वीकार करेंगे? गांधीजी ने कहा, अवश्य स्वीकार करूँगा। वे सेठजी दूसरे दिन आये और गांधीजी को बुलाकर १३ हज़ार के नोट दे गए। इस तरह एक वर्ष का खर्चा आगया।

चम्पारन में सत्याग्रह

सन् १९१६ ई० में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। गाँधीजी भी इसमें शामिल हुए। यहाँ पर श्री जिन्ना और युवक जवाहरलालजी से पहली मुलाक़ात हुई। यहां उन्हें मालूम हुआ कि बिहार में चम्पारन ज़िले के किसानों पर वहाँ के गोरे ज़मींदार बहुत ज़ुल्म कर रहे हैं। इसलिये कांग्रेस अधिवेशन के बाद ही वे बिहार में दौरा करने के लिए रवाना होगए। पटना में श्री राजेन्द्र बाबू तथा आचार्य कृपलानी से मुलाक़ात हुई और इनसे चम्पारन के किसानों की दुःख की कहानी मालूम हुई। गांधीजी का हृदय यह सब देखकर विचलित हो उठा और उन्होंने गांव २ घूमकर वहाँ के किसानों को संगठित कर ज़ोरों से आंदोलन छेड़ दिया। अन्त में शान्तिपूर्ण सत्याग्रह द्वारा कुछ ही दिनों में गांधीजी को सफलता मिल गई और किसानों के ऊपर जो ज़ुल्मी कानून सौ वर्ष से लगे हुए थे, वे सब रद्द कर दिए गये।

गांधीजी मज़दूरों के बीच में

फरवरी १९१८ में अहमदाबाद के मिलमालिकों और मज़दूरों में वेतन-वृद्धि के बारे में झगड़ा होगया। गांधीजी

६

ने मज़दूरों का पक्ष लिया और हड़ताल की ये शर्तें समझाईं :– (१) किसी हालत में शान्ति भंग न करना। (२) जो काम पर जाना चाहें, उनके साथ किसी किस्म की ज़बरदस्ती नहीं करना। (३) मज़दूर भिक्षा माँगकर न खावें। (४) हड़ताल चाहे जब तक चले, दृढ़ता रखें और जब खाने को पास में पैसा न रहे तो दूसरी मज़दूरी करके पेट पालें।

इसी हड़ताल में श्री वल्लभभाई पटेल से गांधीजी का बहुत अच्छी तरह परिचय होगया। रोज़ सभाएँ होतीं, जुलूस निकलते। दो सप्ताह बाद मज़दूरों में कुछ कमज़ोरी आने लगी। काम पर जानेवाले मज़दूरों से छेड़छाड़ भी हुई। इससे दुखित हो गांधीजी ने उपवास शुरू कर दिया। उस दिन हड़ताल का १८ वाँ दिन था। अन्त में समझौता हो गया। मज़दूरों को मिठाई बाँटी गई। मिल-मालिक और मज़दूर फिर परस्पर प्रेमसूत्र में बंध गये।

खेड़ा में सत्याग्रह

सन् १९१८ में गुजरात प्रांत के खेड़ा ज़िले की फसल मारी गई। गाँधीजी गाँव गाँव घूमे और वहाँ के किसानों की हालत देखी और सरकार से प्रार्थना की कि इस साल किसानों का लगान माफ़ कर दिया जावे, लेकिन कोई सुनाई नहीं हुई। अन्त में महात्माजी ने किसानों से कहा लगान मत दो, चाहें कितना ही दुःख भोगना पड़े। २३०० किसानों ने प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो हम लगान न देंगे। सरकार ने काफ़ी सख्ती की पर लगान वसूल न हुआ। अन्त में सत्याग्रह की जीत हुई।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

म० गांधीजी हिन्दी के बड़े पक्षपाती थे। सन् १९१८ में हि० सा० सम्मेलन का जलसा इन्दौर में हुआ। गाँधीजी सम्मेलन के सभापति चुने गये। तब से ही सम्मेलन में नई

जान आ गई। इसके बाद से ही मद्रास प्रांत में हिन्दी का प्रचार शुरू हुआ। इस काम के लिए गाँधीजी ने पचास हज़ार रुपया इकट्ठा किया और अपने सुपुत्र श्री देवीदासजी को हिन्दी-प्रचार के लिए वहाँ भेजा। अब तो मद्रास में हिन्दी का इतना प्रचार हो गया कि द० भा० हिन्दी प्रचार सभा नामक एक बड़ी संस्था क़ायम हो गई है।

रौलेट एक्ट

सन् १९१८ में अंग्रेजों और जर्मनों की लड़ाई समाप्त हुई। भारतवासियों को अब यह आशा हुई कि इस लड़ाई में हमने धन और जन से अंग्रेजों की जो सेवा की है, उसके कारण अंग्रेज लोग हमें बहुत कुछ हक़ दे देंगे। लेकिन सरकार ने रौलेट एक्ट बनाकर भारतीय भावनाओं को कुचलने का निश्चय कर लिया। इसका सम्पूर्ण भारत में एक स्वर से विरोध हुआ। गांधीजी इस समय कुछ अस्वस्थ थे। आयु भी इनकी ५० वर्ष की हो गई थी। पर इस एक्ट को देखकर वे चुप न रह सके। इन्होंने सरदार वल्लभभाई पटेल, श्रीमती सरोजनी नायडू आदि से परामर्श कर सत्याग्रह करने की योजना बनाई। इसका केन्द्र बम्बई में रक्खा गया। रौलेट एक्ट के विरोध में ६ अप्रेल १९१९ को आम हड़ताल की घोषणा की गई। सारे देश में ज़ोरों से हड़ताल हुई। इसमें हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सब ही शामिल थे। यह एकता का दृश्य देखने योग्य था। ता० ७ को महात्माजी महादेव भाई के साथ अमृतसर जाते हुए रास्ते में गिरफ्तार कर लिये गये। यह सुनकर जनता क्रुद्ध हो उठी और जगह जगह उपद्रव हो गया। सरकार ने इस समय दिल खोल कर दमन किया। जनता के ऊपर खुलकर गोलियाँ चलाई गईं।

पंजाब हत्याकाण्ड

पंजाब में जो दंगे हुए उसके कारण सरकार ने फ़ौजी क़ानून

जारी कर दिया। अमृतसर के जलियांवाले बाग़ की सभा में अनेक शांत निर्दोष व्यक्ति जनरल डायर की गोलियों से भून दिये गये। लोगों को चाबुक से मार मार करके उन्हें पेट के बल चलने को मजबूर किया। स्त्रियों पर भी अत्याचार किये गये। इस क़त्ले आम से ऐसा मालूम होता था कि पंजाब पर जंगली शासन उतर आया है। फ़ौजी कानून के अनुसार हज़ारों पंजाबियों को जेल में डाल दिया गया। दमन ज़ोरों से हो रहा था, पर जनता की दृढ़ता से सरकार की यह नीति, ज़्यादा दिन तक क़ायम न रह सकी। फलतः दिसम्बर के पहले बहुत से कैदी छोड़ दिये गये और नवीन सुधारों की घोषणा प्रकाशित हुई।

असहयोग आन्दोलन

यद्यपि ये सुधार असंतोषजनक थे फिर भी गाँधीजी ने इनका इस विश्वास पर समर्थन किया कि शायद अब ब्रिटिश सरकार का हृदय परिवर्तन हो गया है और आगे चल कर स्वराज्य की झलक दिखाई देने लगेगी, पर सरकार के कारनामों से थोड़े ही दिन में उनका यह विश्वास उठ गया। अब कांग्रेस का नया संगठन किया गया। सितम्बर १९२० की कलकत्ता की विशेष कांग्रेस में गाँधीजीने असहयोग आन्दोलन का कार्य-क्रम पेश किया जो पास हो गया। यहीं से गाँधीजी और कांग्रेस का नाम एक हो गया, इसी समय से आत्म-शुद्धि के लिए गाँधीजी ने प्रतिदिन आधा घण्टा सूत कातने का व्रत लिया। तिरंगे झंडे की भी इसी साल सृष्टि हुई। गाँधीजी ने वर्ष भर में स्वराज्य की प्रतिज्ञा की और प्रचंड आन्दोलन शुरू कर दिया। इसमें हिन्दू, मुसलमान बिना भेदभाव शरीक हुए। मद्य-निषेध, खद्दर प्रचार, अस्पृश्यता-निवारण, अदालतों और सरकारी शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार इस आन्दोलन का ध्येय था। इससे भारत में वह तूफान आया, वह सामूहिक जागृति हुई जो भारत के इतिहास में बिल्कुल नई और आश्चर्य जनक थी। अनेक वकीलों ने

वकालत छोड़ दी, विद्यार्थियों ने स्कूल और कालेजों को छोड़ा, कौंसिलों तथा अदालतों का जबरदस्त बहिष्कार हुआ। लोगों ने अपनी पदवियाँ लौटा दीं। जगह जगह पर विलायती कपड़ों की होली जलाई गई। प्रयाग के प्रसिद्ध वकील त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू तथा बंगाल के देशबन्धु चितरंजनदास भी अपनी वकालतें छोड़ कर महात्माजी के कार्यक्रम में पूरी तरह से लग गये। सेठ जमनालालजी बजाज जैसे धनी भी महात्माजी के झंडे के नीचे आये। भारतीयों में इस आन्दोलन ने गौरव और अभिमान की भावना भरदी। उनमें निर्भयता आ गई।

चौरीचौरा काण्ड

इस बार के आन्दोलन में ३० हज़ार से अधिक आदमी जेल जा चुके थे। कुछ नेताओं ने समझौता कराने की चेष्टा की पर कोई परिणाम न निकला। अन्त में गाँधीजी ने बारदोली में सत्याग्रह शुरू किया और १४ फरवरी को चौरीचौरा का काण्ड हो गया। इसमें सत्याग्रहियों ने पुलिस दरोगा और सिपाहियों को थाने में जला दिया, इससे गाँधीजी को बड़ा दुःख हुआ और प्रायश्चित स्वरूप पाँच दिनों का अनशन किया तथा आन्दोलन को स्थगित कर दिया।

गांधीजी को छः वर्ष की सज़ा

कुछ दिनों के बाद ही सरकार ने गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया और उन पर राजद्रोह का मुकद्दमा चलाकर छः वर्ष की सज़ा देदी और यरवदा जेल में भेज दिया। इसी जेल में महात्माजी ने अपनी आत्मकथा गुजराती भाषा में लिखी। सन् १९२४ में जेल में गाँधीजी के पेट में अपेण्डीसाइटीज़ (विषैली गांठ) की व्याधि हो गई। सरकार को भय हुआ कि कहीं इसके कारण गाँधीजी जेल ही में न मर जावें। इसलिए सरकार ने उन्हें बिना सज़ा पूरी हुए ही छोड़ दिया।

कांग्रेस के अध्यक्ष

दिसम्बर १९२४ में गाँधीजी बेलगाँव कांग्रेस के अध्यक्ष चुने

गये काँग्रेस में हिन्दू मुस्लिम एकता का सवाल तय हुआ और कौंसिलों में जाने के लिए गाँधी-दास का समझौता हुआ। विदेशी चीज़ों का बहिष्कार, अछूतोद्धार व खादी प्रचार का काम इसी कांग्रेस में तय हुआ। अ० भा० चर्खासंघ संस्था भी स्थापित हुई, जिसके द्वारा हज़ारों ग़रीब औरतों को कताई की मज़दूरी मिली।

१९३० का महान् सत्याग्रह आन्दोलन

कांग्रेस ने सन् १९३० में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास किया और इसके लिए आन्दोलन का समस्त अधिकार गाँधीजी को सौंप दिया। गाँधीजी ने सरकार को अपनी ११ शर्तें लिखकर भेजदीं और जब सरकार ने उनको नहीं माना तो उन्होंने आन्दोलन शुरू करने की घोषणा कर दी। इस बार कार्य-क्रम नमक क़ानून तोड़ने का था। गाँधीजी अपने चुने हुए ७६ आदमियों को लेकर १२ मार्च को डांडी की यात्रा के लिए निकल पड़े। गांधीजी की प्रतिज्ञा थी "नमक क़ानून तोडेंगे या मेरा शरीर समुद्र में तैरता नज़र आवेगा"। इस दृढ़ निश्चय से जैसे जैसे ये आगे बढ़ते गये, हज़ारों आदमी इनके साथ शामिल हो गये। अब तो सरकार की आंखें खुलीं और गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी तरह श्री० वल्लभभाई पटेल, पं० जवाहरलाल नेहरू, सेठ जमनालाल बजाज आदि सब नेताओं को जेल में बन्द कर दिया। इससे सारे देश में हलचल मच गई।

गोलमेज़ कान्फ्रेंस

पहली गोलमेज़ कान्फ्रेन्स में कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। उसके सभी नेता उस समय जेल में थे। किन्तु बाद में जब भारतीय प्रतिनिधि इंगलैंड से लौट आये, तब लार्ड इरविन ने कांग्रेसी नेताओं से समझौते की बातचीत शुरू की। अन्त में ४ मार्च १९३१ को गांधी-इरविन पैक्ट नामक समझौता होगया, जिसके

अनुसार सभी राजबन्दी छोड़ दिये गये । इसके बाद गांधीजी कांग्रेस के प्रतिनिधि की हैसियत से दूसरी गोलमेज़ कान्फ्रेन्स में शरीक होने के लिये विलायत गये और वहाँ उन्होंने कान्फ्रेन्स में साफ़ साफ़ कह दिया कि यदि सरकार राजीखुशी से हिन्दुस्तान को पूर्ण स्वराज्य नहीं देगी तो कांग्रेस का आन्दोलन जारी रहेगा ।

गांधीजी की गिरफ्तारी

गोलमेज़ कान्फ्रेन्स से लौटकर गांधीजी हिन्दुस्तान में आये तो उन्होंने देखा कि सरकार का दमन-चक्र बहुत ज़ोरों से चल रहा है । सब नेतागण जेल में पड़े हैं । गांधीजी हैरान थे कि एक तरफ़ तो सरकार समझौते की कोशिश कर रही है और दूसरी ओर घोर दमन हो रहा है इसलिये उन्होंने उस समय के वाइसराय लार्ड विलिंगटन को एक लम्बा पत्र लिखा और इन सब बातों का जवाब मांगा और यह भी लिख दिया कि यदि इसका संतोषजनक निपटारा नहीं किया गया तो लड़ाई की आग भड़केगी । वाइसराय महोदय ने इस पत्र को आपत्तिजनक समझा और गांधीजी को फिर गिरफ्तार कर यरवदा जेल भेज दिया ।

हरिजन भाइयों के लिये उपवास

सन् १९३२ में गोलमेज कान्फ्रेंस में होने वाले निर्णय के बारे में भारतमंत्री के नये शासन विधान का घोषणा-पत्र प्रकाशित हुआ । इसमें अछूतों को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिया गया । सरकार का यह फ़ैसला एक बड़ी भारी चाल थी । यदि यह कामयाब हो जाती तो हिन्दू समाज बड़े संकट में पड़ जाता । अछूत भाई हिन्दू समाज से अलग हो जाते और हिन्दू समाज और भी निर्बल हो जाता । गांधीजी में १८ अगस्त को प्रधान मंत्री को लिखा कि जब तक सरकार अपने इस निश्चय को नहीं बदलेगी, तब तक वे अन्न ग्रहण नहीं

करेंगे और यह आमरण अनशन २० सितम्बर को शुरू होगा। पर ब्रिटिश सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया। इसलिये गाँधीजी ने अपना अनशन शुरू कर दिया। देश के तमाम नेता यरवदा जेल में पहुंचे और महात्माजी से उपवास न करने की प्रार्थना की, पर वे अपने प्रण पर डटे रहे। इस बीच एक मात्र उपाय यही था कि उच्च वर्ग के हिन्दुओं एवं अछूतों के विभिन्न दलों के नेताओं में महात्माजी के संतोषलायक समझौता हो जाय क्योंकि सरकार ने अपना निर्णय देते समय यह कहा था कि यह निर्णय तब तक के लिए है, जबतक तत् सम्बन्धी जातियों या दलों के नेता स्वयं कोई समझौता न करलें। बड़ी दौड़धूप के बाद पूना में सवर्ण हिन्दुओं और अछूत नेताओं के बीच एक समझौता हुआ। सरकार ने भी इस समझौते को मान लिया और अपना निर्णय बदल दिया। इस तरह गांधीजी का यह उपवास भी सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

इसके बाद अस्पृश्यता-निवारण करने का आन्दोलन करने के लिए गांधीजी को सब प्रकार की सुविधाएँ सरकार ने जेल में दे दीं और जेल के भीतर से ही वे आन्दोलन चलाने लगे। उनके उपवास के समय बम्बई में हिन्दू नेताओं की एक सभा हुई थी और उसके निश्चय के अनुसार श्री सेठ घनश्यामदास बिड़ला की अध्यक्षता में भारतीय अस्पृश्यता-निवारण-संघ (जिसका नाम बदल कर पीछे हरिजन-सेवक-संघ कर दिया गया) स्थापित हुआ। सैंकड़ों मन्दिर और कुएं हरिजनों के लिये खोल दिये गये। जगह जगह उनके लिए स्कूल खोले गये और उनकी गन्दी बस्तियों के सुधार की योजनाएं बनाई गईं। जो काम युगों में नहीं हो सकता था, वह महीनों में हो गया।

यह सब कुछ होते हुए भी अभी सवर्ण हिन्दुओं के हृदय हरिजनों के प्रति अन्दर से साफ़ नहीं हुए थे। इसलिये गांधीजी

ने फिर ८ मई १९३३ से २९ मई तक का २१ दिन का उपवास किया ताकि सवर्ण हिन्दुओं का ध्यान अपने कर्त्तव्य की ओर खींचा जाय। इस बार उपवास के १९ वें दिन गांधीजी की हालत बड़ी चिन्ताजनक होगई, इसलिये सरकार ने विवश होकर उन्हें जेल से मुक्त कर दिया।

कांग्रेस के अधिकांश नेताओं ने १९३५ के शासन सुधारों को स्वीकार कर लिया। १९३४ में बम्बई कांग्रेस के बाद गांधीजी ने कांग्रेस से अवकाश ले लिया और अपना आश्रम सेवाग्राम में बनाया और वहाँ पर रचनात्मक कार्य-क्रम में लग गये। इस तरह कई वर्ष बीत गये।

१९३७ के चुनाव में कांग्रेस केन्द्रीय और प्रान्तीय धारा सभा में विजयी हुई। उसने ११ में से ८ प्रान्तों में मंत्रि-मंडल बनाये। गांधीजी की प्रेरणा से इन मंत्रि-मंडलों ने शराबबन्दी, किसानों की दशा का सुधार और हरिजन-उद्धार के कार्य हाथ में लिये।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

१९३९ में यूरोप में द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया और बिना सहमति लिये ब्रिटेन ने भारत को भी शामिल कर लिया। कांग्रेस मंत्रिमण्डलों ने इस बात पर त्यागपत्र दे दिया। १९४० में मौ० आज़ाद की अध्यक्षता में रामगढ़ कांग्रेस ने युद्ध में सहायता न देने का निर्णय किया। गांधीजी और वाइसराय में फिर बातचीत हुई परन्तु अनुकूल समझौता न होने से गांधीजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ कर दिया। श्री विनोबा भावे पहले सत्याग्रही थे। इन्होंने युद्धविरोधी नारे लगाये और गिरफ्तार होगये। इस तरह हज़ारों आदमी इस सत्याग्रह में जेलों में चले गये।

'भारत छोड़ो' प्रस्ताव

ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को सन्तुष्ट करने के लिए

एक शासन सुधार योजना लेकर सर स्टेफर्ड क्रिप्स को हिन्दुस्तान में भेजा। गांधीजी ने इस योजना को बेकाम बताकर अस्वीकार कर दिया। इसके बाद गाँधीजी ने शान्तिपूर्ण ढङ्ग से देश की समस्या को हल करने की अनेक चेष्टाएँ कीं पर जब कहीं कुछ सुनवाई नहीं हुई तो उन्होंने ब्रिटिश सरकार के सामने ८ अगस्त १९४२ को 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव रक्खा। इस प्रस्ताव का एलान करना था कि सरकार ने एक साथ सब नेताओं को गिरफ्तार कर जेलों में भेज दिया। ता० ९ को सारे भारत में चुन चुन कर सब कार्यकर्ता एक साथ गिरफ्तार कर लिये गये। इससे सारे देश में तहलका मच गया। जहाँ तहाँ सरकारी इमारतों, रेल, तार आदि को जनता तोड़ने फोड़ने लगी। सरकार ने भी पूरे ज़ोरसे दमन शुरू कर दिया। यह सिलसिला लगभग एक साल तक चलता रहा।

जेल में महादेव भाई और कस्तूरबा की मृत्यु

महात्मा गांधी आगाखां महल (पूना) में नजरबन्द किए गए थे। १५ अगस्त को एकाएक हृदयगति बन्द हो जाने से गांधीजी के प्रिय शिष्य तथा सुयोग्य सेक्रेटरी श्री महादेवभाई की जेल में मृत्यु हो गई। दाह-संस्कार भी जेल में ही हुआ। इसी तरह राष्ट्रमाता कस्तूरबा २२ फरवरी सन् ४३ को शिवरात्रि के दिन स्वर्ग सिधार गईं। वे काफी दिन बीमार रहीं, पर सरकार ने उन्हें जेल से नहीं छोड़ा। ५ मार्च को श्री मालवीयजी की प्रेरणा से भारत में कस्तूरबा दिवस् मनाया गया।

गांधीजी की रिहाई और समझौते के प्रयत्न

जेल में गांधीजी का स्वास्थ्य एकदम बिगड़ गया। इससे सारे देश में चिन्ता छा गई और उनकी रिहाई के लिए व्यापक आन्दोलन हुआ। आखिर सरकार ने ता० ६ मई को उन्हें जेल से छोड़ दिया। स्वास्थ्य ठीक होने पर गांधीजी फिर काम में जुट पड़े। वे श्री जिन्ना से मिले और हिन्दु-मुस्लिम समझौते की

चर्चा शुरू की, पर कोई फल नहीं निकला। इसके बाद १९४५ में प्रसिद्ध 'शिमला कान्फ्रेंस' हुई पर वहाँ भी कोई समझौता न हो सका।

कुछ दिनों के बाद ब्रिटेन का आम-चुनाव हुआ और उसमें मज़दूर दल की जीत हुई। मज़दूर दल ने कांग्रेस पर से सरकारी प्रतिबन्ध उठा लिया और सब नेताओं को छोड़ दिया और भारत को पूर्ण स्वराज्य देने की घोषणा कर दी।

सांप्रदायिक झगड़े तथा एकता के लिए प्रयत्न

मार्च १९४६ में इंगलैंड से मन्त्रि-मिशन भारत आया और यहाँ के नेताओं से सलाह कर भावी शासन की रूपरेखा तैय्यार की तथा अस्थाई सरकार की स्थापना की। परन्तु मि० जिन्ना और उनकी लीग ने इसमें भाग नहीं लिया तथा इसके विरोध में इन्होंने १६ अगस्त ४६ को 'डाइरेक्ट एक्शन डे' मनाने की घोषणा की। कलकत्ते में भीषण दङ्गा हुआ। हज़ारों हिन्दू मारे गये और अरबों रुपयों का नुकसान हुआ। इसी तरह नोआखाली में उपद्रव हुआ। यहाँ पर भी हिन्दुओं को कत्ल किया गया, स्त्रियों पर अत्याचार हुए और हिन्दुओं के घर बरबाद कर दिये गये। इसकी प्रतिक्रिया बिहार और युक्तप्रान्त में हुई। यहाँ पर मुसलमान मारे गये और उनके घर जला दिये गये।

देश की इस अराजकता और भाई-भाई की खूंरेज़ी देखकर गांधीजी का दयालु हृदय दहल उठा। उन्होंने शान्ति-स्थापना के लिए ३१ दिसम्बर १९४६ को नोआखाली के गाँवों की पैदल यात्रा की। घर घर जाकर लोगों को समझाया और दुखियों को सान्त्वना दी। इनके प्रभाव से नोआखाली में फिर से शान्ति होगई और मुसलमानों ने अपना अपराध स्वीकार कर अपना वैरभाव छोड़ दिया। इसके बाद वे बिहार में आये और यहाँ सरहदी गाँधी अब्दुलगफ्फारखां के

साथ बिहार के गांवों में घूम-घूम कर शान्ति स्थापित की। इससे बिहार का उपद्रव भी एक सप्ताह में शान्त हो गया।

स्वतंत्रता का मंगल प्रभात

२० फरवरी १९४७ को ब्रिटिश सरकार ने जून १९४८ से भारतवर्ष को स्वाधीन करने की घोषणा की। इसके बाद प्रश्न यह उठा कि राज्य किसको सौंपा जाय। पहले तो गांधीजी और कांग्रेस के अन्य नेता देश के बंटवारे में सख्त विरोधी थे, पर जब उन्होंने (नेताओं ने) देखा कि मि० जिन्ना और मुस्लिमलीग शासन-काल में भी सहयोग और सद्भाव से मिल-जुल कर काम करने के लिए तैय्यार नहीं हैं और देश के लोग भी रोज़ाना होने वाले हिन्दू मुस्लिम झगड़ों से परेशान हैं, तब उन्होंने (नेताओं ने) बंटवारे की बात मान ली। इस तरह देश पाकिस्तान और हिन्द दो टुकड़ों में बाँट दिया गया पर गांधीजी को इससे बहुत दुःख हुआ।

१५ अगस्त सन् १९४७ को एक साथ ही हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों राज्यों को अंग्रेज़ सरकार ने राज्य-शासन सौंप दिया। स्वतंत्रता देवी के आगमन से एक ओर तो देश में खुशियाँ मनाई जा रही थीं; दूसरी ओर पाकिस्तान में तथा पश्चिमी पंजाब में हिन्दुओं का क़त्लेआम हो रहा था। ये उपद्रव सारे पंजाब में हुए। इनमें लगभग दो लाख आदमी मारे गये और लगभग ५५ लाख शरणार्थी होकर पाकिस्तान से भारत में आये। उनका माल असबाब वहीं रह गया। इसी तरह सिंध से भी हिन्दू भाग-भाग कर हिन्दुस्तान मे आगये। इसका असर हिन्दुस्तान में भी हुआ और यहाँ पर भी कलकत्ता और देहली आदि स्थानों में मुसलमान मारे गये और उनकी संपत्ति लूट ली गई।

इन सब घटनाओं से गांधीजी के हृदय को बड़ी चोट लगी। उन्होंने फिर अपनी शक्तिशाली आवाज़ उठाकर

हिन्दुओं और सिक्खों को शान्त रहने की अपील की। कलकत्ते आदि स्थानों का दौरा किया और वहाँ शांति स्थापित की।

देहली में आगमन

कलकत्ते का कार्य समाप्त कर महात्मा गांधीजी ७ सितम्बर १९४७ को देहली पहुँचे। यहां दंगे का बहुत ज़ोर था। यहाँ आकर गांधीजी ने शान्ति स्थापित करने का पूरा प्रयत्न किया। ये बिड़ला भवन में ठहरे थे और रोज़ाना शाम को प्रार्थना में देश की हालत बताकर जनता को कल्याणमार्ग दिखाते और साम्प्रदायिकता के ज़हर को निकाल फेंककर सबके साथ न्याय और प्रेम का व्यवहार करने की प्रेरणा देते। इस प्रकार लगातार कई महीनों तक दिल्ली-निवासियों को उनके कर्त्तव्य का ध्यान दिलाते रहे फिर भी अन्दर ही अन्दर साम्प्रदायिकता की आग थोड़ी बहुत सुलगती रही। यह सब देख कर गांधीजी ने १३ जनवरी से आमरण उपवास करने की घोषणा करदी। इससे देश भर में चिन्ता फैल गई। दिल्ली के लोगों ने शान्ति कायम रखने का आश्वासन देकर गांधीजी का ता० १८ को उपवास तुड़वाया।

राष्ट्रपिता का बलिदान

२० जनवरी को प्रार्थना-सभा में महात्माजी पर एक बम फेंका गया, पर उससे कोई दुर्घटना नहीं हुई। इसके बाद ता० ३० जनवरी की बात है कि महात्माजी सायंकाल की प्रार्थना के लिये प्रार्थना-मैदान में जारहे थे। इतने ही में एक पथ-भ्रष्ट युवक उनको नमस्कार करने का बहाना कर उनके समीप आया और उनपर गोलियां चलादीं। उसकी तीन गोलियां महात्माजी की छाती में लगीं जिससे वे 'हे राम' कहते हुए गिर पड़े और सायं ५-४० पर स्वर्ग सिधार गये। यद्यपि अब महात्माजी हमारे बीच में नहीं हैं पर उनकी

दिव्यमूर्ति का वह दिव्यप्रकाश कभी बुझने वाला नहीं है वह दिव्य प्रकाश सदा हमारे पथ को आलोकित करके हमें आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा करता रहेगा।

गांधीजी की दिनचर्या

गांधीजी महापुरुष कैसे हुए, इसका रहस्य यह है कि उन्होंने अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग किया। आलस्य तो उनके पास कभी फटकता भी न था। उनका सब काम नियमित होता था। वे काम ऐसे ढंग से करते जिससे दिन बीतते-बीतते उस दिन के प्रायः सब काम पूरे हो जाते थे। वे अपने साथ हमेशा एक जेबघड़ी रखते थे। घड़ी की सूई पर दृष्टि रख कर वे काम करते। किसी को मिलने का समय देते तो समय होते ही घड़ी दिखा देते।

वे प्रातःकाल चार बजे उठ जाते थे। कभी-कभी लिखने पढ़ने का विशेष काम होता तो दो या तीन बजे भी उठ जाते। उठकर शौचादि नित्य कर्मों से निर्वृत्त होकर ५ से ५॥ बजे तक आश्रमवासियों के साथ आध घंटे तक प्रार्थना करते थे। इसके बाद कुछ देर तक काम करके या विश्राम करके हलका सा नाश्ता करते थे। नाश्ते में ज़्यादातर बकरी का दूध, चोकर की मोटी रोटी, नारंगी का रस, गुड़ आदि चीज़ों में से कुछ चीज़ें लेते थे। नाश्ता करने के बाद वे घूमने निकल जाते और तीन चार मील का चक्कर बड़ी तेज़ी से लगाते। कभी-कभी तो उनके कई साथी पीछे रह जाते। रास्ते में वे कई लोगों से बातचीत करके उनके काम भी निपटा देते थे। कभी-कभी बच्चे भी उनके साथ हो लेते। उनके साथ भी वे मनोरंजन करते जाते थे। युवावस्था में तो वे काम पड़ने पर चालीस चालीस मील तक प्रतिदिन चल चुके थे। बापूजी ने अन्तिम समय तक टहलने की आदत नहीं छोड़ी। यदि कभी बहुत वर्षा हुई या सर्दी ज़्यादा पड़ी

तो वे अपने बरामदे में ही घंटे भर तक घूम लेते । वे कहते थे कि भोजन न मिले तो कोई बात नहीं पर टहलना न मिले तो बीमारी आई समझो । घूमकर आने के बाद वे थोड़ा सा विश्राम कर आश्रम के आवश्यक कार्यों में जैसे आश्रम की सफ़ाई, पाखाना साफ़ करना, कपड़े धोना, खाना पकाना, बर्तन मांजना, साग काटना, आदि कामों में सहयोग देते । फिर ८।। बजे लिखते पढ़ते या आये हुए लोगों से मुलाक़ात करते । ग़रीब से ग़रीब आदमी भी उनसे मिल सकता था ।

ठीक ९।। बजे वे अपने शरीर की तेलमालिश में लग जाते । वे सरसों के तेल से मालिश कराते थे । इसमें नींबू का रस भी डाल देते थे । मालिश कराने बाद क़रीब आध घंटे तक मामूली गरम पानी के टब में लेटे रहकर शरीर को खूब मलते और बाद में गरम पानी से स्नान करते और मोटे गमछे से शरीर को अच्छी तरह रगड़-रगड़ कर पोंछते थे, जिससे शरीर बिल्कुल स्वच्छ हो जाय । साबुन का वे कभी व्यवहार नहीं करते थे । टब में लेटे लेटे ही वे बिना कांच के ही सेफ्टी रेजर से रोज़ अपनी हजामत बना लिया करते थे ।

स्नानादि से निर्वृत्त होकर वे ११ बजे सभी आश्रमवासियों के साथ भोजन करने बैठ जाते थे । उनका भोजन बहुत सादा और थोड़ा होता था पर उसमें बराबर परिवर्तन होता रहता था । एक दिन में पांच से अधिक चीज़ें वे नहीं खाते थे । भोजन खूब चबाचबा कर खाते थे । बकरी के दूध में चोकर समेत हाथ का पिसा हुआ आटा मिलाकर डबल रोटी सी बनाई जाती थी । यह रोटी तथा बिना मिर्च मसाले की ३ से ४ छटांक तक उबाली हुई साग, थोड़ीसी कच्ची हरी तरकारी, यही उनका भोजन था । उबला हुआ खजूर, सेब या आम भी खा लेते थे । चाय तो वे कभी पीते ही न थे ।

शहद और सोड़ा बाईकारबोनेट के साथ थोड़ा सा गरम जल वे पी लेते थे ।

भोजन के पश्चात् वे थोड़ा सा आराम करते थे और कुछ देर के लिये सो जाते थे । पेट साफ़ रहे और बीमारी न आवे इसके लिए वे पेट पर मिट्टी की पट्टी बांधते थे । आराम करने के पश्चात् वे १ बजे तक अपने काम में लग जाते थे । उनके पास हिन्दुस्तान से तथा बाहर के देशों से ढेर के ढेर पत्र आते थे । वे सभी पत्रों का उत्तर देते थे, खुद उत्तर न देते तो अपने सेक्रेटरी प्यारेलालजी तथा अन्य लोगों से उत्तर लिखवा देते थे । ज़्यादातर पत्र हिन्दी या गुजराती में लिखते थे । बहुत ज़रूरत पड़ने पर ही अंग्रेज़ी भाषा का व्यवहार करते थे । मिलने वालों को भी दोपहर के समय ही बुलाते थे । सलाह मशवरे आदि भी इसी समय होते थे । इस तरह ४॥ बजे तक यह कार्यक्रम रहता था । ४॥ बजे वे चर्खा कातते बैठते और आध घण्टे तक नियम-पूर्वक चर्खा कातते । चर्खा कातते हुए किसी से आवश्यक बातचीत करनी होती तो बातचीत भी करते रहते थे ।

चर्खे का कार्यक्रम पूरा हो जाने पर वे आवश्यक कार्यों से निपटकर सूर्यास्त के पहले ही भोजन करने बैठ जाते थे । भोजन के बाद सायंकालीन प्रार्थना में वे शामिल होते और बाद में टहलने को निकल जाते । टहलकर आने के बाद कोई आवश्यक कार्य होता तो करते और रात्त के ९ बजने पर सो जाते थे ।

गांधीजी के कपड़े व बिछौना

म० गांधीजी की पोशाक में कुल ६ कपड़े होते थे । तीन धोतियां और तीन ओढ़ने की चादरें । चादरों से वे कुर्ता और कम्बल दोनों का काम लेते थे । एक जोड़ी चादर की और रखते थे ताकि ज़रूरत पड़ने पर काम में ली जा सकें । उनका बिछौना भी बहुत सादा था । लकड़ी के तख्ते

पर वे एक पतली गद्दी बिछाकर सोते थे। ज़्यादातर वे खुली हवा में सोते थे।

महात्मा गाँधी चाहे जहां कहीं रहे चाहे झोंपड़ी में चाहे महल में उनकी दिनचर्या में कोई फ़रक नहीं पड़ता था।

सत्याग्रह आश्रम के ११ व्रत

इन व्रतों के पालन करने का गांधीजी ने सदा प्रयत्न किया।

१. सत्य

सत्य ही परमेश्वर है। सत्य-आग्रह, सत्य-विचार, सत्य-वाणी और सत्य-कर्म यह सब उसके अंग हैं। जहां सत्य है, वहां शुद्ध ज्ञान है। जहां शुद्ध ज्ञान है, वहां आनन्द ही हो सकता है।

इस सत्य की आराधना के लिए ही हमारी हस्ती है और इसी के लिये हमारी हर एक प्रवृत्ति होनी चाहिये। बिना सत्य के किसी भी नियम का शुद्ध पालन नहीं हो सकता। विचार में, वाणी में और आचार में सत्य का होना ही सत्य है। यदि हम इस दृष्टि से देखना सीख जावें तो हमें सहज में ही ज्ञात हो जावेगा कि कौन प्रवृत्ति उचित है, कौन त्याज्य ?

लेकिन सत्य मिले कैसे ? भगवान् ने उसका उत्तर दिया है—अभ्यास और वैराग्य से। सत्य की ही लगन अभ्यास है, उसके सिवा दूसरी सब चीज़ों के बारे में हद दरज़े की उदासीनता वैराग्य है। इस प्रसंग पर हरिश्चन्द्र, प्रह्लाद, रामचन्द्र, इमामहुसेन तथा ईसाई संतों के दृष्टांत मनन करने योग्य हैं।

२. अहिंसा

सत्य ही एक परमेश्वर है। उसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग, एक ही साधन अहिंसा है। बग़ैर अहिंसा के सत्य की खोज असंभव है।

७

सत्य का, अहिंसा का मार्ग···तलवार की धार पर चलने जैसा है।···ज़रा-सी ग़फ़लत हुई कि नीचे गिरे। क्षणक्षण की साधना से ही उसके दर्शन होते हैं।

इस व्रत का पालन करने के लिए जो जीवधारियों को न मारना ही काफ़ी नहीं है।···इस व्रत का पालक घोर अन्याय करने वाले पर भी गुस्सा न करे, बल्कि उससे प्रेम करे, उसका भला चाहे और करे। लेकिन प्रेम करते हुए भी अन्यायी के अन्याय के वश में न हो, अन्याय का विरोध करे और वैसा करने पर, वह जो कष्ट दे, उसे धैर्य्य के साथ और अन्यायी के लिये दिल में द्वेष रक्खे बिना सह ले।

अहिंसा में जहां किसी को न मारना तो ज़रूरी है ही, वहां कुविचारमात्र भी हिंसा है। उतावलापन हिंसा है। झूठ बोलना हिंसा है। द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जिसकी दुनियां को ज़रूरत है, उस पर क़ब्ज़ा जमाये रखना भी हिंसा है।

अहिंसा को साधन समझें, सत्य को साध्य समझें। साधन हमारे हाथ की बात है, इसलिए अहिंसा परम धर्म है। साधन की चिंता रक्खेंगे तो किसी दिन साध्य के दर्शन ज़रूर ही होंगे।

३. ब्रह्मचर्य

बिना ब्रह्मचर्य पाले सत्य-अहिंसा-व्रत का पालन सम्भव नहीं है। अहिंसा अर्थात् सर्वव्यापी प्रेम। जहां पुरुष ने एक स्त्री को या स्त्री ने एक पुरुष को अपना प्रेम सौंप दिया, वहां उसके पास दूसरे के लिए क्या बच रहा? वह सारी सृष्टि को अपना कुटुम्ब नहीं बना सकता। इसलिए अहिंसा-व्रत का पालन करने वाला तथा जीवन में सेवा-व्रत को अंगीकार करने वाला विवाह नहीं करेगा।

फिर जो विवाह कर चुके हैं, क्या उन्हें सत्य की प्राप्ति कभी न होगी? उसका भी रास्ता है वह यह—विवाहित का अविवाहित की भांति हो जाना। इस स्थिति का आनन्द जिसने

अनुभव किया है, वह ही इसे बता सकता है। विवाहित स्त्री-पुरुष एक दूसरे को भाई-बहन मानने लग जावें तो सारे झगड़ों से वे मुक्त हो जावेंगे। संसार भर की सारी स्त्रियां बहनें हैं, मातायें हैं, लड़कियां हैं–यह विचार ही मनुष्य को एक दम ऊँचा लेजाने वाला, बंधनों में से मुक्ति देने वाला हो जाता है।

वीर्य का उपयोग शरीर और मन की ताक़त को बढ़ाने के लिए है। जानबूझ कर भोगविलास के लिये वीर्य खोना और शरीर को निचोड़ना कितनी बड़ी मूर्खता है! ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन और कर्म तीनों से होना चाहिए। हम गीता में पढ़ते हैं कि जो शरीर को तो वश में रखता हुआ जान पड़ता है, पर मन से विकार का पोषण किया करता है, वह मूढ़ मिथ्याचारी है। मन को विकारी रहने देकर शरीर को दबाने की कोशिश करने में हानि ही है। जहां मन होता है वहां शरीर अन्त में घसीटे बिना नहीं रहता। इसलिए शरीर को तो तुरन्त ही वश में करके मन को वश में करने का हमें बराबर प्रयत्न करते रहना चाहिए।

विषयमात्र का विरोध ही ब्रह्मचर्य है। जो दूसरी इंद्रियों को जहां तहाँ भटकते देखकर एक ही इन्द्रिय को रोकने का प्रयत्न करता है, वह निष्फल प्रयत्न करता है। कान से विकारी बातें सुनना, आंख से विकार उत्पन्न करने वाली वस्तु देखना, जीभ से विकारोत्तेजक वस्तु का स्वाद लेना, हाथ से विकारों को उभारने वाली चीज़ों को छूना और फिर भी जननेन्द्रिय को रोकने का इरादा रखना तो आग में हाथ डालकर जलने से बचने के प्रयत्न के समान है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ है, ब्रह्मकी–सत्यकी–खोज में चर्या अर्थात् उससे सम्बन्ध रखने वाला आचार। इस मूल अर्थ में से सर्वेन्द्रिय संयम का विशेष अर्थ निकलता है। केवल जननेन्द्रिय संयम के अधूरे अर्थ को तो हमें भूल जाना चाहिये।

४. अस्वाद

मनुष्य जब तक जीभ के रसों को न जीते तब तक ब्रह्मचर्य का पालन अति कठिन है। भोजन केवल शरीरपोषण के लिए हो, स्वाद या भोग के लिए नहीं। इसलिए उसे दवा समझकर संयमपूर्वक लेना चाहिए। जैसे किसी चीज़ का स्वाद बढ़ाने या बदलने के लिए नमक मिलाना, यह व्रत का भंग है। पर अमुक परिमाण में हमारे शरीर-पोषण के लिए नमक की ज़रूरत है, इस वजह से नमक मिलाना, यह व्रत भंग नहीं है। इस दृष्टि से विचार करने पर अगणित वस्तुओं का अनायास ही त्याग हो जाने से मनुष्य के अनेक विकार शान्त हो जायेंगे।

भोजन के चुनाव के विषय में हमारे यहां पर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता है। बचपन से ही माँ-बाप झूठा लाड-चाव करके अनेक प्रकार के स्वाद करा करा कर शरीर को बिगाड़ देते हैं और जीभ को चटोरी बना देते हैं जिससे बड़े होने पर लोग शरीर से रोगी और स्वाद की दृष्टि से महा-विकारी देखने में आते हैं। इससे हम फ़िज़ूल खर्चियों में पड़ते हैं, वैद्य डाक्टरों की खुशामदें करते हैं और शरीर तथा इन्द्रियों को वश में रखने के बदले उसके ग़ुलाम बनकर अपंग की भांति जीते हैं। इस व्रत का पालन करने वाला विकार उत्पन्न करने वाले मिर्च मसालों वगैरह का त्याग करें। मांसाहार, मद्यपान, तम्बाकू, भंग आदि का त्याग करे। आदर्श स्थिति तो यह है कि सूर्य रूपी महा अग्नि जिन चीज़ों को पकाती है, उन्हीं में से हमें अपनी ख़ुराक चुन लेना चाहिए। इस तरह सोचने पर यह सिद्ध होता है कि मनुष्य प्राणी केवल फलाहारी है।

५. अस्तेय (चोरी न करना)

दूसरे की चीज़ को उसकी इजाज़त के बिना लेना तो चोरी है ही, लेकिन मनुष्य अपनी कम से कम ज़रूरत के अलावा जो कुछ लेता है या संग्रह करता है वह भी वह चोरी ही है।

अस्तेयव्रत पालने वाला धीरेधीरे अपनी ज़रूरतें कम करेगा इस दुनिया की बहुत सी कंगालियत अस्तेय के भंग से पैदा हुई है।

जब हम मन ही मन किसी की चीज़ पाने की इच्छा करते हैं या उस पर झूंठी नज़र डालते हैं तो वह चोरी है। उपवासी व्यक्ति शरीर से तो नहीं खाता पर दूसरों को खाते देखकर यदि वह मन से भी स्वाद लेता है तो चोरी करता है और अपने उपवास का भंग करता है।

६. अपरिग्रह

बिना आवश्यकता के संग्रह करना एक तरह से चोरी का-सा माल हो जाता है। इसलिए जिस खुराक या साज-सामान की ज़रूरत नहीं, उसका संग्रह करना इस व्रत का भंग करना है। अपरिग्रही हमेशा अपने जीवन को सादा बनाता जावे। सब अपनी अपनी खास ज़रूरत की ही चीज़ों का संग्रह करें तो किसी को तंगी न रहे और सब सन्तुष्ट रहें।

सच्चे सुधार की निशानी परिग्रह वृद्धि नहीं बल्कि विचार और इच्छापूर्वक परिग्रह कम करना उसकी निशानी है। ज्यों ज्यों परिग्रह कम होता है त्यों त्यों सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है, सेवाशक्ति बढ़ती है।

७. अभय

जो सत्यपरायण रहना चाहे, वह न तो जातबिरादरी से डरे, न सरकार से डरे, न चोर से डरे, न ग़रीबी से डरे, न बीमारी या मौत से डरे, न किसी के बुरा मानने से डरे।

दैवी सम्पद का बयान करते हुए भगवान् ने इसका नाम सब से पहले लिया है। बिना अभय के दूसरी सम्पत्तियाँ नहीं मिलतीं। 'हरिनो मारग छे शूरानो' प्रभु का मार्ग वीरों का मार्ग है, उसमें (सत्यशोधक में) हरिश्चन्द्र की तरह पायमाल होने की तैयारी होनी चाहिए। जब हम पैसे में से, कुटुम्ब

और शरीर में से मेरेपन का ख़याल निकाल देते हैं तो फिर हमें अभय सहज ही प्राप्त हो जाता है।

८. अस्पृश्यता-निवारण

अस्पृश्यता की रूढ़ि में धर्म नहीं बल्कि अधर्म है। अगर आत्मा एक ही है, ईश्वर एक ही है तो अछूत कोई नहीं है।

छुआछूत हिन्दू धर्म का अंग नहीं है, इतना ही नहीं बल्कि उसमें घुसी हुई सड़न है, वहम है, पाप है और उसका निवारण करना प्रत्येक हिन्दू का धर्म है, कर्त्तव्य है।

जो उसे (छुआछूत को) पाप मानता है, वह उसका प्रायश्चित करे, और ज़्यादा कुछ नहीं, तो प्रायश्चित के तौर पर ही धर्म समझ कर समझदार हिन्दू हर एक अछूत माने जाने वाले भाई बहन को अपनावे। प्यार से और सेवाभाव से उसे छुए, छूकर अपने को पवित्र हुआ माने, उसके दुःख दूर करे,...उसमें जड़ जमा कर बैठे हुए दोषों को धैर्यपूर्वक दूर करने में मदद करे।

छुआछूत मिटाने वाला ढेढ़ों और भंगियों को अपनाकर संतोष न मानेगा। वह तब तक शान्त होगा ही नहीं, जब तक जीवमात्र को अपने में देखने न लगेगा और अपने को जीव-मात्र में होम न देगा। छुआछूत मिटाने का मतलब है, सारी दुनिया के साथ मित्रता रखना, उसके सेवक बनना।

जातिभेद से हिन्दू धर्म को नुक़सान पहुँचा है। उसमें पाई जाने वाली ऊँच नीच की और छुआछूत की भावना अहिंसा-धर्म की घातक है।

९. शरीरश्रम

जब सभी मनुष्य शारीरिक श्रम से शरीरनिर्वाह करेंगे, तभी वे समाज के और अपने द्रोह से बच सकेंगे। जिनका शरीर काम कर सकता है और जो सयाने हो चुके हैं, उन

स्त्री पुरुषों को अपना रोज़मर्रा का सभी काम, जो खुद ही कर लेने लायक़ हो, खुद ही कर लेना चाहिए और बिना कारण दूसरों से सेवा न लेनी चाहिए । जब बच्चों, अपाहिजों और बूढ़े स्त्री पुरुषों की सेवा करने का अवसर मिले तो हरएक मनुष्य का धर्म है कि वह उनकी सेवा करे ।

जो खुद मेहनत न करें, उन्हें खाने का हक़ ही क्या है ?

सबको अपना-अपना भंगी तो बनना ही चाहिए ।··· सबसे अच्छी बात तो यह है कि जो मैला करे वही अपना मैला गाडें भी । अगर यह संभव ही न हो, तो सब परिवार अपना कर्त्तव्य करें । जहाँ भंगी के काम को अलग धंधा माना है, वहां कोई भारी दोष घुस गया है । बचपन से ही हमारे मन में यह भावना धंस जानी चाहिए कि हम सब भंगी हैं । ···जो इसे समझ चुके हैं, पाखानों की सफ़ाई से शरीर का परिश्रम आरम्भ करें ।

१०. सर्वधर्म समभाव

दुनियाँ के मौजूदा वर्तमान प्रसिद्ध धर्म सत्य को व्यक्त करने वाले हैं, लेकिन वे सब अपूर्ण मनुष्य द्वारा व्यक्त हुए हैं, इसलिये उन सब में अपूर्णता या असत्य की मिलावट होना संभव है । इसलिए जितनी इज्ज़त हम अपने धर्म की करते हैं, उतनी ही इज्ज़त हमें दूसरों के धर्म की भी करनी चाहिये । जहाँ यह वृत्ति रही है, वहाँ एक दूसरे के धर्म का विरोध हो ही नहीं सकता, न परधर्मी को अपने धर्म में लाने की कोशिश ही हो सकती है, बल्कि हमेशा प्रार्थना यही की जानी चाहिये कि सब धर्मों में पाये जाने वाले दोष दूर हों ।

हम अपूर्ण हैं, तो हमारे द्वारा कल्पित धर्म भी अपूर्ण है ।···जब हम सब धर्मों को मानते हैं, तो फिर किसी को ऊँचा और किसी को नीचा मानने की ज़रूरत नहीं रहती । सब सच्चे हैं पर सब अपूर्ण हैं, इसलिए दोष के पात्र हैं ।

समभाव रखते हुए भी हम उनमें दोष देख सकें, अपने में भी दोष देखें। उस दोष के कारण हम उसका त्याग न करें बल्कि दोष मिटावें। समभाव रक्खें, जिससे दूसरे धर्मों में जो कुछ लेने जैसा लगे, उसे अपने धर्म में जगह देते हुए हिचकिचायें नहीं।

११. स्वदेशी

अपने आसपास रहने वालों की सेवा में ओत-प्रोत हो जाना स्वदेशी धर्म है। जो निकट वालों की सेवा छोड़कर दूर वालों की सेवा करने को दौड़ता है, वह स्वदेशी का भंग करता है। इस नियम के अनुसार हमें यथासंभव अपने पडोसी की ही दुकान से लेन-देन रखना चाहिये। जो चीज़ देश में पैदा होती हो या आसानी से हो सकती हो, उसे हम परदेश से न लावें। स्वदेशी में स्वार्थ को स्थान नहीं है। अपने को कुटुम्ब के, कुटुम्ब को शहर के, शहर को देश के और देश को जगत् के कल्याण के लिए होम दें। मेरे गांव में महामारी फैली है। महामारी से पीड़ित लोगों की सेवा में मैं अपने आपको तथा कुटुम्ब को लगा दूं और हम सब उस बीमारी के शिकार होकर मर भी जावें तो ऐसा करके मैंने अपने कुटुम्ब को मिटाया नहीं, बल्कि उसकी सेवा की है।

ऐसा कौनसा स्वदेशी-धर्म हो सकता है, जिसे सब समझ सकें, जिसकी इस ज़माने में और इस देश में बहुत ज़रूरत है, और जिसके सहज पालन से करोड़ों की रक्षा हो सकती है? जवाब में चर्खा और खादी मिले।

खादी स्वदेशी की पहली सीढ़ी है, उसकी आखिरी हद नहीं। ऐसे ख़ादीधारी देखे गये हैं, जो दूसरी सब चीजें परदेशी बसा रहे हैं; वे स्वदेशी का पालन नहीं करते। स्वदेशी-व्रत पालने वाला जहाँ जहाँ पड़ोसी के हाथों तैयार हुआ ज़रूरी माल मिलेगा, वहां दूसरा छोड़कर वही लेगा। फिर चाहे स्वदेशी चीज़ पहले महंगी और घटिया ही क्यों न मिले।

व्रतधारी उसे सुधरवाने की कोशिश करेगा; स्वदेशी खराब है, इसलिये उससे उकता कर परदेशी बरतना शुरू न करेगा।

गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम

रचनात्मक कार्यक्रम ही पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का सच्चा और अहिंसक रास्ता है। हिंसक और असत्यमय साधनों द्वारा स्वाधीनता के निर्माण का अत्यन्त दुःखद परिचय हम पा ही चुके हैं। वर्तमान महायुद्धों में धन, जन और सत्य का नित्य ही जो नाश हो रहा है, वह हमारे सामने है।

तात्त्विक दृष्टि से सत्य और अहिंसात्मक साधनों द्वारा प्राप्त पूर्ण स्वराज्य का अर्थ है जाति-पांति, रंग अथवा धर्म के भेद-भाव बिना राष्ट्र के हरेक समूह की चाहे वह छोटे से छोटा अथवा ग़रीब से ग़रीब ही क्यों न हो—स्वाधीनता।

सत्याग्रह सशस्त्र विद्रोह का स्थान भली भांति ले सकता है। सत्याग्रह के लिए भी तालीम की उतनी ही ज़रूरत है जितनी सशस्त्र विद्रोह के लिए। सत्याग्रह का आधार ही रचनात्मक कार्यक्रम है। अब हम कार्यक्रम के भिन्न-भिन्न अंगों पर विचार करते हैं।

(१) साम्प्रदायिक (क़ौमी) एकता

एकता का अर्थ है ऐसी हार्दिक एकता जो तोड़ने से भी न टूट सके। इसकी प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि हरेक कांग्रेसवादी उसका निज का धर्म कुछ भी हो, अपने को हिन्दू-मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी आदि सभी धर्मों व क़ौमों का प्रतिनिधि समझे। हिन्दुस्तान के करोड़ों व्यक्तियों में से हर एक के साथ वह अपनेपन का अनुभव करे, वह उनके सुख

गांधीजी सन् १९३५ में कांग्रेस संस्था से अलग हो गये थे। उस समय उन्होंने अपना अधिकांश समय देश के रचनात्मक कार्यों में लगाया, उसी का सारांश यहाँ दिया गया है। आज भी यह कार्यक्रम हमारे देश में सच्ची स्वाधीनता लाने के लिये बहुत ही आवश्यक है।

दुःख में अपने को उनका भागीदार समझे; अपने धर्म से भिन्न धर्म का पालन करने वाले लोगों के साथ मित्रता स्थापित करे, अपने धर्म के लिए मन में जैसा प्रेम हो ठीक वैसा ही प्रेम दूसरे धर्मों से भी करे।

(२) अस्पृश्यता-निवारण

हरएक हिन्दू को यह समझना चाहिये कि हरिजन सेवा उसका अपना काम है और उसमें उसे हर प्रकार से सहायता करनी चाहिये। जिस अकुलाने वाली व भयानक अलहदगी में उन्हें रहना पड़ता है, उसमें उनके साथ खड़े रहना चाहिये।

(३) मद्य-निषेध (शराबबन्दी)

शराब, गांजा, चरस, अफ़ीम आदि नशीली चीज़ों के व्यसनों में फंसे हुए लाखों भाई-बहनों को इन व्यसनों से छुड़ाने का हमें प्रयत्न करना चाहिए।

स्त्रियों और विद्यार्थियों के लिए यह ख़ास मौका है। प्रेम पूर्ण सेवा के अनेक कार्यों द्वारा वे व्यसनी व्यक्तियों पर अपना इतना प्रभाव डाल सकते हैं जिससे कि अपना व्यसन छोड़ने के लिए उनसे जो प्रार्थना की जायगी उस पर उन्हें मजबूर होकर ध्यान देना ही होगा।

(४) खादी

खादी का मतलब है, देश के सभी लोगों की आर्थिक स्वतन्त्रता और समानता का आरम्भ।

खादी का एक मतलब यह है कि हमें इस बात का दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि हम अपने जीवन की सभी ज़रूरतों को हिन्दुस्तान की बनी चीज़ों से और उनमें भी हमारे गांवों में रहने वाली आम जनता की मेहनत और अक़्ल से बनी चीज़ों के ज़रिये पूरा करेंगे।

सिद्धांत यह है कि हर एक गांव को अपनी ज़रूरत की सब चीज़ें खुद पैदा कर लेनी चाहिए और इसके सिवा शहरों की

आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ अधिक उत्पत्ति करनी चाहिए।

कुछ सामान्य नियम

(१) जिन परिवारों के पास जमीन का छोटा सा भी टुकड़ा हो उन्हें कम से कम अपनी जरूरत के लायक कपास पैदा कर लेनी चाहिए। हमारे किसानों को यह सीखना है कि अपनी जरूरत की चीजों की खेती करना किसान का सबसे पहला कर्त्तव्य है।

(२) हरएक कातने वाले को, अगर उसके पास अपनी निज की कपास न हो, तो अपनी जरूरत के लायक़ कपास ओटने के लिए खरीद लेनी चाहिये ।

(३) अब यह ख़याल करिये कि कताई तक के अलग अलग कामों म हमारा सारा देश यदि एक साथ जुट जाय, तो हमारे लोगों में कितनी एकता पैदा हो जाय और उन्हें कितनी तालीम मिले। साथ ही, यह भी सोचिये कि जब अमीर और ग़रीब सब एक ही तरह का काम करेंगे, तो उससे पैदा होने वाली मुहब्बत के बन्धनों में बंधकर और आपस के भेदभाव भूल कर वे कितनी समानता अनुभव करेंगे।

(५) सारे ग्रामोद्योग

हाथ से पीसना व कूटना, साबुन, काग़ज़ और दियासलाई बनाना, चमड़ा कमाना, तेल पेरना आदि सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक धंधों का काम गाँवों में ही हो जाना चाहिए। इनके बिना गाँवों की आर्थिक रचना सम्पूर्ण नहीं हो सकती। हमें अपना यह धर्म समझना चाहिए कि जब जब मिले सिर्फ़ गांवों की चीज़ें काम में लावें। ऐसा करने से हम देश में फैली हुई भुखमरी और बेकारी को दूर करने में सहायक होंगे।

(६) गांवों की सफाई

हमारे देश में छोटे छोटे गांव बड़े सुहावने होने चाहिए लेकिन आज तो गाँव में घुसते ही बड़ी गन्दगी नजर आती है

और कई जगह तो बदबू के मारे नाक बन्द कर लेना पड़ता है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने गाँवों को सब तरह सफ़ाई के नमूने बनावें।

(७) नई अथवा बुनियादी शिक्षा

यह शिक्षा बालक के मन और शरीर दोनों का विकास करती है और इसका उद्देश्य यही है कि गांव के बच्चे आदर्श देहाती बनें।

(८) प्रौढ़ शिक्षा (बड़ों की तालीम)

बड़ी उम्र के लोगों को मौखिक शिक्षा के द्वारा राजनीति संबंधी तथा अन्य उपयोगी बातों की सच्ची शिक्षा दी जाय।

(९) स्त्रियां

सेवा के धार्मिक काम में स्त्री ही पुरुष की सच्ची सहायक और साथिन है। अपने भविष्य को बनाने का जितना अधिकार पुरुष को है, उतना ही अधिकार स्त्री को भी अपने भविष्य का फैसला करने के बारे में है।

स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरुष ने अपने को उसका स्वामी या मालिक माना है। पुरुषों द्वारा निर्मित रूढ़ियों और क़ानून के द्वारा, जिनके निर्माण में स्त्रियों का कोई हाथ नहीं रहा है, स्त्रियों को कुचला गया है। अतः काँग्रेसवालों का यह कर्तव्य है कि वे स्त्रियों को इस प्रकार की शिक्षा दें कि वे जीवन में पुरुष के साथ बराबरी के दर्जे से हाथ बंटाने योग्य बन जायें। इसके लिए अपने घरों से ही शुरुआत करनी चाहिए।

(१०) स्वास्थ्य और सफाई की शिक्षा

मन और शरीर का परस्पर अनिवार्य सम्बन्ध है अतएव अत्यन्त पवित्र विचारों को मन में स्थान दो। निकम्मे तथा गन्दे विचारों को मन में घुसने ही न दो।

नीरोग शरीर में नीरोग मन का वास होता है, अतएव नीचे लिखे नियमों का पालन करना चाहिए।

दिन-रात ताजा से ताजा हवा का सेवन करो।
शारीरिक तथा मानसिक दोनों काम उचित मात्रा में करो।

तन कर खड़े रहो, तन कर बैठो और अपने हर काम में साफ़ और सुथरे रहो। यह स्वच्छता की आदतें तुम्हारे मन की स्वच्छता को भी प्रकट करने वाली हों।

खाना इसलिए खाओ कि अपने मानव बन्धुओं की सेवा के लिए ही जिया जा सके। खाने या भोग भोगने के लिए जीने का विचार छोड़ दो। अतएव उतना ही खाओ जितने से आपका मन और आपका शरीर अच्छी हालत में रहे और ठीक से काम कर सके। आदमी जैसा खाना खाता है वैसा ही बन जाता है।

आप जो पानी पियें, जो खाना खायें और जिस हवा में सांस लें, वह सब बिल्कुल साफ़ होनी चाहिए। आप सिर्फ़ अपनी निज की ही सफ़ाई से संतोष न मानें, बल्कि हवा, पानी और खुराक़ की जितनी सफ़ाई आप अपने लिए रखना चाहें, उतनी ही सफ़ाई का शौक़ आप अपने पड़ोस में भी फैलावें।

(११) प्रान्तीय भाषायें

प्रत्येक को अपनी प्रान्तीय भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त करना चाहिये ताकि उस प्रान्त के आम लोगों को देश संबंधी व अन्य उपयोगी बातें उनकी प्रान्तीय भाषा में समझाई जा सकें।

(१२) राष्ट्रभाषा

समूचे हिन्दुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिए हमें भारतीय भाषाओं में से एक ऐसी भाषा या ज़बान चुन लेना है जिसे आज ज़्यादा से ज्यादा तादाद में लोग जानते और समझते हों और बाकी के लोग जिसे आसानी से सीख सकें। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दी ही ऐसी भाषा है। यही बोली जब उर्दू में लिखी जाती है, तो उर्दू कहलाती है। सन् १९२५ के

अपने कानपुर वाले जलसे में कांग्रेस ने इस राष्ट्रभाषा को हिन्दुस्तानी का नाम दिया। इस राष्ट्रभाषा को हमें इस तरह सीखना चाहिये कि जिससे हम सब इसकी दोनों शैलियों को समझ सकें और बोल सकें और इसे दोनों लिखावटों में लिख सकें।

(१३) आर्थिक समानता

अहिंसक स्वराज्य की यह मुख्य चाबी है। अगर धनवान् लोग अपने धन को और उसके कारण मिलने वाली सत्ता को खुद राजी खुशी से छोड़कर सबके कल्याण के लिए सबों को उसका हिस्सा दें तब तो ठीक है; यदि ऐसा न हुआ तो यह निश्चय समझिये कि हमारे मुल्क में हिंसक और खूंख्वार क्रांति हुए बिना न रहेगी।

हमारी कांग्रेस में मालदार काँग्रेसी भी हैं, उन्हें इस मामले में पहले क़दम उठाकर औरों को रास्ता दिखाना है। हरएक कांग्रेसी अपने आप से यह सवाल पूछे कि आर्थिक समानता की स्थापना के लिये खुद उसने क्या किया है।

(१४) किसान

जो किसानों को संगठित करने का मेरा तरीक़ा जानना चाहते हैं, उन्हें चम्पारन के सत्याग्रह की लड़ाई का अध्ययन करना चाहिए। हिन्दुस्तान में सत्याग्रह का पहला प्रयोग चम्पारन में हुआ था। चम्पारन का आन्दोलन आम जनता का आन्दोलन बन गया था, और वह बिल्कुल शुरू से लेकर अन्त तक पूरी तरह अहिंसक रहा था। बीस लाख से ज्यादा किसानों पर उसका असर पड़ा था। सौ साल से पुरानी एक ख़ास तकलीफ़ को मिटाने के लिये यह लड़ाई छेड़ी गई थी। इसी शिकायत को दूर करने के लिए पहले कई खूनी बग़ावतें हो चुकी थीं। मगर तब किसान बिल्कुल दबा दिये गये थे। वही अहिंसक उपाय छः महीनों के अन्दर पूरी तरह सफल

हुआ । बग़ैर किसी किस्म की सीधी कोशिश के ही चम्पारन के किसानों में राजनैतिक जागृति पैदा होगई । उनकी शिकायत को दूर करने में अहिंसा ने जो काम किया उसका सीधा सबूत मिल जाने से वे सब कांग्रेस की तरफ खिच आए और बाबू ब्रजकिशोरप्रसाद व बाबू राजेन्द्रप्रसादजी के नेतृत्व में सत्याग्रह की पिछली लड़ाइयों में उन्होंने अच्छा काम कर दिखाया ।

इनके सिवा खेड़ा, बारडोली और बोरसद में किसानों ने जो लड़ाइयाँ लड़ीं, उनके अध्ययन से भी पाठकों को लाभ होगा।

किसान-संगठन की सफलता का रहस्य इस बात में है कि किसानों की अपनी जो तकलीफ़ें हैं, जिन्हें वे समझते और बुरी तरह महसूस करते हैं, उन्हें दूर कराने के सिवा दूसरे किसी भी राजनैतिक हेतु से उनके संगठन का उपभोग न किया जाय ।

(१५) मज़दूर

अहमदाबाद के मज़दूर-संघ का नमूना समूचे हिन्दुस्तान के लिये अनुकरणीय है । वह शुद्ध अहिंसा की बुनियाद पर खड़ा किया गया है। अपने अब तक के कार्यकाल में उसे कभी पीछे हटने का मौक़ा नहीं आया। किसी किस्म के शोरगुल, धांधली या दिखावे के बग़ैर ही उसकी ताकत बराबर बढ़ती गई है । संघ अब तक कई हड़तालों को अच्छी तरह कामयाब कर चुका है और ये सब हड़तालें पूरी तरह अहिंसक रही हैं। यहाँ मज़दूरों और मालिकों ने अपने आपसी झगड़ों को मिटाने के लिए ज़्यादातर अपनी राजीखुशी से पंच का तरीक़ा पसन्द किया है ।

(१६) विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम

१. विद्यार्थियों को दलबन्दी वाली राजनीति में कभी भाग

नहीं लेना चाहिये। वे विद्यार्थी हैं, शोधक हैं, राजनीतिज्ञ नहीं।

२. उन्हें राजनैतिक हड़तालें न करनी चाहिए। जब उनके वीर पुरुष तथा नेता जेलों में जायँ, मर जायँ, या फांसी पर लटकाये जायँ तब उन वीरों के उत्तम गुणों का अनुकरण कर उनके प्रति अपनी भक्ति प्रकट करनी चाहिए। हड़ताल या दूसरी बातों में अपने से भिन्न मत रखने वाले विद्यार्थियों या शिक्षकों पर किसी भी हालत में ज़बरदस्ती न करनी चाहिए।

३. विद्यार्थियों को सेवा की खातिर शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक ढंग से कातना चाहिए। उन्हें कताई सम्बन्धी सारे साहित्य का और उसके आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक महत्व का अध्ययन करना चाहिए।

४. वे सदा खादी ही काम में लावें और परदेश की या कलों की बनी चीज़ों के बदले गाँवों में बनी चीजें बरतें।

५. अपने दिलों में साम्प्रदायिकता या छुआछूत को कोई जगह न दें। दूसरे धर्म वाले विद्यार्थियों और हरिजनों को अपने सगे सम्बन्धी समझकर उनके साथ सच्ची मित्रता करें।

६. आसपास के गांवों में सफाई का काम करें और वहां बड़े उमर वाले स्त्री-पुरुषों व बच्चों को पढ़ावें।

७. वे जो कुछ भी नया सीखें वह सब अपनी मातृभाषा में लिखें, और जब हर हफ़्ते अपने आसपास के गांवों का दौरा करने निकलें तब गांव वालों से उसकी चर्चा करें।

८. वे लुक छिपकर कुछ न करें; जो करें, खुल्लमखुल्ला करें, शुद्ध और संयमी जीवन बितावें, सब तरह का डर छोड़ दें, और अपने कमज़ोर साथियों की हिफ़ाज़त के लिए हमेशा मुस्तैद रहें और दंगों के मौकों पर अपनी जान को जोखिम में डालकर भी अहिंसक तरीके से उन्हें मिटाने को तैयार रहें।

९. अपने साथ पढ़ने वाली विद्यार्थिनी बहनों के प्रति अपना बरताव बिलकुल शुद्ध और सभ्यतापूर्ण रक्खें।

गांधीजी के जीवन से क्या-क्या सीखें

१. प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त्त में ४ बजे उठना ।

२. सुबह व शाम नियमपूर्वक ईश्वर-प्रार्थना करना ।

३. प्रतिदिन टहलने जाना तथा व्यायाम करना ।

४. शुद्ध हवा में रहना, सात्विक सादा भोजन करना, कम से कम कपड़े पहनना, प्राकृतिक जीवन बिताना, सदा प्रसन्न और हंसमुख रहना ।

५. सदा सच बोलना, चोरी नहीं करना, क्रोध नहीं करना । मन और जीभ को काबू में रखना ।

६. सब स्त्रियों को बहन और बड़ी को माता मानना ।

७. सब धर्मों का आदर करना, अहिंसा का पालन करना, सब पर क्षमा-भाव रखना ।

८. हिन्दू-मुसलमान, ईसाई सबको भाई समझना ।

९. भंगी, चमार आदि हरिजनों को समान समझना उनसे छुआछूत न मानना तथा उनसे भाईचारा रखना ।

१०. खादी पहनना तथा अन्य वस्तुएँ भी स्वदेशी बरतना । सही बात में कभी किसी से नहीं डरना ।

११. मुंह से अप्रिय और कठोर शब्द नहीं बोलना ।

१२. जीवन हर प्रकार से सेवामय बनाना ।

———

(१) प्रातःकाल उठना

महात्माजी रोज़ प्रातःकाल चार बजे से पहले ही उठ जाते थे और हाथ मुंह धोकर वे ईश्वर की प्रार्थना करते और बाद में अपने दैनिक कार्यक्रम में लग जाते थे। दो एक बार बीमारी की अवस्था को छोड़कर जीवन के पिछले ४० वर्षों में उन्होंने इस व्रत का पूरा पालन किया। प्राचीन काल में भारत के ऋषि महर्षि, विद्वान् पुरुष तथा गुरुकुल व आश्रमों में रहने वाले विद्यार्थीगण भी ब्राह्ममुहूर्त्त अर्थात् ४ बजे उठ जाया करते थे। इसीलिये वे बड़े तन्दुरुस्त, प्रतिभावान् और विद्वान् होते थे।

(२) प्राथना

मनुष्य और पशु में केवल धर्म का ही भेद है। यदि मनुष्य में धार्मिक प्रवृत्तियां जैसे अहिंसा, सत्य, प्रेम, परोपकार आदि न हों तो वह पशु के समान है। जैसे जैसे सद्गुणों का मनुष्य के हृदय में विकास होता जाता है, वैसे वैसे वह उन्नत होता जाता है और अंत में ईश्वर के समीप पहुँच जाता है। इसीलिए हमारे धर्मशास्त्रों में जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी धार्मिक क्रिया से शुरु होने का विधान है। परन्तु जब से विदेशी सभ्यता ने इस देश में पदार्पण किया तब से हम अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को भूल गये।

प्राचीनकाल में लोग प्रातःकाल उठते ही ईश्वर की प्रार्थना करते थे ताकि उनका सारा दिन शुभ कार्यों में व्यतीत हो, उनके आचार विचार सब शुद्ध रहें। प्रार्थना हमारे जीवन का बहुत आवश्यक अंग है। संसार के सब धर्मों में इसका बड़ा महत्व है। मुसलमान भी दिन में कई बार नमाज़ (प्रार्थना) पढ़ते हैं। गांधीजी ने प्रार्थना के महत्व को अपनी युवावस्था में ही समझ लिया था। जब वे लगभग ३०

वर्ष के होंगे, तभी से वे नियमित रूप से दिन में दो बार प्रार्थना करते थे, एक बार सुबह लगभग ४॥ या ५ बजे और दूसरी बार सूरज डूबने के समय। पिछले पचास वर्षों में एक भी दिन एक भी समय ऐसा नहीं आया जब उन्होंने प्रार्थना न की हो। यात्रा में, चलती ट्रेन में, हर स्थिति में वे प्रार्थना कर लेते थे। बस, जगह साफ़-सुथरी होनी चाहिए।

उनका जीवन ही प्रार्थनामय हो गया था। मनुष्य-मनुष्य में भेद करना उन्हें पसन्द नहीं था। उनके समीप संसार के सब प्राणी एक थे। प्रार्थना-मैदान में जब गांधीजी आंखें बन्दकर गर्दन झुकाकर ध्यानमग्न हो बैठ जाते थे, तब यह संसार और उसके बन्धन नीचे ही रह जाते थे और ऐसा लगता था कि भगवान् का यह भक्त अपने प्रभु की गोद में पहुँच गया है। प्रार्थना के सम्बन्ध में महात्माजी लिखते हैं:—

"मुझे रोटी न मिले तो मैं व्याकुल नहीं होता, पर प्रार्थना के बिना तो मैं पागल हो जाऊँ। प्रार्थना भोजन की अपेक्षा करोड़ गुनी ज़्यादा उपयोगी चीज़ है। खाना भले ही छूट जाय, लेकिन प्रार्थना कभी न छूटनी चाहिए। प्रार्थना तो आत्मा का भोजन है। यदि हम पूरे दिनभर ईश्वर का चिंतन किया करें, तो बहुत अच्छा, पर चूंकि यह सबके लिए सम्भव नहीं है, इसलिए हमें प्रतिदिन कम से कम कुछ घंटों के लिए तो ईश्वर का स्मरण करना ही चाहिए।"

"प्रार्थना करने का उद्देश्य ईश्वर से संभाषण करना एवं अन्तरात्मा की शुद्धि के लिए प्रकाश प्राप्त करना है, ताकि ईश्वर की सहायता से हम अपनी कमज़ोरियों पर विजय प्राप्त कर सकें। प्रार्थना मन से न हो तो सब व्यर्थ है। प्रार्थना में जो कुछ बोला जाता है उसका मनन कर अपने जीवन को वैसा ही बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। तभी उसका पूरा लाभ है।"

(३) स्वास्थ्य का ध्यान

एक तन्दुरुस्तीह ज़ार नियामत, पहला सुख निरोगी काया, नीरोग शरीर में नीरोग मन का वास होता है; इन बातों के महत्व को गांधीजी ने अच्छी तरह समझ लिया था। वे अपने स्वास्थ्य का बहुत ध्यान रखते थे यही कारण है कि इधर ३०-४० वर्षों में गांधीजी शायद ही दो तीन बार बीमार पड़े। वे स्वाद के लिए नहीं खाते थे बल्कि ऐसी चीज़ें सोच समझ कर खाते थे जिससे उनका शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ हो। जीभ को तो उन्होंने अपने बस में कर रखा था। प्राकृतिक जीवन उन्हें बहुत पसन्द था। खुली शुद्ध हवा में सोना, कम से कम कपड़े पहनना, शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, समय पर सादा भोजन, नियमपूर्वक व्यायाम (टहलना), स्नान और मालिश, यही उनके स्वास्थ्य की कुंजी थी। वे सब काम समय पर करते थे। उनका प्राकृतिक चिकित्सा में पूर्ण विश्वास था। उनका मत था कि अधिकांश बीमारियां कब्ज़ से होती हैं कब्ज दूर करने के लिए वे मिट्टी का इलाज करते थे जिसकी विधि इस प्रकार है:—

खेत की साफ़ लाल या काली मिट्टी लाकर चलनी में छान लेना चाहिए। फिर उसे भिगोकर साफ़ पतले कपड़े में लपेट कर गीली-गीली पेट पर रात को सोते समय बांध देना चाहिए। इसी तरह दोपहर को भी दो तीन घंटे के लिए बांधे रखना चाहिए। इससे कब्ज़ निर्मूल हो जाता है। गांधीजी तो प्रायः हमेशा ही दोपहर के समय मिट्टी की पट्टी अपने पेट पर बाँधा करते थे।

(४) सुबह-शाम टहलना

जो लोग हर रोज़ सुबह-शाम शुद्ध हवा में घूमने जाते हैं उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है, मन प्रसन्न रहता है और दिन भर काम करने की स्फूर्ति बनी रहती है। हमारे बापूजी भी

रोज़ सुबह-शाम नियमपूर्वक घूमने जाते थे। चाहे पानी बरस रहा हो, सर्दी पड़ रही हो, उनका टहलना नहीं रुकता था। ज़्यादा पानी बरसता होता तो अपने बरामदे में ही टहल लेते थे। जीवन के पिछले वर्षों में जब वे कमज़ोर और बूढ़े हो गये थे तो भी वे लकड़ी का सहारा लेकर ही टहलने निकलते थे। वे कहते थे कि भोजन न मिले तो कोई बात नहीं पर टहलना न मिले तो बीमारी आई समझो। उन्होंने टहलने के व्रत को अन्तिम समय तक निभाया।

(५) नियमितता

गांधीजी का सब काम नियम से होता था। उनका खाना, टहलना, सोना, लोगों से बातचीत करना, चरखा कातना आदि कामों का समय निश्चित रहता था। जिस काम के लिए वह जो समय देते थे ठीक उसी समय पूरा करते थे। इसीलिए वे अपने पास हमेशा एक घड़ी रखते थे।

(६) अपनी भूल को स्वीकार कर लेना

गांधीजी से यदि कोई अपराध हो जाता तो वे फ़ौरन उसे स्वीकार कर लेते थे। बचपन में जो उन्होंने बुरी सोहबत में पड़ जाने से अपने घर में चोरी की, बाद में अपने पिता के सामने अपना अपराध स्वीकार कर लिया, यह गुण हरएक मनुष्य को ग्रहण करना चाहिए। स्वीकार कर लेने से अपराध का पाप मिट जाता है और मन शुद्ध हो जाता है।

(७) संस्कृत से प्रेम

गांधीजी के हृदय में संस्कृत के प्रति बड़ा प्रेम था। वे लिखते हैं—"जितनी संस्कृत मैंने स्कूल में पढ़ी थी, यदि उतनी भी न पढ़ा होता तो आज मैं संस्कृत शास्त्रों का जो आनन्द ले रहा हूँ वह न ले पाता। मुझे इस बात का पछतावा है कि मैं ज़्यादा संस्कृत न पढ़ सका। मेरा मत है कि किसी भी हिन्दू बालक को अच्छी तरह संस्कृत पढ़े बिना न रहना चाहिये।"

(८) राह बतावे सो आगे चले

गांधीजी सदैव इस सिद्धांत पर अमल करते थे। उपदेश देने के पहले अपने जीवन में उन बातों को अमल में लाने से उसका स्थायी प्रभाव होता है, यह उनका मत था। जब वे सेवाग्राम में रहने आये तो उस समय वह गाँव बड़ा ही गन्दा था। गांधीजी ने गांववालों को सफ़ाई रखने के बारे में कई बार उपदेश दिये पर उसका ज़्यादा असर नहीं हुआ; इसलिए गांधीजी ने स्वयं वह काम करने का निश्चय किया। वे रोज़ सवेरे अपने साथियों को लेकर गांव की सफ़ाई करने के लिए जाने लगे। बालटियां तथा झाड़ू वग़ैरह सामग्री साथ में ले ली जाती थी। रास्ते में पड़ा हुआ कूड़ा करकट, टट्टी वग़ैरह उठा कर बालटियों में डाल दिया जाता था, बाद में उस पर मिट्टी डालकर एक निश्चित स्थान पर गढ़े में डाल आते थे। इसका गांव वालों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। फिर तो गांववालों ने मिलकर आपस में ऐसा प्रबन्ध किया कि जिससे गांव में सफ़ाई रहने लगी।

(९) सेवा-भावना

गांधीजी देश के निःस्वार्थ सेवक थे। उनमें सेवा की भावना इतनी प्रबल थी कि वे उसके सामने अपने सुख-दुःख व हानिलाभ सबको भूल जाते थे। जहां कहीं किसी को दुःखी देखते उनका हृदय व्याकुल हो जाता था। रोगियों की सेवा करने में तो उन्हें बड़ा आनन्द आता था। दक्षिण अफ्रीका में जब प्लेग ज़ोरों से फैला तो उन्होंने अपनी जान को जोखम में डालकर रोगियों की सेवा की। कोढ़ जैसे छूत वाले रोग के रोगी की मरहम पट्टी करने में भी वे कभी नहीं हिचकिचाये। रोगियों के मलमूत्र तक साफ़ किये। अनेक युद्धों में उन्होंने घायलों की सेवा की। अछूतों को उन्होंने गले लगाया और उनके उद्धार के लिये जीवन भर प्रयत्न किया। इन सेवा के

कामों को करने में उन्हें अनेक कष्ट उठाने पड़े लेकिन उन कष्टों का गांधीजी ने सदा हंसते हंसते स्वागत किया और कभी पैर पीछे नहीं हटाया।

(१०) पारिश्रमिक जीवन

निरन्तर काम, यही उनका जीवन था। सुबह ४।। बजे से रात के ९ बजे तक वे किसी न किसी काम में लगे ही रहते थे। एक मिनट भी व्यर्थ खोना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। सब काम नियमपूर्वक नियत समय पर करते थे। कई बार तो उन्होंने २२-२२ घंटे लगातार काम किया। रेलगाड़ी में सफ़र करते हुए भी वे अपना काम जारी रखते थे। रेल में ही 'हरिजनसेवक' के लिए लेख लिखते, आये हुए पत्रों का जवाब देते और लोगों से मुलाक़ात करते।

(११) सार्वजनिक पैसा

गांधीजी सार्वजनिक पैसे के सदुपयोग का बड़ा ध्यान रखते थे। जो लोग गाँधीजी को किसी सार्वजनिक काम के लिए द्रव्य देते उसका पाई-पाई का हिसाब वे रखवाते थे और फिज़ूल खर्च नहीं होने देते थे। यही कारण था कि गांधीजी के सेवा के काम कभी पैसे के कारण नहीं रुके। जनता के पैसे को वे एक पवित्र धरोहर समझते थे।

(१२) माता-पिता की सेवा

जो मनुष्य अपने माता-पिता तथा गुरुजनों की सेवा करता है, उनकी आज्ञा का पालन करता है, उनको हर प्रकार से सुख पहुँचाता है, वह हमेशा उनके आशीर्वाद से फलता फूलता है। म० गांधीजी अपने माता-पिता को सदैव ईश्वर के समान मानते थे। सुबह उठते ही उनके चरणों में धोक देते और जब तक वे जिये तब तक हर प्रकार से उन्हें सुख पहुँचाने की चेष्टा करते रहे।

(१३) अपने हाथों अपना काम करना

जहां तक होता गांधीजी अपना सब काम अपने हाथों से ही करना पसन्द करते थे। अपने कपड़े भी अकसर स्वयं ही धो लेते थे। कई बार तो नदी से घड़ा भर लाते थे। आश्रम के कामों में भी जैसे साग साफ़ करना, सफ़ाई करना, आटा पीसना आदि में भी योग देते थे। उन्हें कभी यह विचार तक नहीं आया कि मैं बैरिस्टर हूँ, इतना बड़ा आदमी हूँ अपने हाथों से कैसे काम करूँ। वे झाड़ू निकालने, पाखाना साफ़ करने जैसे छोटे गिने जाने वाले कामों के करने में भी कभी नहीं हिचकिचाते थे। दक्षिण अफ्रिका में उनका जब अख़बार निकलता था तो काम पड़ने पर वे थोड़ासा कम्पोज़ भी कर लेते थे और मशीन का डंडा भी घुमा लेते थे। अपने हाथों से काम करने में उन्हें बड़ा आनन्द आता था।

(१४) नौकरों के साथ व्यवहार

आश्रम में नौकर रखने की प्रथम तो आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी पर यदि रक्खा भी जाता था तो उसको सहायक रूप में ही रक्खा जाता था। उसके सुखदुःख की आश्रमवासियों जैसी ही चिन्ता रक्खी जाती थी। आश्रम के भोजनालय में वह भी सबके साथ बैठकर एकसा ही भोजन करता था। उससे काम भी उतना ही लिया जाता था जितना वह सुविधापूर्वक कर सकता था। पर आज नौकरों के साथ कैसा व्यवहार है। उनसे सुबह से लगाकर रात तक काम लिया जाता है। उन्हें छुट्टी भी बड़ी मुश्किल से दी जाती है। घर के जो छोटे मोटे काम हम स्वयं कर सकते हैं, वे भी नौकर पर डाल देते हैं। अतएव हमें चाहिये कि जहां तक सम्भव हो स्वयं काम करने की आदत डालें और उसमें आनन्द मानें और कोई भी काम करने में छोटापन न समझें। अपने यहां नौकर रहता हो तो उसके साथ अच्छा व्यवहार करें, उससे मिठास से बोलें।

महात्मा गांधीजी के जीवन की कुछ स्मरणीय घटनायें

नमक खाना कैसे छोड़ा—स्वयं करके दिखाया

कस्तूरबा बहुत दिनों से बीमार थीं। बहुत उपाय किये पर बीमारी नहीं गई। गांधीजी ने पुस्तकों में पढ़ा था कि जितने क्षार पदार्थ की शरीर के लिए आवश्यकता होती है, उतना फलों और हरी तरकारियों में मौजूद है, इसलिए जो लोग फल तथा हरी तरकारियां ठीक मात्रा में सेवन करते हैं, उन्हें नमक की खास आवश्यकता नहीं होती है, उलटा नमक रक्त को पतला कर खराब कर देता है। अतएव एक दिन बापू ने कस्तूरबा से कहा यदि तुम नमक खाना छोड़ दो तो तुम्हारा खून साफ़ हो जायगा और तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी।

कस्तूरबा बोलीं—"नमक न खाने से कैसे काम चलेगा। उसके बिना खाना कैसे अच्छा लगेगा, वह तो गले के नीचे ही नहीं उतरेगा।"

गांधीजी ने कहा–"पर नमक न खाया जाय तो क्या हो ?"

कस्तूरबा–"एक बार आप ही उसे छोड़िये तो पता चले।

गांधीजी—"तो लो, तुम्हारे साथ मैं भी इसी समय नमक छोड़ता हूँ"। उसी दिन से गांधीजी ने नमक सदा के लिए छोड़ दिया।

नदी से खुद घड़ा भर लाये

गांधीजी किसी काम को छोटा नहीं समझते थे। उनके नज़दीक प्रत्येक कार्य पवित्र था। अध्यापक और भंगी के काम को वह एकसा महत्त्व देते थे। एक समय की बात है कि श्रीमती अवन्तिकाबाई गोखले उनके आश्रम में आकर ठहरीं। गांधीजी ने थोड़ी देर बाद पूछा कि आपके स्नान के

लिए ठंडा या गरम कैसा पानी चाहिये। उन्होंने कहा, मेरा काम तो ठण्डे पानी से चल जायगा पर मेरे साथी गृहस्थ को गरम पानी चाहिये। गाँधीजी ने अपने यहां पानी के घड़े देखे तो मालूम हुआ कि पानी कम है। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा और खुद ही घड़ा लेकर पास वाली नदी से पानी भर लाये और आग जलाकर पानी गरम कर दिया।

अपने गालों पर तीन चार तमाचे मारे

एक समय की बात है कि गांधीजी ने अपने आश्रम के विद्यार्थियों को कोई काम करने से मना कर दिया था। फिर भी कुछ ने वह काम चुपके से कर लिया। अन्त को बात खुल गई। गाँधीजी ने सब विद्यार्थियों को इकट्ठा करके सबसे पूछा पर डर के मारे किसी ने स्वीकार नहीं किया। इस पर गांधीजी ने उनके सामने ही अपने गालों पर तीन चार तमाचे मारे और कहा—"अवश्य ही मुझ में ही कोई दोष होगा जिससे तुम सच्ची बात कहने से डरते हो" इसका असर ऐसा पड़ा कि जिन्होंने वह काम किया था, सच सच कह दिया।

एक धोती और खादी का कुड़ता पहनने लगे

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तिम काल में अत्याचारी यूनियन सरकार की आज्ञा से निर्दोष शर्तबन्द मज़दूरों पर गोलियां चलाई गई थीं जिससे अनेक मज़दूर मारे गये। म० गांधी उस समय जेल में थे। जेल से छूटने पर जब उनको यह समचार मालूम हुए तो बहुत ही दुःख हुआ। दिन में दो बार भोजन करने के बदले एक ही बार करने लगे। पैर के मामूली जूते को भी छुट्टी देदी, एक धोती और खादी का कुड़ता मात्र पहनने लगे और हाथ में एक छड़ को धारण किया। अपने आपको ग़रीबों की स्थिति में मिला दिया। जो कोई उनकी इस संन्यास वृत्ति को देखता वही आश्चर्य-चकित हो जाता। इस संयम से शत्रु का हृदय भी पिघल कर पानी पानी हो जाता था।

निर्भयता—ईश्वर में अटूट विश्वास

गांधीजी ईश्वर के सिवा किसी से नहीं डरते थे। उनके जीवन में कई ऐसे प्रसंग आये जब वे शायद ही मृत्यु से बच सकते थे पर वे नहीं घबराये और निर्भय होकर अपने काम में डटे रहे। चम्पारन के सत्याग्रह में जब गोरे लोग बन्दूक तान कर खड़े हो गये, तब गांधीजी, लोगों की भीड़ को पीछे रखकर, स्वयं अकेले गोरों की बन्दूकों के सामने चले गये। दक्षिण अफ्रीका में भी ऐसे कई प्रसंग आये जब गोरों और पठानों ने इन्हें मार डालने की धमकियां दीं। कुछ प्रसंगों पर इन्हें खूब मारा पीटा भी, यहां तक कि ये बेहोश हो गये फिर भी ये अपने काम से पीछे नहीं हटे। सन् १९४६ में नोआखाली ज़िले में, जहां मुसलमानों ने हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किये थे, गुण्डे मुसलमान छुरियां लिए गांव गांव घूम रहे थे, किसी हिन्दू की वहां जाने की हिम्मत नहीं होती थी; ऐसी स्थिति में बुद्ध, ईसा और महावीर के समान गांधीजी अकेले ही उन गांवों में पैदल घूमने निकल पड़े और मुसलमानों को शान्ति का सन्देश सुनाया। सरकार ने उनकी रक्षा के लिये मदद भेजनी चाही पर उन्होंने इनकार कर दिया। महात्माजी की इस निर्भयता और दृढ़ता पर, सारा संसार आश्चर्य-चकित रह गया।

जब गाँधीजी के पास ऐसी खबरें आतीं कि फलां लोग आपको मार डालने का षडयन्त्र रच रहे हैं और आपको सावधान रहना चाहिये तो वे हंसकर कहते "ऐसा क्यों न हो? उनका भी तो इस शरीर पर अधिकार है। यदि मुझे अपने देश बन्धुओं से ही डर लगने लगे तो मुझे इसी समय से नेतापन को नमस्कार कर देना चाहिए। उनकी समझ में मेरी देशसेवा में कोई भूल होगी तभी तो वे मुझे मारना चाहते हैं, उसमें उनकी नेकनीयती है फिर भला उन्हें किस तरह दोष दूं।"

आदर्श पत्नि-सेवा

जिस प्रकार स्त्रियों का धर्म पति की सेवा करना है, उसी प्रकार पुरुषों का धर्म भी पत्नी की सेवा करना है, इस बात को बापू भली भांति समझते थे। एक बार बा (गांधीजी की पत्नी) की तबियत बहुत खराब हो गई; इन दिनों बापू ने बा की बड़ी लगन से सेवा की। सवेरे बापू खुद बा को दतौन कराते। काफ़ी भी खुद ही बना कर पिलाते, एनीमा देते। टट्टी और पेशाब के बर्तन साफ़ कर लाते। छोटे बालक को उठाने के ढंग से बापू बा को दोनों हाथों में उठा कर बाहर ले आते और पेड़ के नीचे खटिया पर सुला देते। जैसे-जैसे धूप बदलती जाती, बा की खटिया को बदलते रहते। बापू बा की सूजन पर रोज़ नीम के तेल की मालिश करते। इस प्रकार बीमारी में बापू रात दिन बा की सेवा में लगे रहते थे। आख़िर बापू की सेवा फली और बा उस बीमारी से मुक्त होकर बिलकुल स्वस्थ हो गईं।

गांधीजी रेल में घंटों तक खड़े रहे

गाँधीजी को दक्षिण अफ्रीका से भारत में आए हुए थोड़ा ही समय हुआ था। लोगों ने नाम तो उनका सुना था पर सूरत से कम पहचानते थे। एक बार उन्हें देहली से लाहोर भाषण देने जाना था। जिस समय वे स्टेशन पर पहुँचे, गाड़ी खचाखच भरी थी। बड़ी मुश्किल से वे एक डिब्बे में घुसे पर जगह न होने से एक तरफ़ खड़े हो गए। कुछ स्त्रियां भी एक तरफ़ खड़ी थीं। दो तीन स्टेशन बाद इनके पास बैठे हुए मुसाफ़िर उतरे। वे चाहते तो उनकी जगह बैठ जाते पर वे नहीं बैठे और दूर खड़ी हुई स्त्रियों को वहां बैठने के लिये बुलाया। इसी तरह एक ग़रीब बूढ़ा भी खड़ा था, उसको भी बिठाया। यह देख कर दूसरे यात्रियों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। लोगों ने इनसे बातचीत करना शुरू

किया और इनका नाम पूछा। इन्होंने अपना नाम मोहनदास करमचन्द गांधी बताया। बैठे हुए लोगों में कुछ लोग तो ऐसे थे जिन्होंने गांधीजी का नाम सुन रखा था। एक सज्जन तो इनका भाषण सुनने के लिए ही लाहोर जा रहे थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि ये ही त्यागमूर्ति गांधीजी हैं, जो इतने घंटों तक रेल में खड़े रहे, तब तो लोग बहुत शर्मिन्दा हुए और इन्हें अपने बीच में आराम से बिठाया और क्षमा माँगी।

गांधीजी ने थूंक को बार बार साफ़ किया।

एक बार गांधीजी रेल में यात्रा कर रहे थे। पास में बैठे हुए एक यात्री ने पटरी के नीचे ही कफ़ थूंक दिया और खाये हुए गन्ने के छिलके भी वहीं डाल दिये। गांधीजी ने बड़ी नम्रता से उसे समझाया कि इस प्रकार गाड़ी को गन्दा नहीं करना चाहिए पर वह आदमी बड़ा जिद्दी और मूर्ख था। कहने लगा, बड़े आये उपदेश देने वाले। और फिर बार बार वहीं थूंकने लगा। गाँधीजी यह देख कर उसके थूंक को बार बार साफ़ करने लगे। यह देखकर दूसरे यात्रियों ने उस जिद्दी आदमी को काफ़ी समझाया और शर्मिन्दा किया। इस पर उसकी अक़्ल ठिकाने आई और वह गांधीजी से क्षमा मांगने लगा और सब सफ़ाई करदी।

गांधीजी के कंधे पर सांप

संयोग की बात है कि साबरमती और सेवाग्राम दोनों ही आश्रमों में अकसर सांप और बिच्छू निकला करते थे। आश्रमवासी उन्हें पकड़ कर दूर जंगल में छोड़ आते थे। एक दिन महादेवभाई ने कहा "बापू, आप सर्प को नहीं मारने देते, इसलिए कभी बहुत पछताना पड़ेगा।" गांधीजी ने कहा "महादेव, मैंने कब किसी को मारने से मना किया है? यह सही है कि मैं नहीं मारता क्योंकि मुझे आत्मरक्षा के लिए भी सांप को मारना रुचिकर नहीं है।" लेकिन जब

गांधीजी नहीं मारें तो दूसरे आश्रमवासियों की मारने की हिम्मत नहीं होती थीं। संयोग की बात है कि इतने वर्षों में भी किसी सांप ने किसी आश्रमवासी को नहीं काटा।

एक बार बापूजी प्रार्थना कर रहे थे कि एक काला सांप पीछे से उनकी पीठ पर चढ़ कर कंधे पर आ गया। लोगों ने बापूजी को सावधान किया। बापूजी ने हंस कर कहा "यह तो अपने आप ही चला जायगा या इसके द्वारा ही मेरी मृत्यु लिखी होगी तो कोई चिन्ता की बात नहीं है।" थोड़ी देर बाद वह सांप अपने आप चला गया।

बापूजी और मुलाक़ातें

गांधीजी से ग़रीब से ग़रीब आदमी भी मिल सकता था। उनका दरवाज़ा सबके लिए खुला था। वैसे तो सुबह टहलते समय, मालिश कराते समय, भोजन करते समय भी लोगों से बातचीत कर लेते थे पर साधारणतया मुलाक़ातों का समय दोपहर को २ बजे से ४ बजे तक का था। पर ज़्यादातर मुलाकातें अधिक समय तक भी चला करती थीं। बापूजी जब कभी थक जाते तो कह देते "क्या और सब काम बन्द करके मुलाकातें ही करता रहूँगा ?" इस पर यह प्रश्न उठता कि जो लोग आये हुए हैं, उन्हें क्या और किसी दिन के लिये कह दिया जाय। तब बापूजी झट उत्तर देते "नहीं, जो आगया, वह वापस कैसे जाय" मालूम नहीं कितनी दूर से वह आया है और क्या दु:ख दर्द लाया है। चाहे वे दो चार मिनट ही बातें करते और दूसरे दिन के लिए समय दे देते पर आये हुए लोगों से जहां तक सम्भव होता, ज़रूर मिल लेते। ऐसा था उनका दयावान् हृदय।

गांधीजी की चोटी

गांधीजी पहले चोटी बिलकुल नहीं रखते थे। एक बार हरिद्वार के कुम्भ पर एक साधु ने कहा, "गांधीजी, न यज्ञो-

पवीत, न चोटी, हिन्दुत्व का कुछ तो चिह्न रखो।" तब से गांधीजी ने चोटी रखना शुरू किया। लेकिन धीरे धीरे सिर के और बाल उड़ते गये, वैसे वैसे चोटी के बाल भी उड़ गयें।

बापू की प्यारी बकरी निर्मला

गौओं पर असह्य अत्याचार होते देखकर गांधीजी ने दूध पीना ही छोड़ दिया था। पर एक बार बहुत बीमार होने पर डाक्टरों ने दूध पीने पर ज़ोर दिया तब से ही वे केवल बकरी का दूध पीने लगे। आश्रम में जो बकरी रक्खी गई उसको 'निर्मला' के नाम से पुकारते थे। उसे रोज़ नहलाया जाता था और बड़े आराम से रक्खा जाता था। दूध दुहने के पहले वे उसके थनों को खूब अच्छी तरह धुलाते और उसके बच्चे को दूध पीने को छोड़ देते। जब बच्चा खूब भरपेट दूध पी लेता तब उसे दुहाते और बाद में जो कुछ दूध बचता उसको अपने काम में लेते। बापूजी का कहना था कि सबसे पहले बच्चे का हक़ है और उसके संतुष्ट हो जाने पर मेरा। यह निर्मला बापू की मृत्यु के दस दिन पहले ही इस संसार से कूंच कर गई थी।

गांधीजी की फूलों और वृक्षों के प्रति भावना

एक बार गाँधीजी देवीपुर गाँव में पहुँचे। वहां के लोगों ने गांधीजी के स्वागत के लिए फूलों के बड़े बड़े हार बनवा रक्खे थे। यह देखकर गाँधीजी बोले "इन हारों के बजाय आप मुझे सूत के हार पहनाते तो मुझे बड़ी खुशी होती, क्योंकि सूत के हार बाद में कपड़े बनाने के काम में आजाते हैं। वे फ़िज़ूल नहीं जाते। फूल तो अपने पेड़ पर ही शोभा देते हैं और सबको अपनी सुगन्धित और सुन्दरता से आनन्द पहुँचाते हैं। उनको व्यर्थ में सजावट के लिए या मौज शौक़ के लिए तोड़ना उचित ही नहीं बल्कि सूक्ष्म हिंसा है।"

यरवदा जेल की बात है। नीम के चार पांच पत्तों की

ज़रूरत थी पर काका नीम की पूरी टहनी तोड़ कर ले आये। यह देखकर बापू बोले "यह तो हिंसा है, और लोग न समझें लेकिन तुम तो आसानी से समझ सकते हो। चार पत्ते भी हमें पेड़ से क्षमा मांग कर ही तोड़ने चाहिए पर तुम तो पूरी टहनी तोड़ लाये"। इसी तरह नीम के दांतुन की बात आई तो बापू ने कहा "दांतुन का ऊपर का छोर, जिससे आज दांतुन की है, उतना काटकर फिर उसी दांतुन की दूसरे दिन के लिए नई कूंची बनालो। जब तक वह बिलकुल छोटी न रह जाय या सूख न जाय तब तक हम उसे कैसे फेंक सकते हैं।" इस तरह बापूजी आदर्श अहिंसाव्रतधारी थे।

नींद पर पूरा क़ाबू

गांधीजी जब चाहते तभी सो सकते थे। यात्रा में कई बार उन्हें एक ही दिन में आसपास के कई स्थानों पर व्याख्यान देने जाना पड़ता था। एक स्थान से दूसरे स्थान तक मोटर पहुँचने के समय का अंदाज़ मालूम करके वे मोटर में ही गाढ़ी नींद में सो जाते थे और ठीक समय पर अपने आप उठ जाते थे।

एक बार कुछ अंग्रेज़ उनसे मिलने आने वाले थे। गांधीजी बोले "मुझे तो नींद आरही है, कुछ सो लूं"। एक मित्र ने कहा "उनके आने में केवल १५ मिनट ही तो हैं।" वे बोले "पंद्रह मिनट तो बहुत काफ़ी हैं। उसी समय खाट पर लेट गये और खुर्राटे भरने लगे। ठीक १५ मिनट में ही स्वयं जाग उठे।

समय का मूल्य और नियमितता

बापू की नोआखाली के गांवों की यात्रा ठीक सुबह सात बजे शुरू हो जाती थी। एक दिन उनके साथियों को पांच मिनट की देरी हो गई। इस पर उन्होंने कहा "बाहर देखो, गांव के लोग कब से आकर खड़े हैं। तुमने इतने आदमियों के पांच मिनट चुरा लिये। मैं तो जाता हूँ। जब मैंने लोगों

को कह रक्खा है कि मैं ठीक सात बजे रवाना हो जाऊँगा तो सात से दो सेकण्ड भी ज़्यादा हो जाय तो वह मुझे चुभता है समय का पाबन्द न होना बड़ा गुनाह है।" इसी तरह तो सभा वगैरह में भी भाषण देने का जो समय निश्चित होता ठीक समय पर बापू पहुँच जाते थे।

विनोद-प्रिय बापूजी

बापूजी सदा बहुत ही हंसमुख रहते थे। कोई हंसी की बात आते ही खूब खिलखिला कर हंस पड़ते थे। उन्होंने एक बार कहा था "यदि मैं इस प्रकार खुलकर न हंसता होता तो अब तक कभी का मर चुका होता।" उनके चेहरे पर कभी कभी गंभीरता भले ही नज़र आती थी पर उदासी कभी नहीं दिखाई देती थी। वे अपनी विनोदप्रियता से सबको प्रफुल्लित कर देते थे। बच्चों के बीच में तो वे बच्चे हो जाते थे और उनके साथ विनोद करके, खेल खेलकर, बड़े प्रसन्न होते थे। बच्चों के सामने जब वे अपना मुंह कई तरह का बनाते तो पास खड़े हुए साथी अपनी हंसी नहीं रोक पाते थे। बच्चों के कंधों पर दोनों हाथ रखकर ऐसे अधर लटक जाते कि देखने वाले लोटपोट हो जाते थे। बच्चों को विनोद ही विनोद में बड़ी बड़ी शिक्षाएँ दिया करते थे।

महात्माजी का यह गुण सबको ग्रहण कर सदा हंसमुख रहना चाहिए। हंसते हुए व्यक्ति को सभी चाहते हैं। हंसमुख और प्रसन्नचित्त रहने से स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

जो सार था वह डिबिया में रख लिया

लंदन जाते समय जहाज़ पर एक गोरा था जो गांधीजी को नित्य कुछ-न-कुछ गालियां सुना जाया करता था। एक रोज़ उसने गांधीजी पर कुछ व्यंगपूर्ण कविता लिखी और गांधीजी को पढ़ने के लिए दी। गांधीजी ने उस कविता के

पन्नों को फाड़कर टोकरी में डाल दिया और उन पन्नों में लगी हुई पिन को अपनी डिबिया में रख लिया। उस गोरे ने कहा "गांधी, मेरी कविता को पढ़ो तो सही, उसमें कुछ तो सार है।" गांधीजी ने उत्तर दिया 'हाँ, जो सार था वह तो मैंने डिबिया में रख लिया है।" इस पर पास बैठे हुए सब लोग हंस पड़े और वह अंग्रेज़ खिसियाना पड़ गया।

मैं बापू जो हूँ

एक सज्जन ने एकबार बापूजी से पूछा "बापू, एक क्षण पहले तो आप इतने गम्भीर और चिंतित थे और अभी आप खूब हंस रहे हैं, यह सब कैसे कर डालते हैं।" बापूजी विनोद में बोले "मैं बापू जो हूँ, इसी से कर लेता हूँ। जब तुम भी बापू बन जाओगे और चाहोगे तो ऐसा ही कर सकोगे। लेकिन अभी तो तुम्हारी शादी हुई है–बापू बनने में देर है।"

तुम जैसे शरारती के लिए

बापू अपने आश्रम में रात के समय खटिया पर लेटे हुए थे। पास में ही वहां लम्बी छड़ी रक्खी थी जिसका सहारा लेकर वे टहलने जाया करते थे। इसी समय पं० जवाहरलालजी बापूजी से मिलने के लिए आये। अंधेरे में पं० जवाहरलालजी का पैर छड़ी से टकरा गया। जवाहरलालजी ने इस पर हंसते हुए बापूजी से पूछा—"बापू आप तो अहिंसा के पुजारी हैं, फिर यह छड़ी क्यों?" बापूजी ने हँसते हुए उत्तर दिया—"तुम जैसे शरारती लड़कों के लिए। बापू के इस विनोद में सब हँस पड़े।

बच्चों के साथ दौड़ लगाई

जब बापूजी टहलने निकलते तो अकसर बच्चों का झुंड उनके आगे पीछे रहता था। एक रोज़ टहलते टहलते बापूजी जेल के पास पहुँचे। जेल की दीवार थोड़ी ही दूर पर थी। बच्चों को मज़ाक सूझा और वे बोले "बापू, देखें, यहां से

जेल की दीवार को पहले कौन छूता है ?" बापू हंसने लगे और उनके साथ एक लाइन में खड़े हो गये। एक दो और ती···न! के साथ ही बापू भी बच्चों के साथ दीवार छूने दौड़े। बच्चे फुरतीले होते हैं, कई बार बापू हार जाते। बच्चे उनका मज़ाक करते। वह भी उनके साथ खूब खिलखिला कर हंसते।

बापूजी के नित्यपाठ के कुछ पद

हरि ओम् ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
न त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनाम् ॥ १ ॥

यह सब ईश्वर रूप है। उसका है। इसलिए तेरा कुछ नहीं है। और है भी। लेकिन इस झंझट में भी तूं क्यों फंसता है? सब छोड़ तो सब तेरा ही है। अगर कुछ भी तेरा मानेगा, तो तेरे हाथ में कुछ नहीं रहेगा। (गांधीजी कृत भाष्य) किसी के धन की वासना न कर।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।

परोपकार के काम करते २ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए।

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजिगुप्सते ॥

जो सब जीवों को अपने में और अपने को सब जीवों में देखता है, वह उनसे त्रास नहीं पाता।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानाँ प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

न तो मैं राज्य की इच्छा करता हूँ, न स्वर्ग की। मोक्ष की भी मुझे इच्छा नहीं है। दुःखी जीवों का दुःख दूर हो, इतनी ही मेरी इच्छा है।

विपदो नैव विपदः संपदो नैव संपदः।
विपद्विस्मरणं विष्णोः संपन्नारायणस्मृतिः ॥

जिसे हम दुःख समझते हैं वह दुःख नहीं है और जिसे हम सुख समझते हैं वह सुख नहीं है। दुःख तो यह है कि हम भगवान् को भूल जायें और सुख यह है कि हम भगवान् को साक्षी समझ कर सभी काम करें।

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।। ५५ ।।

भगवान् बोले:—हे अर्जुन, जब मनुष्य अपने मन में उत्पन्न होने वाली सब कामनाओं का त्याग करता है, और अपनी आत्मा में आत्मा द्वारा ही सन्तुष्ट रहता है, तब उसे स्थितप्रज्ञ कहते हैं ।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।। ५६ ।।

दुःखों में जिसका मन उदास नहीं होता, और सुखों की जिसके मन में इच्छा नहीं होती, राग, भय और क्रोध जिसके छूट गये हैं उसको स्थितप्रज्ञ मुनि कहते हैं ।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। ५७ ।।

जो सब जगह आसक्तिरहित होता है, और शुभ व अशुभ के प्राप्त होने पर न तो शुभ का स्वागत करता है, न अशुभ से द्वेष करता है, उसकी बुद्धि स्थिर होती है ।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। ५८ ।।

जिस प्रकार कछुआ अपने सब अवयव समेट लेता है, उसी तरह जब यह पुरुष इन्द्रियों के विषयों से अपनी सब इन्द्रियों को समेट लेता है, तब उसकी बुद्धि स्थिर होती है ।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।।

धर्म का रहस्य सुनो और सुनकर उसे दिलमें उतारो । यह रहस्य यह है कि जो बात हमारे प्रतिकूल हो उसका हम दूसरे के प्रति आचरण न करें ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।

परोपकार करना महा पुण्य है और दूसरों को सताना यही पाप है ।

महात्मा गांधीजी के प्यारे भजन

(१) राग समाज–धुमाली

वैष्णव जन तो तेने कहिए, जे कोई पीर पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तो ये, मन अभिमान न आणे रे॥
सकल लोक मां सहुने वंदे, निन्दा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे॥
मोह माया नहिं व्यापे जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे।
राम नामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तन मां रे॥
वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैयो तेनुं दरशन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे॥

(२) राग भैरवी

तुम मोरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरयामी, करनी कछु न करी॥
औगुन मोसे बिसरत नाहीं, पल छिन घरी-घरी।
सब प्रपंच की पोट बाँधिके, अपने शीश धरी॥
दारा सुत धन मोह लिये हैं, सुधि-बुधि सब बिसरी।
सूर पतित को बेग उबारो, अब मेरी नाव भरी॥

(३) राग काफी

राम नाम रस पीजे मनुआ, राम नाम रस पीजे।
तज कुसंग सत्संग बैठ नित, हरि-चर्चा सुन लीजे॥
काम क्रोध मद लोभ मोह को, बहा चित्त से दीजे।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर, ताहि के रंग में भीजे॥

(४)

उठ जाग मुसाफिर भोर भयी, अब रैन कहाँ जो सोवत है?
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है॥
टुक नींद से अंखियाँ खोल ज़रा, ओ गाफ़िल प्रभु से ध्यान लगा।

यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है ।।
ऐ जीव भुगत करनी अपनी, ओ पापी ! पाप में चैन कहाँ ?
जब पाप की गठरी सीस धरी, अब सीस पकड़ क्यों रोवत है ।।
जो काल करे वह आज करले, जो आज करे वह अब करले ।
जब चिड़ियन खेती चुग डारी, फिर पछताये क्या होवत है ।।

(५) राग पीलू-तीन ताल

रघुवर ! तुमको मेरी लाज ।*

सदा सदा मैं सरन तिहारी, तुम बड़े गरीबनिवाज ।।
पतित उधारन विरुद तिहारो, स्रवनन् सुनी अवाज ।
हों तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज़ ।।
अघ-खंडन, दुख-भंजन जन के, यही तिहारो काज ।
तुलसीदास पर कृपा करिये, भक्तिदान देहु आज ।।

(६) राग खमाज–धुमाली

भजोरे भैया राम गोविंद हरी ।। ध्रु० ।।

जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत, नहिं गठरी ।।
संतत संपत सुख के कारण, जासे भूल परी ।
कहत कबीरा जा मुख राम नहिं, वा मुख धूल भरी ।।

(७) राग विहाग–तीन ताल

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ।

क्रोध न छोड़ा, झूंठ न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।।
झूंठे जग में दिल ललचा कर असल वतन क्यों छोड़ दिया ।।
कौड़ी को तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?
जिहि सुमिरन से अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया?
खालस इक भगवान् भरोसे, तन, मन, धन क्यों छोड़ दिया?

संत तुलसीदासजी के पद

परहित सरिस धरम नहि भाई, पर पीड़ा सम नहिं अघ भाई ।।
सुमति कुमति सबके उर बसहीं, नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।

---

*सन्२४में २१ दिनके उपवास में गांधीजी हमेशा यह भजन गाते रहते थे ।

जहाँ सुमति तहं संपति नाना, जहाँ कुमति तहं विपति निदाना ।।
परहित बस जिनके मन मांही, तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाँहीं ।
जननी सम जानहिं परनारी, धन पराय विषतें विष भारी ।।
जे हरषहिं परसम्पति देखी, दुखित होहिं परविपति बिसेखी ।
जिन्हहिं राम तुम प्रान पियारे, तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे ।।

जय जगदीश हरे

भक्तजनों का संकट छिन में दूर करे
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसे मनका
सुख संपति घर आवे, कष्ट मिटे तनका
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी—जय०।।१।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता
मैं मूरख, खल, कामी, कृपा करो भर्ता—जय०।।२।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति
किस विध मिलूं गुसांई, तुमको मैं कुमति
दीनबन्धु दुःख-हरता, ठाकुर तुम मेरे
अपने हाथ उठाओ, द्वार परा तेरे
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा—जय०।।३।।

भजन-धुन

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम ।
ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान ।।
मन्दिर मस्जिद तेरे धाम, हिन्दू मुस्लिम सब संतान ।
सबको जन्म दिये भगवान, भारत में सब रहें समान ।।
श्री राम जय राम, जय जय राम, जय राम, जय राम, जय जय राम
हरे राम, हरे राम, हरे राम हरे, भज मन निश-दिन प्यारे ।।

हरे राम, हरे राम, राम, राम, हरे हरे।
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण, कृष्ण, हरे हरे॥
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव॥
राम धुन लागी, गोपाल धुन लागी॥
भजले भजले सीताराम, मंगल मूरति सुन्दर श्याम॥

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाँ शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीं फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम॥
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीं सुखदाँ, वरदाँ मातरम्॥ वन्दे०॥

जनगणमन-अधिनायक जय हे

जनगण मन-अधिनायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल-जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे, गाहे तव जय गाथा।
जनगण-मंगल दायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे! जय जय जय जय हे!
अहरह तव आह्वान प्रचारित, सुनि तव उदार वाणी।
हिन्दु बौद्ध सिख जैन पारसिक मुसलमान खिस्तानी।
पूरब पश्चिम आसे, तव सिंहासन पासे, प्रेमहार, होय गांथा।
जनगण-ऐक्यविधायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे। जय जय जय हे।

महात्मा गांधीजी की दिव्य वाणी

ईश्वर के नाम तो अनेक हैं, लेकिन एक ही नाम ढूढ़ें तो वह है सत्, सत्य। इसलिए सत्य ही ईश्वर है।

ईश्वर न काबा में है, न काशी में, यह तो घर घर में व्याप्त है, हर दिल में मौजूद है। मेरा ईश्वर तो मेरा सत्य और प्रेम है।

जैसा हम अपने पड़ोसी—मनुष्य और पशु—दोनों के साथ बर्ताव करते हैं, वैसा ही बर्ताव वह हमारे साथ भी करता है।

मेरे प्रभु के हजारों रूप हैं। कभी मैं उसका दर्शन चर्खे में करता हूं तो कभी साम्प्रदायिक एकता में और कभी अस्पृश्यतानिवारण में और कभी रोगियों और दुःखियों की सेवा में। मानवता की सेवा में ही मैं ईश्वरदर्शन करता हूँ।

मैं ग़रीब से ग़रीब हिन्दुस्तानी के जीवन के साथ अपने जीवन को मिला देना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि दूसरे तरीकों से मुझे ईश्वर के दर्शन हो ही नहीं सकते।

मेरा विश्व तो मेरे आसपास का वातावरण है। जो अपने पड़ोसी की सेवा करने में आनन्द न मानें तो हमारा तत्वज्ञान सब मिथ्या है।

मनुष्य एक ओर से ईश्वर की पूजा करे और दूसरी ओर मनुष्य का तिरस्कार करे, यह बात बनने लायक नहीं है।

ईश्वर के नाम लेने वाले आस्तिक नहीं हैं, परन्तु ईश्वर के काम करने वाले आस्तिक हैं।

यह पृथ्वी परमेश्वर की है। इस पर रहने वाले समस्त मानव एक हैं। कोई बड़ा नहीं, कोई छोटा नहीं। एक को दूसरे से श्रेष्ठ समझना भारी पाप है।

मेरे पास एक राम-नाम के सिवा कोई ताक़त नहीं है। वही मेरा एक आसरा है। मैं एक मिनट के लिए भी भगवान् को भूलता नहीं। ईश्वर मेरे सामने खड़े हैं, यही समझकर सब काम करता हूँ।

थोड़ा सा झूठ भी मनुष्य का नाश कर देता है, जैसे दूध को एक बूंद ज़हर भी।

सच बोलकर मनुष्य ईश्वर तक पहुँच सकता है।

जो सत्य लगता है, वही कहना हमारा धर्म है। अपने

दोष को स्वीकार करने से आदमी पवित्र बनता है और ऊँचा उठता है। अपने दोषों को छिपाने से आदमी गिरता है।

सत्य के दर्शन, बग़ैर अहिंसा के हो ही नहीं सकते। इसीलिए कहा है "अहिंसा परमो धर्मः"। अहिंसा साधन है, सत्य ध्येय है। अहिंसा परम श्रेष्ठ मानवधर्म है। पशुबल से वह अनन्त गुना महान् और उच्च है।

संसार आज इसलिए खड़ा है कि यहां पर घृणा से प्रेम की मात्रा अधिक है, असत्य से सत्य अधिक है, हिंसा से अहिंसा अधिक है। संसार में हिंसा, घृणा, द्वेषभाव, स्वार्थ-परायणता, धोखेबाज़ी, गुंडागिरी आदि की मात्रा जितनी ही अधिक बढ़ती जायगी, उतना ही संसार दुःखी होता जायगा और अन्त में नाश को प्राप्त होगा। महायुद्धों का अन्तिम परिणाम लोगों ने देखा ही है।

अगर अहिंसा या प्रेम हमारा जीवन-धर्म न होता तो इस मर्त्यलोक में हमारा जीवन कठिन हो जाता।

पारस्परिक प्रेम की बदौलत ही कुदरत का काम चलता है।

संसार में कायर (डरपोक) का कोई स्थान नहीं है। कायर का तो क्षय ही होता है। क्षय होने योग्य ही है।

हिंसा करने का पूरा सामर्थ्य रखते हुए भी जो मनुष्य स्वेच्छा से और प्रेमभाव से किसी की हिंसा नहीं करता, वही अहिंसा धर्म का पालन करता है। शास्त्रों में उसे वीर पुरुष कहा है।

मेरा अहिंसा-धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरों की रक्षा के लिए अपनी जान देदो, दूसरे को मारने के लिए हाथ तक न उठाओ पर मेरी अहिंसा कायरता नहीं सिखाती। मैं कायरता को किसी भी हालत में सहन नहीं कर सकता। मेरे मरने के बाद कोई यह न कहने पावे कि गांधी ने लोगों को नामर्द बनना सिखाया। अगर आप सोचते हो कि मेरी

अहिंसा कायरता के बराबर है या उससे कायरता ही पैदा होगी तो आपको उसे छोड़ने में ज़रा भी हिचकना न चाहिये। आप निपट कायरता से मरें, इसकी अपेक्षा आपका बहादुरी से प्रहार करते हुए और प्रहार सहते हुए मरना मैं कहीं बहतर समझूंगा।

गुँडे सिर्फ़ बुज़दिल लोगों के बीच में ही पनप सकते हैं।

ईर्षा करना, करनेवाले को खाती है; जिसकी वह ईर्षा करता है, वह अविछिन्न रहता है, शायद अनजान भी।

क्रोध, यह एक प्रकार का रोग है, क्षणिक पागलपन है। क्रोध आवे उस समय मौन धारण कर रामनाम लेना चाहिये। अपने घरवालों व मित्रों को कह देना चाहिये कि जब कभी मुझ में क्रोध रूपी बीमारी देखो तो रामनाम की दवा दे देना।

जब क्रोध अपने स्वजन (घर के लोग) पर आवे, उस समय उसे रोकने में जप है। परजन पर तो क्रोध रोकने के लिए हम मजबूर हो जाते हैं। उसमें जप कैसा ?

कोई तुम्हें चिड़ावे तो समझ लेना कि उसे एक प्रकार की बीमारी हो गई है। ऐसा समझ कर उससे प्रेम करना।

जिसने अपना मन खोया, उसने सब खोया।

मन दो प्रकार का है, एक ऊँचा ले जानेवाला, दूसरा नीचे ले जानेवाला। इसे हम बार बार सोचें और पहचानें।

आप मन में कोई विचार करें, किसी का बुरा सोचें, चाहे फिर प्रत्यक्ष में आप उसको नहीं करें तो भी आपको दोष तो लग ही गया। क्योंकि भगवान् के दरबार में मनुष्य का फ़ैसला केवल उसके कामों से ही नहीं बल्कि, उसकी नीयत से होता है। भगवान् तो हृदय को देखनेवाला है, हृदय की बात जान सकता है। आप उससे हृदय की बात नहीं छुपा सकते। इसलिय हमेशा मन में उत्तम विचारों को स्थान दो। फिर आप से बुरे काम भी नहीं होंगे।

मन को साफ़ रखने के लिए शरीर को काम में लगाये रखना चाहिए। जो काम किया जाय उसके विचार से मन को भर देना चाहिए। साथ ही रामनाम का मुख्य तार तो मन में लगा ही रहना चाहिए। इस तरह वीर पुरुष सारे मन को संगीतमय रखता है और साथ ही शरीर को भी नियम में रखता है।

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता, भीतर से ही मिलता है।

मन, हाथ पैर की अपेक्षा बहुत काम करता है।

विकारी विचार से बचने का एक अमोघ उपाय रामनाम है। नाम कंठ से ही नहीं, किन्तु हृदय से निकलना चाहिये।

शरीर आत्मा का निवास-स्थान है। शरीर के स्वास्थ्य की जो परवाह नहीं करता, वह आत्मा का द्रोह करता है।

प्रार्थना और मौन से हमारी अन्तरात्मा की आवाज़ ईश्वर तक पहुँचती है। प्रार्थना में ईश्वर के साथ सहकार होता है, इसलिए यह हृदय का स्थान है। शरीर को यदि न धोया जाय तो वह बिगड़ जाता है; इसी तरह प्रार्थनारूपी जल से यदि हृदय न धोया जाय तो आत्मा जो स्वच्छ है वह भी मलीन हो जाती है।

मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है अतः सब बुरी भावनाओं को मन में उठने न देना चाहिये। जहां विचार और आचार के बीच पूरा मेल होता है वही जीवन भी पूर्ण और स्वाभाविक है।

एक भी मिनट जो फ़िज़ूल जाती है, वह वापस नहीं आती। यह बात जानते हुए भी हम कितनी मिनट फ़िज़ूल गंवाते हैं?

बीमारी मनुष्य के लिए शरम की बात होनी चाहिए। बीमारी किसी भी दोष की सूचक है। जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है उसे बीमारी नहीं होनी चाहिए।

आज काँग्रेस के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि वह अन्दरूनी सड़ावट को दूर करे।

बच्चे, बीमार और बूढ़ों को छोड़कर बाकी सब लोगों को बराबर महनत करनी चाहिए। जो आदमी बिना महनत किये खाता है, वह चोरी करता है।

स्त्री, पुरुष की गुलाम नहीं है, वह अर्द्धांगिनी है, सह-धर्मिणी है, उसको अपना मित्र समझना चाहिए।

जिस स्त्री को अपनी पवित्रता का खयाल है उसपर बलात्कार करने वाला पुरुष न तो आज तक पैदा हुआ, न होगा।

मैं भारत में ऐसा राम-राज्य चाहता हूँ जिस में ग़रीब से ग़रीब आदमी भी यह अनुभव करे कि यह देश मेरा है और उसके संगठन में उसके मत का भी मूल्य है। ऐसे राज्य में उच्च श्रेणी और नीच श्रेणी के रूप में मनुष्य का कोई समाज नहीं होगा, सब सम्प्रदाय वाले परस्पर प्रीति का सम्बन्ध रखते हुए वास करेंगे, अस्पृश्यता नाम की कोई वस्तु नहीं होगी, मादकद्रव्य शराब आदि का नाम नहीं रहेगा तथा नारी समाज पुरुष समाज के समान ही अधिकार का भोग करेगी।

ब्रह्मचारी होने का यह अर्थ नहीं है कि मैं किसी स्त्री को स्पर्श न करूँ। ब्रह्मचारी होने का यह अर्थ है कि स्त्री का स्पर्श करने से किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न हो जिस तरह कि मिट्टी के ढेले को या कागज़ को स्पर्श करने से नहीं होता। जिस निर्विकार दशा का अनुभव, हम मृत शरीर को स्पर्श कर, कर सकते हैं, उसी दशा का अनुभव, जब हम किसी सुन्दरी युवती को स्पर्श कर, कर सकें तभी हम सच्चे अर्थ में ब्रह्मचारी हैं।

मैं नहीं मानता कि व्यक्तिगत जीवन में अनैतिक रहकर कोई अच्छा जनसेवक हो सकता है। मेरे व्यक्तिगत जीवन का मेरे सार्वजनिक जीवन पर असर होना लाज़िमी है।

यदि आत्मा एक है, ईश्वर एक है, तो अछूत कोई नहीं है।

छूआछूत हिन्दु धर्म का अंग नहीं है, बल्कि उसमें घुसी हुई सड़ान है। उसको दूर करना प्रत्येक हिन्दू का धर्म है।

जो बदला या यश की आशा न रखकर निःस्वार्थ भाव से सेवा करता है, वही देश और समाज की शुद्ध सेवा करता है।

जिस सेवा के पीछे ताली की (प्रशंसा की) आवाज़ नहीं है लेकिन जिसके पीछे प्रभु का आशीर्वाद है, वही सच्ची सेवा है।

बुरी आदतें आदमी को खा जाती हैं, अच्छी आदतें मनुष्य को ईश्वर के पास तक पहुँचा देती हैं। आदतों पर सदा अंकुश रक्खो।

बग़ैर आदर्श की महनत निष्काम है, जैसे बग़ैर दिशा या बन्धन का जहाज़ निष्फल घूमता है।

पण्डित, पादरी और मुल्लाओ! मेरी बात सुनो। धर्म का मतलब सत्य यानी ईश्वर की प्राप्ति है। धर्म प्रेम का पन्थ है। फिर घृणा कैसी, द्वेष कैसा, मिथ्याभिमान कैसा? छोड़ो इन्हें और परस्पर गले मिलो।

...छ नहीं है। उसी से मैं अपने विरो... ता हूँ। मनुष्य और मनुष्य में वैर ... र सकता।

...ाओ। किसी के धर्म की बुराई मत करो। हमारा धर्म ऊँचा है, दूसरे का धर्म नीचा है, ऐसा मत मानो क्योंकि सभी धर्म उसी एक ईश्वर के हैं।

जो मनुष्य पड़ौसी की सेवा करता है वह दुनिया की सेवा करता है।

———

"गांधी चित्रावली" पर सम्मतियां

आचार्य विनोबा भावे :

'गांधी चित्रावली' देखी। गांधीजी के पुण्य जीवन की रेखा इसमें जनता को देखने को मिलेगी। सस्ते दामों में काम की चीज है।

श्री काका कालेलकर :

'गांधीचित्रावली' गांव के लोगों के लिए सस्ता और उपयोगी प्रकाशन है।

श्री. जी. वी. मावलंकर (अध्यक्ष भारतलोकसभा दिल्ली)

'गांधी चित्रावली, भारतवर्ष के प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

श्री जगजीवनराम (श्रममंत्री भारत सरकार)

इस पुस्तक में महात्माजी के जीवन सम्बन्धी लगभग १०० चित्र ऐसे ढंग से दिये गये हैं जिससे बेपढ़े लिखे लोग भी चित्रों को देख कर अपने जीवन में प्रेरणा पा सकते हैं। १४४ पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य लगभग लागत मात्र एक रुपया रखकर श्री लूणियाजी ने वास्तव में बड़ी रचनात्मक सेवा की है। मुझे आशा है सब लोग इसके प्रचार में सहयोग देंगे। किसानों और मज़दूरों के लिये भी बड़ी उपयोगी है।

स्वर्गीय ठक्कर बापा (भू० पू० मंत्री हरिजन संघ)

हमारे देश के लाखों स्त्री पुरुष और बच्चे इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो ज़रूर लाभ उठा सकेंगे। मैं चाहता हूं कि इस पुस्तक का खूब प्रचार हो।

जनरल के. एम. केरिअप्पा (भारत के भू०पू०प्र० सेनापति)

गांधी चित्रावली गांधीजी की जीवनी तथा उनके उपदेशों से पूर्ण तथा अनेक चित्रों से सुसज्जित एक उत्तम और सस्ती पुस्तक है।

श्री श्रीकृष्ण सिन्हा (मुख्य मंत्री बिहार)

इस पुस्तक का प्रचार इतना जोरों से होना चाहिए कि यह प्रत्येक नवयुवक के हाथों में पहुँच जाय।

श्री सम्पूर्णानन्द (मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश)

पुस्तक अच्छी है आशा करता हूं कि इसका अच्छा प्रचार होगा।